 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

आश्विन-कार्तिक, संवत् नानकशाही ५४१
अक्तूबर 2009 वर्ष ३ अंक २

संपादक *सहायक संपादक*
सिमरजीत सिंह सुरिंदर सिंह निमाणा
एम. ए, एम. एम. सी. *एम. ए (हिंदी, पंजाबी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव
धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन : 0183-2553956-57-58-59



एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303**
संपादन विभाग **304**

फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

*पत्रिका प्राप्त न होने पर तथा चंदे आदि सम्बंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए मोबाइल नं. **98886-38618** पर सम्पर्क किया जा सकता है।*

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥
परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥
खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥
विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥
कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ॥
वडभागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि सभि बिओग ॥
नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥
कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच ॥९॥ *(पन्ना १३५)*

बाणी के बोहिथ पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में कार्तिक मास की सुहावनी बहार के प्रसंग में मनुष्य-मात्र को मानव-जन्म का अमूल्य अवसर सफल करने का मार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि यदि जीवन की कार्तिक मास की सुहावनी ऋतु में भी परमात्मा के मिलाप हेतु जीव कर्म कमाने से अथवा नाम-स्मरण से रह गया तो इसमें किसी का दोष क्या है अथवा यह दोष उस जीव पर ही लागू होना चाहिए जो प्राय: अनुकूल परिस्थितियां होने के बावजूद प्रभु-नाम जपने की दिशा में गतिशील नहीं होता। सतिगुरु जी स्पष्ट करते हैं कि ऐसी स्थिति में जीव परमात्मा को भूल जाता है और परमात्मा के भूल जाने से ही जीव को सभी प्रकार के अर्थात् शारीरिक और मानसिक रोग लग जाते हैं। प्रभु से मुंह मोड़ लेने से जन्म-वियोग अथवा अत्यंत लंबा बिछोड़ा मिलता है। प्रभु-नाम को भूल कर जीव माया के भोग भोगता है जो कि प्रभु भूल जाने पर यकदम कड़वे हो जाते हैं। जीव की ऐसी दुखदायक स्थिति किसी बाहरी प्रयास से बदल नहीं सकती। वह किसके पास प्रतिदिन अपना दुख व्यक्त करे? मात्र बाहरी प्रयास फलदायक नहीं होते और प्रभु मालिक ही जीव के उद्धार का संयोग बनाता है। महाभाग्य हो तभी मालिक से मिलाप होता है जिससे जन्मों की जुदाइयां भी उतर जाती हैं। सतिगुरु जी प्रभु से विनती करते हैं कि हे बंधनों से मुक्त करने वाले मालिक! मुझको इस भौतिक संसार की माया के प्रभाव से बचा लेना। यदि कार्तिक की सुहावनी ऋतु में अच्छे मनुष्यों का साथ मिल जाए तो प्रभु से जुदा रखने वाली समस्त चिंता दूर हो जाती है।





शांतमयी सिक्ख संघर्ष का प्रतीक साका पंजा साहिब

सिक्ख धर्म का उदय ही जुल्म एवं अन्याय के अंधकार को दूर करने हेतु युगपुरुष जगत-गुरु श्री गुरु नानक देव जी महाराज के विशेष यत्नों और विलक्षण तेजस्वी व्यक्तित्व का सदका हुआ था। गुरु जी से हक, सच और न्याय को स्थापित करने का मूल गुण लेकर गुरु नानक नाम-लेवा सिक्खों ने उसे अपने जीवन एवं आचरण का एक अभिन्न अंग बना लिया। इसके अंतर्गत गुरु के सिक्खों ने मध्य काल से लेकर आज तक असंख्य कुर्बानियां दीं जो देश-कौम, मानवता अथवा सरबत्त के भले हेतु थीं। सिक्ख इतिहास साकों, घल्लूघारों, युद्धों, संघर्षों और अनगिनत जद्दो-जहदों से भरा पड़ा है। देश, कौम और मानवता के भले हेतु कुर्बानियां करने में सिक्ख विश्व में विख्यात हैं तथा अपना उदाहरण स्वयं ही हैं। इनमें साका पंजा साहिब एक है जो सिक्ख शूरवीरता, बहादुरी, दृढ़ता, साहस, हक, सच, न्याय के सवाल पर सिक्खों के मर-मिटने की भावना का एक अद्वितीय उदाहरण है। इसका वृत्तांत पाठकों-श्रोताओं के रौंगटे खड़े कर देने वाला है जिसको पढ़ने, सुनने के लिए बहुत बड़े हौंसले की आवश्यकता होगी।

गुरु-चरणों के स्पर्श से धन्य हुए पंजा साहिब के स्थान को चिरकाल से ही विश्व-ख्याति प्राप्त है। सिक्खों के लिए विशेष रूप से वह हरेक स्थान पावन है जहां दस गुरु साहिबान में से किसी के भी चरण पड़े हों। कुछ ऐसे विशेष स्थान वे हैं जहां गुरु साहिब ने अपने विस्मादी खेल बरताये।

गुरु नानक पातशाह के आगमन से पूर्व पश्चिमी पंजाब का यह स्थान नीम पहाड़ी शुष्क उपक्षेत्र था जहां रेता और झाड़ियां आदि थीं। यहां एक पहाड़ी पर वली कंधारी नाम एक मुसलमान फकीर रहता था जो अपने आध्यात्मिक ज्ञान और तपस्या का बहुत घमंड किया करता था। वास्तव में गुरु जी उसको ही सच्चा रूहानी मार्ग दर्शाने यहां पधारे थे। कैसे भाई मरदाना जी को प्यास ने व्याकुल किया, कैसे गुरु जी ने उनको वली के पास उसके कुएं का जल मांगने भेजा, कैसे उसने अहंकारवश भाई जी को हर बार जल देने से इंकार किया, कैसे गुरु जी ने वहां जल का चश्मा प्रकट करके भाई जी की प्यास शांत की। वली ने पहाड़ी के तले विराजमान गुरु जी और भाई मरदाना जी पर पहाड़ से एक बहुत बड़ा पत्थर का टुकड़ा गिराकर उन्हें खत्म करने का दु:साहस किया और कैसे आत्मिक बल से पूर्णत: शांतचित्त गुरु जी ने उसको अपने हाथ से थम लिया और फिर वली कंधारी को निर्मल उपदेश बख्श कर उसकी कायाकल्प की। यह प्रसंग सिक्ख संगत से भली-भांति परिचित है। इस स्थान की महिमा हर युग में कायम रही है और आने वाले हर युग में भी कायम रहेगी।

देश की आजादी के लिए संघर्ष जोरों पर था। इसमें गुरु के नाम-लेवा सिक्ख बढ़-चढ़कर अपना योगदान डाल रहे थे। इसी संघर्ष के अंतर्गत सरकार गुरु के बाग के मोर्चे में भाग लेने

वाले कैदी बनाये गए सिक्खों को दूर स्थित अटक जेल में भेज रही थी। ३० अक्तूबर, १९२२ को प्रात: १० बजे गाड़ी पंजा साहिब स्टेशन से गुजरनी थी।

पंजा साहिब नगर में बसने वाले सिक्खों को ज्यों ही इसके बारे में पता चला और उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि गाड़ी में भेजे जा रहे सिक्ख चिरकाल से भूखे व प्यासे रखे हुए थे तो उन्होंने उनको पंजा साहिब स्टेशन पर गाड़ी रोक कर परशादा-पानी छकाने का संकल्प किया। भावना बड़ी ही निर्मल एवं पवित्र थी कि जिस स्थान पर गुरु नानक पातशाह ने अपने सिक्ख भाई मरदाना जी की व्याकुल प्यासा को शांत किया था उस स्थान से आजादी के दीवाने सिक्ख भूखे व प्यासे नहीं जाने चाहिएं। इस प्रसंग में जब उनके यत्नों को सरकारी अधिकारियों द्वारा सही प्रतिउत्तर नहीं प्राप्त हुआ तो उन्होंने अपनी जिंदगियां इस उद्देश्य हेतु कुर्बान करने का संकल्प ले लिया। गाड़ी रुकवाने के लिए गुरु के सिक्ख अपने परिवारों सहित यानी स्त्रियों और बच्चों सहित रेल-लाईन पर लेट गए। गाड़ी के चालक ने कुछ दूरी से लाईन पर लेटी हुई संगत को देख लिया परंतु उसने तब तक गाड़ी न रोकी जब तक दो सिक्ख भाई प्रताप सिंघ और भाई करम सिंघ शहीद न हो गए। इस घटना में चार सिक्ख घायल भी हुए। कैसा होगा वह दृश्य जब एक तरफ भाई प्रताप सिंघ और भाई करम सिंघ अंतिम श्वासों पर थे, घायल सिक्खों की संभाल की जा रही थी तो दूसरी तरफ भूखे-प्यासे कैदी सिक्खों को लंगर छकाने हेतु सिक्ख संलग्न थे! अंतिम श्वासों पर दोनों सिक्ख--भाई प्रताप सिंघ और भाई करम सिंघ सतिगुरु का धन्यवाद कर रहे थे कि उनका मिशन संपूर्ण हुआ था, उनके संकल्प को गुरु ने अपना खेल बरता कर पूरा किया था। घायल हुए सिक्खों को भी यही कहते हुए सुना गया कि "जाओ, संगत को परशादा-पानी छकाओ, हमारी चिंता मत करो।" ऐसा साका विश्व इतिहास में अपना उदाहरण स्वयं ही है। यह ऐतिहासिक घटना ३० अक्तूबर, १९२२ को घटित हुई। सिक्ख साहस, धैर्य एवं दृढ़ता के प्रतीक इस ऐतिहासिक साके की स्मृति में हमने जहां उन सिक्ख शहीदों तथा महान कुर्बानियां करने वाले सिक्खों को श्रद्धा-सुमन भेंट करने हैं वहां हमको वर्तमान में विद्यमान बहुप्रकारी अत्याचार व अन्याय के विरुद्ध शांतमयी संघर्ष भी जारी रखना होगा!

कविता

नारी की अपनी महिमा है

(जो) साथ दिया करती जीवन-भर,
सेवा में रहती निशि-वासर।
स्नेह-सम्मान की अधिकारी (वह),
उसको दीजिये सदा आदर!
वह होती है घर की रानी।
समझें मत उसे नौकरानी!
'ममता का आंचल' है नारी,
यही सभी गुरुओं की बाणी।
वह बहुत हीप्यारी बहना है।
घर के आंगन का गहना है।
जीवन है उसके बिन सूना,
यह गुरु नानक का कहना है।
नारी की अपनी महिमा है,
नारी की अपनी गरिमा है।
वह इज्जत है वह लज्जा है
उससे घर संवरा-सजा है।

-डॉ. दीनानाथ शरण, दरियापुर गोला, बांकीपुर, पटना-८००००४ (बिहार)

गुरु नानक साहिब की बाणी में इस्लामी पक्षों का उल्लेख

*-डॉ. नरेश**

श्री गुरु नानक देव जी का युग अद्भुत दार्शनिक विविधता का युग था। हिन्दी साहित्य के भक्ति-काल ने ईश्वर के सगुण रूप की स्थापना बहुत शक्तिशाली ढंग से की है। यह सगुणोपासना इस हद तक कट्टरपंथी हुई कि तुलसीदास तब तक कृष्ण को प्रणाम नहीं करेंगे जब तक उनके हाथ में बांसुरी की जगह धनुष-बाण नहीं होगा। गुरु नानक साहिब ने चिन्तन की अपेक्षा अनुभव को अधिक महत्त्व दिया। उनकी सम्पूर्ण बाणी उपदेशात्मक हो या विश्लेषणात्मक, अनुभव पर ही आधारित है। उसमें जहां-तहां जो तर्कपूर्ण उक्तियां प्राप्त होती हैं वे भी दार्शनिक तर्क पर आधारित न होकर व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित हैं।

इतिहास-विदित है कि गुरु नानक साहिब ने अपनी चौथी उदासी में इस्लाम के ध्रुव स्थानों का भ्रमण किया था। पांच वर्षों के निरंतर भ्रमण पर आधारित इस उदासी में उन्होंने न केवल इस्लामी सभ्यता और संस्कृति का अवलोकन ही किया अपितु चलते समय अपनी वेशभूषा भी मुसलमानों जैसी बना ली थी। इस भ्रमण में वे सिंध होते हुए मक्का पहुंचे और मदीना, बगदाद, मिस्र, तुर्की, ईरान, कंधार तथा अफगानिस्तान होते हुए हसन अब्दाल लौटे। भाई गुरदास जी विरचित 'पहली वार' से स्पष्ट हो जाता है कि गुरु साहिब ने इन प्रदेशों में मुसलमानों, विशेष रूप से हाजियों के साथ विचार-विनिमय किया था। इन परिस्थितियों में गुरु साहिब की सहज प्रस्फुटित बाणी इस्लामी पक्षों पर भी कथन करती है।

मुस्लिम संस्कृति के सम्पर्क ने गुरु नानक साहिब के करता पुरखु, निरभउ, निरवैरु, अकाल मूरति ब्रह्म के स्मरण में कुरआनी शब्दावली का समावेश कर दिया तथा उनके ब्रह्म को लाशरीक, परवरदिगार, राजिक, कादिर, करीम भी बना दिया। गुरु साहिब की ੴ (इक ओंकार) की परिकल्पना 'ला इलाह इल्लिलाह' के अनुरूप होने के कारण तथा ब्रह्म के एकत्व का विश्वास वहदानियत के साथ समरस होने के कारण उनके ऐसा करने में कुछ अस्वाभाविक भी नहीं था।

गुरु साहिब का ब्रह्म 'राज़िक' भी है। सभी प्राणियों के पालन-पोषण का उत्तरदायित्व उसी पर है। यह विश्वास युगों तक मुसलमानों को आत्मबल एवं मानसिक स्वतंत्रता प्रदान करता रहा है। परमात्मा को राज़िक मानने का अर्थ है कि मनुष्य ईश्वर के अतिरिक्त किसी दूसरे की स्तुति-वंदना न करे। उसके अतिरिक्त किसी दूसरे की बंदगी या इताअत अधर्म है। मानव-मन उनके प्रति दास्य भाव न रखे जो उसके जीवन-यापन में सहायक बनते हैं। इस दृष्टि से वे सब तो साधन-मात्र हैं, पालन-पोषण तो प्रभु करता है :

सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु संबाहि ॥ *(पन्ना ४७५)*

मनुष्य न तो किसी दूसरे मनुष्य को

**१६९, सेक्टर १७, पंचकूला-१३४१०९*

आजीविका दे सकता है और न छीन सकता है। मनुष्य स्वेच्छा से इसमें बाधक या साधक नहीं हो सकता। गुरु साहिब इस सत्य के प्रतिपादन में कहते हैं :

न रिजकु दसत आ कसे ॥
हमा रा एकु आस वसे ॥ (पन्ना १४४)

अर्थात् प्रभु के अतिरिक्त किसी के हाथ में रिजक नहीं है। सभी जीवों को एक उसी की आस है। उस प्रभु को जब मानव-मन भूलता है तब इसका कारण उसका अहम् (हउमै) होता है। अहम् का आविर्भाव तब होता है जब मोह, माया मन को सीधे मार्ग से हटाकर, प्रभु-भक्ति से विमुख करती है। इस्लाम में इस भ्रमोत्पादक शक्ति को 'शैतान' कहा गया है। शैतान की यह इस्लामी परिकल्पना भी गुरु की बाणी में मौजूद है:

तीह करि रखे पंज करि साथी नाउ सैतानु मतु कटि जाई ॥ (पन्ना २४)

इस्लाम में हराम और हलाल की परिकल्पना भी की गई है। हराम वह कमाई है जो हम अनुचित साधनों से प्राप्त करते हैं। किसी दूसरे का अधिकार छीनकर जब हम स्वयं उसका उपभोग करते हैं, इस्लाम इसे हराम कहता है। इसके विपरीत वह सब कुछ हलाल है जो हम अपने परिश्रम द्वारा प्राप्त करते हैं तथा जिसमें किसी दूसरे के अधिकार का अपहरण नहीं किया होता। गुरु नानक साहिब के समक्ष यह इस्लामी दर्शन भी रहा है तथा वे यत्र-तत्र हराम-हलाल की व्याख्या करते हैं :

जे जीवै पति लथी जाइ ॥
सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ (पन्ना १४२)

इस्लाम की जीवन-मरण सम्बंधी मान्यता हिन्दू धर्म की मान्यता से नितान्त भिन्न है। इस्लाम जन्म-जन्मांतर में विश्वास नहीं रखता। कुरआन के अनुसार जन्म एक ही बार होता है और मृत्यु के बाद आत्मा को कब्र में रहकर कयामत के दिन की प्रतीक्षा करनी होती है। कयामत का दिन रोजे-हिसाब है। उस दिन कर्मों का हिसाब करके आत्माओं को दोजख या जन्नत में भेजा जाएगा। इसीलिए मुसलमान आत्मा की मुक्ति या मोक्ष की प्रार्थना नहीं करता, जन्नत की याचना करता है। गुरु साहिब की बाणी में जन्नत और दोजख उल्लेख है :

होइ किरसाणु ईमानु जंमाइ लै भिसतु दोजकु मूड़े एव जाणी ॥ (पन्ना २४)
थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ ॥ (पन्ना ४६३)

एक अन्य स्थान पर लिखते हैं :

नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा ॥
करि अउगण पछोतावणा ॥ (पन्ना ४७१)

गुरु नानक साहिब की बाणी में अनेक स्थानों पर ऐसी शब्दावली का प्रयोग भी दृष्टिगोचर होता है जिसका सम्बंध कुरआन, मुस्लिम समाज या इस्लामी पूजा-पद्धति से है। मियां, बीबी, हरम, कब्र आदि का सम्बंध मुस्लिम समाज से है। दरगाह, बहिश्त, सिदक, सिफ्त, पीर, पैगम्बर, दरवेश, बंदा, रजा, फरमान आदि का सम्बंध इस्लाम से है। गुरु साहिब का यही दृष्टिकोण उनको फारसीयुक्त बाणी रचने की ओर उन्मुख करता है :

यक अरज गुफतम पेसि तो दर गोस कुन करतार ॥
हका कबीर करीम तू बेऐब परवदगार ॥
दुनीआ मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥
मम सर मूइ अजराईल गिरफतह दिल हेचि न दानी ॥ (पन्ना ७२१)

गुरु साहिब परमात्मा को कबीर, करीम, बेऐब, परवरदिगार के तौर पर याद करते हुए

(शेष पृष्ठ ११ पर)

श्री गुरु रामदास जी का विस्मादी जीवन-वृत्तांत

*-स. सुरिंदर सिंह निमाणा**

सिक्खों के चौथे गुरु श्री गुरु रामदास जी का समस्त जीवन अत्यंत विस्मादी है। इनका जीवन वृत्तांत पढ़-सुन कर हरेक पाठक श्रोता आश्चर्य के संसार में पहुंच जाता है। इस महान जीवन-वृत्तांत के सम्मुख हुए हर किसी के मुंह से यही निकलता है, "धन्य-धन्य गुरु रामदास जी!" जब संसार के किसी भी कोने से श्रद्धालु गुरु-बसाई नगरी श्री अमृतसर साहिब में प्रथम कदम रखता है तो उसकी जुबान पर यही शब्द होते हैं--"धन्य-धन्य रामदास गुरु"। श्री गुरु रामदास जी द्वारा बसाई इस नगरी की धरती के स्पर्श को हरेक गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख सदैव तरसता रहता है और इस स्पर्श को प्राप्त करके वह पूर्णत: तृप्त हो जाता है, कोई इच्छा शेष नहीं रहती।

श्री गुरु रामदास जी का पावन प्रकाश २५ आश्विन सं. १५९१ तद्नुसार २४ सितंबर सन् १५३४ को पिता श्री हरिदास जी के घर माता दया कौर जी की कोख से हुआ। आप परिवार में सबसे बड़े सपुत्र थे। प्रथम सपुत्र होने के कारण इन्हें माता-पिता 'जेठा' नाम से बुलाने लगे और यही इनका प्रारंभिक नाम हुआ। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि आपके नामकरण की परंपरागत रस्म न हो पाई होगी।

भाई जेठा जी की छोटी आयु में इनके माता जी का निधन हो गया। कुछ ही समय बाद पिता जी भी परलोक गमन कर गए। उस समय कौन जानता था कि यह बालक बड़ा होकर संसार के सभी यतीमों का सहारा बनेगा। आपके एक छोटे भाई श्री हरदयाल थे जो आप से दो वर्ष छोटे थे। उनसे छोटी एक बहन थी जिनका नाम रमदासी था।

भाई जेठा जी के नानी जी भाई जेठा जी समेत तीनों बालकों को अपने घर गांव बासरके ले आईं। पंजाब तथा देश के कई भागों में यह एक परंपरा के रूप में स्थापित रीति है कि बेसहारा हुए बच्चे अपने ननिहाल में पलते हैं। भाई जेठा जी के ननिहाल ने इस परंपरा को पुष्ट किया चाहे ननिहाल में निर्धनता की स्थिति थी। इतिहास में उल्लेख आता है कि आपके नानी जी आपको चनों की घुंगनियां उबाल कर देती थीं और आप चल-फिर कर ये बेचा करते थे। यह क्रम कई वर्षों तक निरंतर चलता रहा। इतिहास साक्षी है कि ऐसी कठिन परिस्थितियों में घर का निर्वाह जैसे-कैसे चलाते हुए भी भाई जेठा जी निर्धनों और असहाय लोगों की यथासंभव सहायता किया करते थे। धर्मी होने के नाते और दानशीलता तथा उदारता के कारण कई बार आप गरीबों को घुंगनियां नि:शुल्क ही बांट आया करते थे। ऐसी कठिन परिस्थितियों में जरूरतमंदों की जरूरतें पूरी करना एक विस्मादी बात है।

भाई जेठा जी का बासरके से गोइंदवाल जाने का क्रम आरंभ हुआ। बासरके श्री गुरु अमरदास जी का गांव था। यहां से सिक्ख संगत काफी संख्या में गोइंदवाल जाया करती थी। आपके मन में भी गुरु के दर्शनों की प्यास जाग्रत हुई। आप गोइंदवाल गए। वहां गुरु-दर्शन करके निहाल हुए वहां गुरु-घर तथा संगत की

**सहायक संपादक, गुरमति ज्ञान/गुरमति प्रकाश।*

सेवा में भी आपका मन लग गया। गुरु-घर का सहारा बहुत बड़ा सहारा था। दुखों-कष्टों भरी परिस्थितियों में इसने मन को शांति प्रदान की। गुरु-घर में गुरु-उपदेश भी यही सुना कि 'नाम जपो, किरत करो और वंड छको'। इस निर्मल सामाजिक तथा लोक-कल्याणकारी उपदेश के अनुरूप आपने गोइंदवाल को संगत की सेवा के साथ-साथ अपना किरत-स्थल भी बना लिया। यहां वे घुंगनियां बेचने का काम भी करने लगे।

आपकी पारिवारिक पृष्ठभूमि अथवा आर्थिक स्थिति गुरु पातशाह श्री गुरु अमरदास जी से कोई अपरिचित न थी, बल्कि इसका पता होते हुए भी श्री गुरु अमरदास जी महाराज ने अपनी छोटी सपुत्री बीबी भानी का विवाह भाई जेठा जी से करना निश्चित किया। २२ फाल्गुण संवत् १६१० को भाई जेठा जी का बीबी भानी जी के साथ विवाह हुआ। बीबी भानी जी की कोख से तीन साहिबजादों का जन्म हुआ। बड़े प्रिथीचंद, जिनका व्यक्तित्व और व्यवहार सिक्खी आशय के अनुरूप न ढल सका और ये घर-परिवार तथा गुरु-घर के लिए कई प्रकार की समस्याएं खड़ी करते रहे। दूसरे सपुत्र श्री महादेव का जन्म संवत् १६१७ में हुआ। तीसरे सपुत्र श्री गुरु अरजन देव जी थे का प्रकाश संवत् १६२० में हुआ।

विवाह के बाद भाई जेठा जी गुरु-घर ही रहे। श्री गुरु अमरदास जी महाराज की यही इच्छा थी और भाई जेठा जी भी गुरु-घर की सेवा का अधिक से अधिक लाभ लेना चाहते थे। सामाजिक परंपरा के अनुसार किसी विवाहित नवयुवक का ससुराल में रहना चाहे उपयुक्त नहीं माना जाता था परंतु भाई जेठा जी ऐसी धारणाओं से बहुत ऊंचे थे। आपने श्री गुरु अमरदास जी को सदैव सतिगुरु के ही रूप में जाना व माना, अपने सांसारिक रिश्ते की सांसारिक भावना को कभी नजदीक फटकने तक न दिया। आपकी सेवा, गुरु-घर के प्रति समर्पण, नम्रता, सहनशीलता और सबसे अधिक गुरमति विचारधारा की व्यापक सूझ-बूझ तथा गुरमति जीवन-युक्ति को पूर्णत: अमल व व्यवहार में लाने जैसे गुणों तथा प्राप्तियों को समक्ष रखते हुए भाई जेठा जी को श्री गुरु रामदास जी के रूप में उत्तराधिकारी के तौर पर रूहानी गद्दी पर स्थापित करके श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्खों के चौथे गुरु घोषित किया।

सेवक के तौर पर गुरु जी का गुरु-घर गोइंदवाल में गारे-मिट्टी आदि की टोकरियां ढोना एक आश्चर्यजनक विस्मादी वृत्तांत है। एक बार लाहौर से इनके परिवार से आये कुछ लोगों ने जब तीसरे पातशाह के पास अपनी सांसारिक दृष्टि के कारण आपत्ति उठाई तो भाई जेठा जी ने उनको झकझोरते हुए कहा कि ऐ भोले लोगो! यह मेरा 'ससुराल-घर' नहीं, यह तो मेरा 'मुक्ति-दर' है।

फिर भी गुरगद्दी बख्शिश करने के समय श्री गुरु अमरदास जी महाराज ने सेवक भाई जेठा जी की पूरी तरह परीक्षा ली। जहां भाई रामा जी बार-बार थड़े बनाने की गुरु-रमज को समझ ही न सके वहां भाई जेठा जी ने बार-बार यही कहा कि सतिगुरु जी! आप मेरे सिर हाथ रखोगे तो ही आपके आशय के अनुरूप थड़ा बन सकेगा, मुझ में इतनी क्षमता नहीं है। आदर्श सेवक की यह कसौटी भाई जेठा जी ने कायम की कि सेवक को बस गुरु-हुक्म मानना होता है, उसे गुरु पर प्रश्न उठाने का हक नहीं होता। सिक्ख संगत श्री गुरु रामदास जी को चौथे गुरु जी के रूप में पाकर धन्य हो गई।

गुरगद्दी पर विराजमान होकर श्री गुरु रामदास जी ने सिक्खी को खूब फैलाया। आप के गुरु-काल में सिक्खी का आश्चर्यजनक विकास हुआ। अभी आप गुरगद्दी पर विराजमान हुए

थे जब आपके श्री गुरु अमरदास जी ने स्थान-चयन करके नया नगर बसाने तथा सोरवर खुदवाने का आदेश-निर्देश दिया। आपने गुरु-आशय के अनुसार बाबा बुड्ढा जी के सहयोग से ये कार्य बहुत कुशलता सहित निभाये। पहले आपने संतोखसर सरोवर खुदवाया और फिर अमृत सर (अमृत सरोवर)। संतोखसर सरोवर के साथ अब गुरुद्वारा टाहली साहिब विद्यमान है। यहां टाहली का वह वृक्ष है जहां सेवा कराने के समय आप विराजमान हुआ करते थे। अमृत सर के मध्य बाद में पंचम पातशाह जी ने श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण कराया। आपने 'गुरु का चक्क' नामक नगर बसाया जिसको सिक्ख संगत आपके नाम से 'रामदासपुर' या 'चक्क रामदास' के नाम से पुकारती रही। बाद में सरोवर के नाम पर यह अमृतसर कहलवाने लगा और इसी नाम से विश्व भर में विख्यात हुआ। इस पावन सरोवर के स्नान तथा नगर के दर्शनों की प्यासा हरेक सिक्ख को सदैव रहती है। इस नगर में ५२ प्रकार के व्यवसाय करने वाले व्यवसायी परिवार बसाये गए, जिनमें हिंदू, सिक्ख तथा मुसलमान सभी थे। अमृतसर जहां सिक्खों का केंद्रीय स्थान बना वहां यह व्यापार का भी एक बहुत बड़ा केंद्र बना। यहां पावन स्थान से कुछ दूरी पर गुरु जी ने अपना तथा परिवार का निवास रखा जिसे अब 'गुरुद्वारा गुरु के महिल' के नाम से जाना जाता है।

सिक्खी के भरपूर पासार के लिए आपने समय की आवश्यकता के रूबरू मसंद प्रथा चलाई। इन मसंदों ने दूर-दूर तक सिक्खी का प्रचार किया और दूर-दूर से सिक्खों द्वारा भेंट की गई माया उनसे लेकर गुरु-घर पहुंचाते रहे। यह माया गुरु-घर के निर्माण-कार्यों में व्यय होती थी।

एक बार श्री गुरु नानक देव जी के बड़े सपुत्र श्रीचंद गुरु जी के गुरु-काल में रामदासपुर आये तो श्री गुरु रामदास जी महाराज ने गुरु-पुत्र होने के नाते उनको बहुत सत्कार दिया जिस पर बाबा जी प्रसन्न हुए। गुरु जी की असीम नम्रता देखकर बाबा जी ने दिल से महसूस किया कि वास्तविक रूप में गुरगद्दी के योग्य अधिकारी यही हैं।

श्री गुरु रामदास जी ने बेअंत बाणी रची जो आपके हृदय में से पहाड़ी चश्मे की भांति प्रवाहित हुई है, जिसका एक-एक शब्द पाठकों-श्रोताओं को विस्माद बख्शता है। यह पावन बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में तीस रागों में अंकित है। गुरु जी ने गुरसिक्ख के लिए नित्य-प्रक्रिया का यूं वर्णन किया है :

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए
सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥
उदमु करे भलके परभाती
इसनानु करे अंम्रित सरि नावै ॥
उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै
सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ॥
फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै
बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ॥
जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि
सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ॥
जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी
तिसु गुरसिख गुरू उपदेसु सुणावै ॥
जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की
जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ॥

(पन्ना ३०५)

गुरु जी ने सिक्खों को हरेक विशेष कार्य करने के समय यूं दिशा-निर्देश प्रदान किया है:

कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ ॥
कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ ॥
संता संगि निधानु अंम्रितु चाखीऐ ॥
भै भंजन मिहरवान दास की राखीऐ ॥

(शेष पृष्ठ २४ पर)

ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा जी

-श्री सुरजीत दुखी*

गुरु साहिब ने देख सियानप, चांद एक चमका डाला।
बचपन के बूढ़े को बचपन, में ही बुड्ढा बना डाला।
नाम जपना, किरत करनी और वंड के छकना सिखा डाला।
आशीष दे लम्बी आयु की, आदर्श सेवक बना डाला।
करतारपुर चले गुरु नानक जी, बाबा बुड्ढा साथ लिया।
उस बच्चे ने छोटी आयु में, गुरु-उपदेश को मान लिया।
सेवा के सीखे नौ पक्ष वहां, कर्म का ढंग निराला था।
किया त्याग अहंकार का, निष्काम ही बढ़ने वाला था।
शादी के लिए प्रेरित कर, उसे सफल गृहस्थी बनाया था।
सिधारी, भिखारी, महिमा, भाना, चार पुत्रों का वर पाया था।
ब्रह्मज्ञान में लीन हुए बाबा जी, गुरु का वचन कमाया था।
पांच गुरुओं के गुरु-पद-ग्रहण का, सम्मान भी पाया था।
करने चले थे देवी दर्शन, लहणा जी गुरु-घर आये थे।
बाबा बुड्ढा जी ने भाई लहिणा जी, गुरु नानक से मिलवाये थे।
सफल हुए, परीक्षा में सेवा करते गुरु को भाये थे।
गुरु नानक जी से उत्तराधिकार, बाबा जी द्वारा पाये थे।
बीबी अमरो ने जब अमरदास जी को, खडूर साहिब पहुंचाया था।
गुरु अंगद जी से नयन मिले जब, रत्न चैन का पाया था।
सेवा, सिमरन, आत्म-रस में, तब जीवन सभी लगाया था।
गुरु अंगद देव के हुक्मों पर, तीसरे गुरु का तिलक लगाया था।
गुरु नानक की याद अमर करने का, सुझाव जब आया था।
बाबा लखमी चंद और सिरी चंद ने भी, बाबा बुड्ढा को बुलवाया था।
डेरा बाबा नानक की नींव धरी, रावी किनारे इसे बसाया था।
यह नगर बसाने में बाबा बुड्ढा ने, बहुत-सा हिस्सा पाया था।
गोइंदवाल में अहंकारी दातू ने, तीसरे गुरु से वैर कमाया था।
सजे दीवान में लात मार, क्रोध का शिखर दिखाया था।
जब गुरु जी छोड़ा गोइंदवाल, तन्हा-चिंतन अपनाया था।
बाबा जी ने फिर सन्न लगा, संगत को गुरु मिलाया था।
संगत ने गुरु-स्मृति में, गुरुद्वारा संन साहिब बनवाया था।
गोइंदवाल में दीवान सजा, हुक्म करतार सुनाया था।
रुख्सत होने की बारी आई, बाबा बुड्ढा को

**३३२/९, गली जट्टां, अंदरून लाहौरी गेट, श्री अमृतसर।*

बुलवाया था।
थापिआ चौथा गुरु, गुरु रामदास और आदेश सुनाया था।
ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा जी ने, रस्म पावन को पुनः निभाया था।
गुरु रामदास जी ने बाबा बुड्ढा से, भरपूर सहयोग डलवाया था।
बसा अमृतसर, गुरु बाजार, व्यापार केन्द्र बनवाया था।
संतोखसर दरबार साहिब की सेवा का, यूं सुअवसर पाया था।
निर्मल जल-स्रोत सरोवरों का, टक्क भी लगवाया था।
गुरु रामदास के ज्योति जोत समाने का, वक्त जब आया था।
बाबा बुड्ढा ने गुरु रामदास का, अंतिम संदेश सुनाया था।
पांचवें गुरु थापे गुरु अरजन, गुरु-आज्ञा को जब पाया था।
यूं बाबा जी ने एक बार फिर, पावन फर्ज निभाया था।
हुक्म मान गुरु अरजन जी का, श्री हरिगोबिंद को विद्या पढ़ाई थी।
पंजाबी भाषा लिपि गुरमुखी, शस्त्र-विद्या सिखाई थी।
यूं गुरु-घर में सेवा की शिखरें, बाबा जी ने पाई थीं।
हरिगोबिंद साहिब को मीरी-पीरी की, दो तलवारें पहनाई थीं।
आदेश हुआ जब निरंकार का, अंतिम समय तब आया था।
१२५ वर्ष एक महीना और चार दिन का, जीवन-अवसर पाया था।
श्री गुरु हरिगोबिंद, भाई भाना, भाई बिधीचंद और भाई गुरदास ने बिबान उठाया था।
स्थान समाधां रमदास गुरुद्वारा है, वहां अंतिम संस्कार करवाया था।
छः गुरु साहिबान के खुले दर्शन पाये, सेव कमाई।
कर गए सफल अपने जीवन की, यूं बाबा जी सफल कमाई।
गुरु नानक से दात मिली जो, लम्बी आयु तक रंग लाई।
'दुखी' जनों सच्चा सुख पाया, जब गुरमति की राह अपनाई।



गुरु नानक साहिब की बाणी में . . .

(पृष्ठ ६ का शेष)

यमराज के स्थान पर इजराईल (मौत का फरिश्ता) का वर्णन करते हैं।

गुरबाणी में ऐसे अनेक पद भी उपलब्ध हैं जो मुसलमानों को किसी नये मार्ग पर चलने की प्रेरणा नहीं देते अपितु उन्हें सच्चे अर्थों में मुसलमान बनने की प्रेरणा देते हैं। गुरु नानक साहिब जहां नमाज, रोजा आदि इस्लामी कर्मकांड की बात करते हैं वहां वे इन कर्मों की इस्लाम सम्मत व्याख्या ही प्रस्तुत करते हैं। इसीलिए वे कहते हैं :

मिहर मसीति सिदकु मुसला हकु हलालु कुराणु ॥
सरम सुंनति सीलु रोजा होहु मुसलमाणु ॥
करणी काबा सचु पीरु कलमा करम निवाज ॥
(पन्ना १४०)

एक अन्य स्थान पर कहते हैं :

होइ मुसलिमु दीन मुहाणै मरण जीवण का भरमु चुकावै ॥ (पन्ना १४१)

उनके निकट मुसलमान वही है जो 'मलु' खोकर अर्थात् मन पर पड़ा भ्रम का आवरण उतारकर दृढ़ता से सत्य-मार्ग पर अग्रसर होता है।



बाबा बुड्ढा जी

*-स. रूप सिंघ**

उठते, बैठते, सोते नाम-सिमरन में लीन, गुरसिक्ख आत्मा बाबा बुड्ढा जी का जन्म ७ कार्तिक, सं. १५६३ (२२ अक्तूबर, १५०६ ई) को माता गोरां जी की कोख से, भाई सुग्घा जी के घर गांव कत्थूनंगल में हुआ। आपका पहला नाम **'बूड़ा'** था। तीव्र बुद्धि, गंभीर प्रकृति के मालिक बाबा जी बालपन कत्थूनंगल में व्यतीत कर अपने माता-पिता सहित रमदास आ गए। यहां बाबा जी का मिलाप १५१८ ई. में जगत-गुरु, गुरु नानक साहिब के साथ हुआ। गुरु-चरणों के स्पर्श का सदका बाबा बुड्ढा जी खुशियों में जीवन-यापन करने लगे। गुरु नानक साहिब की संगत के पश्चात आप जी का नाम **'बाबा बड्ढा'** प्रचलित हो गया। उस समय बाबा जी की आयु १२ वर्ष के लगभग थी।

कुछ समय के पश्चात बाबा जी घर-परिवार को छोड़ करतापुर में गुरु-संगत की सेवा में लीन हो गए। इस प्रकार गुरु-घर की सेवा करते हुए काफी समय व्यतीत हो गया। बाबा जी ने अपना जीवन-मिशन गुरु-घर की सेवा तथा सुमिरन करते हुए जीवन-मुक्त होने का बना लिया। बाबा जी गृहस्थ जीवन-मार्ग के राही नहीं थे बनना चाहते, परंतु माता-पिता की इच्छाओं का सत्कार करते हुए १५३८ ई. में बीबी मिरोआ जी के साथ शादी कर ली। यह भी कहा जाता है कि बाबा जी की बारात में किसी कारणवश गुरु नानक साहिब स्वयं तो न जा सके परंतु उनके दोनों साहिबजादे शामिल हुए। बाबा जी के घर चार पुत्र पैदा हुए। कुछ समय परिवार के साथ व्यतीत कर, बाबा जी पुनः गुरु-संगत की सेवा में लग गए। इस समय तक भाई लहिणा जी (जो पहले देवी-भक्त थे) भी गुरमति मार्ग के अनुगामी बन चुके थे।

श्री गुरु नानक देव जी ने अपना अंतिम समय नजदीक जान **'ज्योति'** भाई लहिणा जी में परिवर्तित कर दी। जून, १५३९ ई. में उनको अपना **'अंग'** जान कर **'गुरु अंगद देव'** बना दिया। बाबा बुड्ढा जी से गुरुआई का तिलक लगवा, स्वयं गुरु नानक साहिब जी ने **'गुरु-ज्योति'** को माथा टेका। श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी के हुक्म का पालन करते हुए खडूर साहिब में नयी धर्मशाल स्थापित की। आरंभ में गुरु जी गुरगद्दी के झगड़े के कारण माता विराई जी के पास गुप्तवास हो गए। संगत गुरु-दर्शनों के लिए व्याकुल हो उठीं। संगत द्वारा बाबा बुड्ढा जी की सुयोग्य अगुआई में गुरु-हुक्म का सदका गुरमति मार्ग के अनुगामियों को गुरमुखी लिपी में विद्या देना तथा लंगर की सेवा करना आरंभ किया।

अपना अंतिम समय नजदीक आया जानकर श्री गुरु अंगद देव जी ने श्रद्धा, प्रेम, सेवा एवं कुर्बानी के पुंज श्री गुरु अमरदास जी को गुरगद्दी की जिम्मेवारी सौंप, बाबा बुड्ढा जी से गुरुआई का तिलक लगवाया। श्री गुरु अमरदास जी ने गुरु-हुक्म अनुसार गोइंदवाल को सिक्खी के प्रचार व प्रसार का केंद्र बनाया।

ऐडीशनल सेक्रेटरी, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर। मो: ९८१४६-३७९७९

गुरगद्दी पर दातू ने अपना पुश्तैनी अधिकार जतलाते हुए गुरु जी के साथ झगड़ा आरंभ कर दिया। गुरु जी गोइंदवाल छोड़ बासरके आ गए तथा एक कमरे में बैठ बाहर से द्वार बंद करवा, बंदगी करने लग गए। गोइंदवाल संगत गुरु-दर्शनों के लिए अधिकाधिक संख्या एवं उत्साह के साथ आती परंतु गुरु-दर्शनों के बिना व्याकुल हो उठती। संगत ने बाबा बुड्ढा जी को विनती की। बाबा जी गुरु-हुक्म की अवज्ञा भी नहीं करना चाहते थे और संगत की सात्विक इच्छा को भी तृप्त करना आवश्यक था। कुछ समय सोच-विचार कर बाबा बुड्ढा जी ने पीछे वाली दीवार में सेंध लगा गुरु-चरणों पर जा शीश झुकाया। गुरु जी बाबा जी की श्रद्धा तथा सूक्ष्म सूझ-बूझ एवं ऊंची योग्यता से प्रभावित हुए। गुरु जी संगत की विनती स्वीकार कर गोइंदवाल साहिब वापिस आ गए।

श्री गुरु अमरदास जी ने जब देखा कि सुच्चम-भिट्ट, ऊंच-नीच तथा छुआ-छूत के कारण मनुष्य, मनुष्य को घृणा करता है तो उन्होंने इसके सदीवी समाधान के लिए बाउली बनानी चाही जहां से हरेक धर्म, हरेक जाति, हरेक उप-क्षेत्र का मनुष्य स्नान कर भेद-भावों रूपी 'चौरासी' से मुक्त हो सके। गुरु जी ने १५५२ ई में बाबा बुड्ढा जी से बाउली का आदि टक्क लगवाया। इस पवित्र कार्य की देख-रेख का कार्यभार भी बाबा बुड्ढा जी को सपुर्द किया गया।

श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्खी के प्रचार-क्षेत्र को बढ़ाने तथा नियमबद्ध करने हेतु २२ मंजियों का स्थापन किया। इस मंजी-प्रथा के मुख्य प्रबंधक भी बाबा बुड्ढा जी ही थे।

बादशाह अकबर जब प्रथम बार गुरु-दर्शनों के लिए गुरु-दरबार में उपस्थित हुआ तो बाबा बुड्ढा जी ने ही बादशाह को 'निर्मल पंथ' की निर्मलता तथा मर्यादा से अवगत कराया। बादशाह गुरु के लंगर में से प्रशाद छक कर, 'गुरु-संगत' के दर्शन कर बहुत प्रभावित हुआ।

श्री गुरु अमरदास जी ने गुरु-घर की मर्यादा अनुसार गुरगद्दी के योग्य अधिकारी निष्काम सेवक (गुरु) रामदास जी को गुरगद्दी पर विराजमान कर बाबा बुड्ढा जी से गुरुआई का तिलक लगवाया। कुछ समय के पश्चात श्री गुरु अमरदास जी ज्योति जोति समा गए। बाबा बुड्ढा जी ने श्री गुरु अमरदास जी की अंतिम रस्में अपने कर-कमलों के साथ निभाईं।

श्री गुरु रामदास जी ने अपने छोटे सपुत्र (गुरु) अरजन देव जी को गुरगद्दी का कार्यभार सौंप, बाबा बुड्ढा जी से गुरुआई की रस्में पूरी करा स्वयं प्रभु-चरणों में जा विराजे। श्री गुरु अरजन देव जी ने बाबा बुड्ढा जी को समूचे निर्माण के कार्य का प्रबंध संभाल दिया। श्री गुरु अरजन देव जी के बड़े भ्राता प्रिथी चंद ने गुरगद्दी पर अधिकार जमाना चाहा। इस स्वार्थ के लिए उसने हरेक प्रयत्न से संगत को पथ-भ्रष्ट करना चाहा। बाबा बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी ने इस भटकाने वाले प्रचार से संगत को चेतंन कर गुरु-घर से जोड़े रखा।

श्री गुरु अरजन देव जी ने समूची मानवता के उद्धार हेतु आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पावन स्वरूप तैयार किया। पर्याप्त सोच-विचार कर गुरु जी ने बाबा बुड्ढा जी को ही मुख्यग्रंथी की सेवा सौंपने का निर्णय लिया। 'गुरबिलास पातशाही छेवीं' के शब्दों में:

करत विचार इह ठहराई।
बुड्ढा जी सेवा निपुनाई।
गुरु नानक इन दरशन करे।
सेवा मैं अति हित इह धरे।

जब पावन श्री आदि ग्रंथ साहिब के पावन

स्वरूप का प्रकाश श्री हरिमंदर साहिब में किया गया तो मुख्य ग्रंथी बाबा बुड्ढा जी ने ही प्रथम वाक संगतों को श्रवण कराया।

जिस समय श्री गुरु अरजन देव जी ने माझा एवं दुआबा की प्रचार यात्रा की तो बाबा बुड्ढा जी गुरु-आज्ञा से कुछ समय पश्चात 'बीड़' में चले गए।

माता गंगा जी की इच्छा को पूर्ण करने हेतु गुरु जी ने माता जी को बाबा बुड्ढा जी की सेवा में उपस्थित होने के लिए कहा, बाबा जी के महान व्यक्तित्व को सत्कार बख्शा। प्रभु-कृपा का सदका माता जी की इच्छा (गुरु) हरिगोबिंद जी के आगमन से पूरी हुई। जब बाल हरिगोबिंद पांच वर्ष के हुए तो उनको हरेक क्षेत्र में प्रवीण बनाने के लिए बाबा बुड्ढा जी की ही सेवायें ली गईं।

श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत के पश्चात गुरु-हुक्मानुसार बाबा बुड्ढा जी ने (गुरु) हरिगोबिंद साहिब जी को गुरुआई का तिलक दिया तथा मीरी-पीरी की तलवारें पहनाईं, इसलिए कि जालिम और जाबर हकूमत की ज्यादतियों का सामना किया जा सके। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने अपने शहीद गुरु-पिता की इच्छाओं के अनुरूप हर प्रकार से तैयारी आरंभ कर दी। श्री अकाल तख्त साहिब की नींव बाबा बुड्ढा जी से रखवाई और संगत को फरमान जारी किया कि गुरु-दरबार में अच्छे शस्त्र, बढ़िया घोड़े और उठती जवानियों (यौवन) की भेटायें लेकर उपस्थित हों।

परंतु दूसरी ओर मुगल हकूमत को यह किस तरह अच्छा लग सकता था कि उनके समानांतर कोई सरकार बना, फरमान जारी करे? समय की हकूमत के आदेश के अनुसार गुरु जी को कैद कर ग्वालियर के किले में बंद कर दिया गया। बाबा बुड्ढा जी माता गंगा जी के हुक्मानुसार ग्वालियर गये परंतु समय के हाकिमों ने बाबा जी को गुरु-दर्शन करने की अनुमति न दी। बाबा जी गुरु-यश करते हुए किले की परिक्रमा करने लग गए। जब गुरु जी की रिहाई हुई तो बाबा जी ने गुरु जी के दर्शन कर संगत की व्याकुलता व्यक्त की। गुरु जी ने फरमाया, "बाबा जी, आपने इतना कष्ट क्यों किया, हमने तो आ ही जाना था?" बाबा बुड्ढा जी ने सतिगुरों की याद ताजा रखने के लिए चौंकी साहिब की रीति चलाई जो आज तक निरंतर जारी है। चौंकी साहिब की महानता का अनुमान इस बात से सहज-भाव लग सकता है कि जब यह चौंकी साहिब श्री दरबार साहिब की अंदरूनी दहलीज पर पहुंचती है तो कीर्तन रोक दिया जाता है।

अब बाबा जी बहुत ही वृद्ध हो चुके थे। गुरु जी से बाबा बुड्ढा जी आज्ञा प्राप्त करके अपने गांव रमदास आ गए। बाबा जी ने अपना अंतिम समय नजदीक जान गुरु-दर्शनों की इच्छा की तथा एक व्यक्ति द्वारा गुरु जी को दर्शन देने की विनती की। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी बाबा जी की यह विनती स्वीकार कर रमदास पहुंचे। पांच गुरु साहिबान को अपने हाथों से गुरुआई का तिलक दे, आठ गुरु साहिबान के साक्षात दर्शन कर, १२५ वर्ष की आयु व्यतीत कर, बाबा बुड्ढा जी ने १६ नवंबर, १६३१ ई को श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के पावन हाथों में अंतिम श्वास लिये। गुरु पातशाह बाबा जी का अंतिम संस्कार अपने कर-कमलों से कर, परिवार को प्रभु-हुक्म मानने तथा संगत को बाबा जी के जीवन से प्रेरणा लेने का उपदेश कर अमृतसर लौट गये।



गुरबाणी व्याकरण की आधारभूत रूप-रेखा

*-स. गुरबख्श सिंघ 'प्यासा'**

यदि मनोभावों को प्रकट करने के लिए शब्दों को तन की संज्ञा दी जाए तो शब्दों में निहित भाव उनका मन कहे जा सकते हैं। क्योंकि मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी है इसलिए उसके चिंतन का आधार भावों पर टिका हुआ है। उसके द्वारा बोले गये एवं लिखे गये शब्दों के अर्थों से उसके मनोभाव पूर्ण रूप में स्पष्ट हो सकें, इसके लिए उन्हें नियमबद्ध किया गया, जिसे 'व्याकरण' का नाम दिया गया। इसलिए हरेक मुख्य भाषा का अलग-अलग व्याकरण है। इसी प्रकार पंजाबी (गुरमुखी लिपि) का भी एक अलग व्याकरण है।

परन्तु यहां यह भ्रांति दूर करने की आवश्यकता है कि यद्यपि श्री गुरु ग्रंथ साहिब पंजाबी/गुरमुखि लिपि में लिखा गया है परन्तु इसका व्याकरण पंजाबी भाषा के व्याकरण से भिन्न है। इसके अतिरिक्त यह बात भी ध्यान में रखी जानी चाहिए कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अन्य भाषाओं, जैसे संस्कृत, हिन्दी, मराठी, अरबी, फारसी आदि के शब्दों का भी समावेष है, जो अपने तत्सम एवं तद्भव रूपों में प्रयुक्त हुए हैं। इसीलिए फारसी लिपि/भाषा के शब्दों के शुद्ध उच्चारण के लिए स, ख, ग, ज और फ अक्षरों के नीचे बिंदी लगा कर एक नये सर्ग का प्रावधान किया गया।

साधारणत: व्याकरण को एक शुष्क, नीरस एवं जटिल विषय माना जाता है। इसलिए इस विषय से प्राय: कन्नी खिसकाई जाती है अर्थात् बचा जाता है। परन्तु जैसे कि एक गुरसिक्ख का जीवन-आधार गुरबाणी अर्थात् शबद-गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब हैं, इसलिए प्रत्येक गुरसिक्ख के लिए गुरबाणी-व्याकरण की रूप-रेखा जानना अति आवश्यक है, जिससे वह गुरबाणी के शबदों के भावों को समझ कर उसके अनुरूप अपने जीवन को ढालने का प्रयास करे। परन्तु जाने-अनजाने हमने इस ओर पीठ कर रखी है। शायद इसी के कारण गुरबाणी के उच्चारण एवं अर्थों में मत-भेद बने हुए हैं। पाठ-बोध प्रथम-सीढ़ी है। गुरसिक्ख का जीवन-दर्शन धर्मी दिखना न होकर धर्मी होना है। इसीलिए गुरबाणी सत्य के आचार को सर्वोपरि मानती है:

सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥
(पन्ना ६२)

इसमें कोई संदेह नहीं कि जैसे-जैसे हम गुरबाणी के गूढ़ अर्थों को आत्मसात करते जायेंगे, वहमों, भ्रमों एवं थोथे कर्मकाण्डों के चंगुल से निकल कर गुरमति गाडी राह की ओर होंगे। तब कोई हमें शबद-गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब द्वारा दर्शाये सत्य-मार्ग से भटका नहीं पायेगा।

उच्चारण के प्रति अवहेलना

वैसे तो हमने गुरबाणी के शुद्ध पठन/उच्चारण के बारे में कई साखियां सुन रखी हैं, परन्तु व्यवहारिक रूप में गुरबाणी के शुद्ध उच्चारण के प्रति लापरवाही अपनायी हुई है। तभी तो अभ्यासवश सुनी-सुनाई अथवा गलत कंठस्थ की हुई बाणी दोहराते चले जा रहे हैं क्योंकि हमने कभी गुरबाणी के पठन से ऊपर उठ कर अर्थ-बोध की ओर ध्यान देने की आवश्यकता बहुत ही कम महसूस की है।

पंक्तियों में अल्प विराम न देना आम बात

**२२, प्रभु पार्क सोसायटी, नजदीक आसोपालव सोसायटी, ओल्ड छानी रोड, वडोदरा-३९०००२ (गुजरात)*

है, चाहे अर्थ का अनर्थ ही क्यों न हुआ करे, जैसे कि :

गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास भगत उतरि आयउ ॥ (पन्ना १४०७)

उपरोक्त पंक्ति में अल्प विराम 'अरजुनु' और 'रामदास' के बाद आना चाहिए अर्थात् श्री गुरु अरजन देव जी, श्री गुरु रामदास जी के घर, भक्त रूप में अवतरित हुए। और यदि अल्प विराम 'घरि' के बाद दिया जाता है। तो अर्थ का अनर्थ हो जायेगा। एक अन्य उदाहरण जपु जी साहिब की ३५वीं पउड़ी से। इस पउड़ी में 'केते' शब्द, कई पंक्तियों में दो-दो बार, एक साथ प्रयुक्त हुआ है, जिनका उच्चारण एक ही लय में होता प्राय: देखने-सुनने में आता है, जबकि इन दोनों के बीच अल्प-विराम होना चाहिए और इसी पउड़ी की अंतिम पंक्ति *"केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥"* का शुद्ध उच्चारण 'सुरती', 'केते' और 'नानक' के बाद अल्प-विराम लगाने से होगा।

इसी प्रकार पंक्ति *"कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥"* को पढ़ते समय अक्सर 'करि' के बाद दिया जाता है, जबकि अल्प विराम 'कीटु' और 'दोसी' के पश्चात आयेंगे।

बिंदी का उच्चारण

अल्प विराम की तरह बिंदी के प्रति भी लापरवाही देखने में आती है। इसका भी एक मात्र वही कारण है कि गुरबाणी के अर्थ-बोध अर्थात् विचार-बोध के प्रति हमने जिज्ञासा ही पैदा नहीं की। उदाहरण के तौर पर दो पंक्तियां प्रस्तुत हैं :

"पुत्री कउलु न पालिओ" में यदि 'पुत्री' पर आवश्यक बिंदी न बोली जाये तो पंक्ति का गलत अर्थ निकलेगा।

दूसरी पंक्ति *"कूड़ा सउदा करि गए गोरी आए पए ॥"* में 'गोरी' शब्द पर बिंदी की आवाज निकलेगी, तभी सही अर्थ हो पायेंगे। 'गोरीं' अर्थात् कबरों में, जो फारसी शबद 'गोर' (कब्र) का बहुवचन है।

मात्राओं का बोध

गुरबाणी व्याकरण के प्रति सचेत न होने के कारण प्राय: यह भ्रांति उत्पन्न हो गयी कि गुरबाणी में शब्दों के अंत में लगी मात्राएं अनावश्यक हैं, जबकि दीर्घ खोज के बाद इस तथ्य की पुष्टि हुई कि ऐसी मात्राएं अनावश्यक न होकर किसी नियम के अंतर्गत उपयोग में लाई गयी हैं। (इस प्रकार गुरबाणी व्याकरण का उदय हुआ।) प्रथम दृष्टि में वैसे तो गुरबाणी व्याकरण गूढ़ एवं जटिल प्रतीत होता है परन्तु श्रद्धा एवं विश्वास के पंखों के सहारे आकाश को भी छुआ जा सकता है।

आइए, कुछ मुख्य बिंदुओं को जानने का प्रयास करें, जिससे साधारण रूप-रेखा की जानकारी से अवगत हो सकें और गुरबाणी के शुद्ध उच्चारण के प्रति सजग होकर, वीचार-बोध द्वारा शबद-गुरु के उपदेशों को गुरमति अनुसार पूर्ण रूप में आत्मसात करने की ओर उन्मुख होने का प्रयास करें, जिसके बारे में गुरबाणी में जगह-जगह उल्लेख किया है। श्री गुरु रामदास जी अपनी बाणी में स्पष्ट फरमान करते हैं :

सभसै ऊपरि गुर सबदु बीचारु ॥
होर कथनी बदउ न सगली छारु ॥
(पन्ना ९०४)

और इससे बढ़ कर कौन-सा दिशा-निर्देश चाहिए :

सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥ (पन्ना ४६५)

एक ही शब्द का भिन्न-भिन्न रूपों में अंकन : गुरबाणी का पाठ करते समय प्राय: हम देखते हैं कि एक शब्द भिन्न-भिन्न रूपों में प्रयुक्त हुआ है, जैसे कि :

१. 'घर' महि 'घरु' दिखाइ देइ सो सतिगुरु पुरखु सुजाणु ॥ (पन्ना १२९१)

२. अंधी कंमी अंधु 'मनु' 'मनि' अंधै तनु अंधु ॥
(पन्ना १२८७)
३. इहु 'जलु' मेरा जीउ है 'जल' बिनु रहणु न जाइ ॥ *(पन्ना १२८३)*

उपरोक्त पंक्तियों में (घर, घरु), (मन, मनु) एवं (जल, जलु) से स्पष्ट होता है कि उपरोक्त शब्दों क्रमश: घर, मन एवं जल के भिन्न-भिन्न रूप किसी नियम के अंतर्गत प्रयुक्त हुए हैं।

वचन

जिस संज्ञा के अंत में (ु) की मात्रा अंकित हो वह प्राय: एकवचन होता है और उसे बहुवचन बनाने के लिए (ु) की मात्रा हटा ली जाती है, जैसे 'नेहु' एकवचन है तो 'नेह' बहुवचन। इसी प्रकार 'पंडितु' एकवचन और 'पंडित' बहुवचन।

१. तिन्ह' 'नेहु' लगा रब सेती . . ॥ वार आसा
सभि कूड़े तुटे 'नेह' ॥ सिरीराग म. १
२. पंडितु पड़ै बंधन मोह बाधा . . . ॥
सिरीराग म. ३
मूरख 'पंडित' हिकमति हुजति संजै करहि पिआरु ॥ वार आसा

लिंग

स्त्रीलिंग संज्ञा के साथ (ु) की मात्रा नहीं होती, जैसे कि 'देह'--'*. . . मनु तनु देह सुआहि ॥*' इसी प्रकार बात, पिआस, खेह, गणत, भूख, पीर, आस आदि मात्रा रहित प्रयुक्त होते हैं।

संबोधन कारक

जब कोई 'संज्ञा' संबोधन कारक होती है तो भी (ु) की मात्रा निकल जाती है, जैसे:
१. "*नानक पावहु सूख घनेरे ॥*" म. ५ (अर्थात् हे नानक)
२. "*गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥*" (अर्थात् हे मन)

ऐसे ही संबंध कारक संज्ञा के साथ लगा विशेषण भी मात्रा रहित हो जाता है, जैसे :
"*. . . तुम पूरन पुरख बिधाते ॥*" में विशेषण 'पूरन' मात्रा रहित है।

'आ' (ा) की मात्रा

जहां 'संज्ञा' बहुवचन हो वहां 'आ' (ा) की मात्रा लग जाती है, जैसे चंद का बहुवचन 'चंदा' हो जायेगा : "*जे सउ चंदा उगवहि . . ॥*"

(ि) छोटी 'इ' की मात्रा

वे शब्द जो किसी वस्तु के साथ संबंध प्रकट करते हों उनके अंतिम अक्षर के पहले छोटी (इ) 'ि' की मात्रा का प्रयोग होता है, जैसे : भीतरि, बीचि, अंतरि, महि, आदि, हेठि, नालि आदि।

"*मनसा आसा 'सबदि' जलाई ॥*" अर्थात् शबद (गुरबाणी) द्वारा आशा/तृष्णा जला दी गयी। "*भै विचि धरती दबी 'भारि' ॥*" 'भारि' अर्थात् भार में छोटी 'इ' (ि) की मात्रा, स्थान-वाचक क्रिया-विशेषण के साथ भी इसी तरह आती है, जैसे 'अंतरि', 'बाहरि', 'साथि'। "*मारि आपे जीवालदा 'अंतरि' 'बाहरि' 'साथि' ॥*" मूलि : "*मंदा मूलि न कीचई . . .।*" इसी तरह 'निकटि', 'निरंतरि', 'हजूरि', 'ततकालि' आदि में। अपवाद : (१) परन्तु यदि यही शब्द संज्ञा के रूप में आते हैं तो उनके अंत में छोटी 'इ' (ि) की मात्रा नहीं आती, जैसे उरवार, पार, साथ आदि।

(२) कई बार **Imperative Mood** के साथ छोटी 'इ' (ि) की मात्रा लगती है, जैसे:

"*जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥*"

इसमें 'जपि' (अर्थात्) 'तुम जपो' के अर्थों के साथ आता है, तो छोटी इ (ि) की मात्रा लगेगी।

परन्तु जब 'जपु' शब्द संज्ञा के रूप में आता है तो (ु) की मात्रा 'प' के अक्षर पर लगेगी और यदि बहुवचन हो तो 'जप' का 'प' मात्रा रहित होता है, जैसे :
"*असंख 'जप' असंख भाउ ॥*" *(पन्ना ३)*

स्त्रीलिंग वाचक/ छोटी इ (ि) की मात्रा--कामणि :

"गुण कामण 'कामणि' करै तउ पिआरे कउ पावै ॥" कामणि अर्थात् स्त्री।

इसी प्रकार 'बनजारनि', 'सरपनि', 'दामनि', 'तरुणि', 'तेजणि' आदि।

अरबी भाषा से आए शब्दों के अंत में 'ति' के स्थान पर 'त' हो तो पुलिंग और स्त्रीलिंग हो तो अंतिम अक्षर 'त' को छोटी इ (ि) की मात्रा लगती है, जैसे : कुदरति, सिफति, करामाति, खसलति, उमति आदि।

बड़ी 'ई' (ी) की मात्रा

बहुवचन संज्ञाएं अंत में संबंधकी अर्थ देती हैं तो अर्थ करते समय बिन्दी लगा कर पढ़ी जाती है, जैसे : अखी (अखीं), कंनी (कंनीं)

"सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥" में 'सिखी' का 'सिखीं' शब्द द्वारा अर्थ होगा अर्थात् 'सिक्खों ने'।

इसी प्रकार*"अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥"* में 'अखरी' को 'अखरीं' अर्थात् 'अक्षरों' से।

'उ' (ु) की मात्रा

(ु) की मात्रा एकवचन होना दर्शाती है। पुलिंग संज्ञा जब एकवचन हो तो अंतिम अक्षर में 'उ' (ु) की मात्रा लगती है। इसी प्रकार जो उस संज्ञा का विशेषण हो, उस शब्द के अंतिम अक्षर में भी (ु) की मात्रा लगती है, जैसे : *" . . . इहु सरीरु करि डंडी ॥"* एवं *"अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥"*

जब किसी शब्द के अंत में 'ह' का स्वर के रूप में उपयोग होता है तो (ु) की मात्रा उस 'ह' के साथ मिल कर 'ओ' (ो) की जगह आता है, जैसे : परबोधहु, जागहु, संतहु अर्थात् परबोधो, जागो, संतो।

'ऊ' (ू) की मात्रा

जब संज्ञा के साथ संबंधित पद प्रयुक्त करना होता है तो 'ऊ' (ू) की मात्रा का उपयोग होता है, जैसे : *"वसतू अंदरि वसतु समावै . . . ॥"*

'ए' (े) की मात्रा

कई जगहों पर छोटी 'इ' (ि) की जगह 'ए' (े) की मात्रा लगाई जाती है, जैसे : कूड़े= कूड़ि अर्थात् कूड़ में। अंते = अंति।

'ऐ' (ै) की मात्रा

यह मात्रा कई बार स्थान-वाचक, संबंधकी अर्थों के लिए उपयोग में आती है, जैसे : रिदै (रिदै में), नाराइणै (नारइण पासि), कहणै (कहने से)। इसी तरह, मथै, लेखै, सुरनै, रामदासै आदि।

'औ' (ौ) की मात्रा

यह मात्रा भी कई जगह स्थान-वाचक संबंधकी के रूप में उपयोग में लायी जाती है। अर्थ करते समय इसके साथ बिन्दी लगा ली जाती है, जैसे : मुहौ (मुहौं) अर्थात् मुंह से, जीभौ (जीभौं) अर्थात् जीभ से।

(१) मुहौ कि बोलणु बोलीऐ . . . ॥ (जपु जी)

(२) इक दू जीभौ लख होहि . . . ॥ (जपु जी)

'अधक' (ੱ) का उच्चारण

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन बाणी में उपरोक्त मात्रा का उपयोग नहीं हुआ है, परन्तु यदि उचित स्थानों पर 'अधक' लगा कर उच्चारण न किया जाए तो अर्थ भी सही नहीं हो सकते, जैसे नीचे दी हुई गुरबाणी की पंक्तियों से यह बात स्पष्ट हो जाएगी।

(१) मेरो सुंदरु कहहु मिलै कितु गली ॥
(पन्ना ५२७)

(२) गली जिन्हा जपमालीआ लोटे हथि निबग ॥
(पन्ना ४७६)

(३) गली भिसति न जाइऐ . . . ॥ (पन्ना १४१)

पंक्ति क्र. १ में 'गली' शब्द का अर्थ है तंग रास्ता, जिसका उच्चारण अधक-रहित होगा।

पंक्ति क्र. २ में 'गली' का उच्चारण अधक रहित परन्तु 'ल' अक्षर पर बिंदी लगा कर

होगा--गलीं अर्थात् गले में।

पंक्ति क्र. ३ में आए **'गली'** शब्द का अर्थ है बातों से और उच्चारण के समय अधक भी लगेगी तथा 'ल' के साथ लगी बड़ी **'ई'** (ੀ) की मात्रा बिंदी लगा कर उच्चारण होगा।

जैसे देवनागरी लिपि (हिन्दी) में आधे अक्षरों का प्रावधान है उसी प्रकार गुरमुखी लिपि में अधक (ੱ) की मात्रा प्रयुक्त होती है, जैसे **'पत्ता'** को गुरमुखी लिपि में (**ਪੱਤਾ**) लिखा जाता है। इसी प्रकार **'रस्सी'** और **'पक्का'** को गुरमुखी लिपि में **'अधक'** की मात्रा लगा कर देवनागरी में प्रयुक्त आधे अक्षर की पूर्ति की जाती है और उपरोक्त शब्दों को '**ਰੱਸੀ**' और '**ਪੱਕਾ**' लिखा जाता है।

पद-चिन्ह लगे शब्द

गुरबाणी में कई अक्षरों के नीचे उदात चिन्ह लगे होते हैं, जिनको (੍) के रूप में दर्शाया जाता है अर्थात् 'ह' का चिन्ह। इसी प्रकार यकश चिन्ह (੍ਯ) अर्थात् आधे **'य'** का उच्चारण होता है। उदाहरण :

उदात चिन्ह : *"गुण रासि बंन्हि (**ਬੰਨ੍ਹਿ**)पलै आनी ॥" (पन्ना ३७२)* **'बंन्हि'** अर्थात बांधना। *"गुणा गवाई गंठड़ी अवगण चली बंनि ॥"* इस पंक्ति में **'बंनि'** में कोई चिन्ह नहीं है परन्तु अर्थ बांधना ही है, इसलिए उच्चारण **'बंनि'** ही किया जाएगा।

जिन शब्दों का अर्थ नहाने से संबंधित हो, वहां 'न' अक्षर के नीचे आधे **'ह'** का उच्चारण करना चाहिए, जैसे *: "अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥"* तथा *"रामदास सरोवरि नाते ॥"*

उपरोक्त दोनों पंक्तियों का उच्चारण **'न'** अक्षर के नीचे आधा **'ह'** से होगा, परन्तु *"इकु लखु पूत सवा लखु नाती ॥" (पन्ना ४८१)* और *"साचा साहिबु साचु नाइ . . . ॥" (जपु जी)* जैसी पंक्तियों में आये शब्द **'नाती'** और **'नाइ'** का **'नहाने'** से कोई संबंध नहीं और उनका अर्थ क्रमशः **'पौत्र'** और **'नाम'** है, इसलिए इनके साथ आधा **'ह'** अक्षर नहीं लगेगा।

(यक्ष) यक्श चिन्हः यह आधे **'य'** (੍ਯ) अक्षर के उच्चारण के लिए है और **'पक्का'** जैसे **'खाद'**, **'रखा'**, **'अखादि'** आदि।

विसर्ग (:)

यह संस्कृत (हिन्दी/देवनागरी) वर्णमाला का अक्षर है, जो आधे **'ह'** का उच्चारण देता है, जैसे :

-सरब दोख परंतिआगी सरब धरम द्रिड़ंतणः . . . ॥
-सुखेण बैण रतनं रचनं कसुंभ रंगणः ॥

उपरोक्त पंक्तियों में **'द्रिड़ंतणः'** एवं **'रंगणः'** का उच्चारण क्रमशः **'द्रिड़ंतणहि'** और **'रंगणहि'** होगा।

इसी प्रकार **'टहल, ठहक, कहत'** जैसे शब्द संस्कृत भाषा/साहित्य के अंतर्गत **'टहिल, ठहिक और कहित'** के रूप में उच्चारे जाएंगे और मोहह, संतह, भगतह जैसे शब्दों का उच्चारण, मोहहि, संतहि और भगतहि होगा।

दूसरी बोलियों के शब्द

जैसे कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कई भाषाओं/बोलियों के शब्द आये हैं जिनमें कुछ शब्दों ने पंजाबी का रूप धारण कर लिया, परन्तु कुछ शब्दों ने अपना मूल रूप (तत्सम) और उच्चारण कायम रखा, जैसे : पेस, नमाज, सेख, मसकत आदि, जिनका शुद्ध उच्चारण क्रमशः पेश, नमाज़, शेख, मशक्कत आदि होगा।

कुछ शब्द दोनों रूपों में आये हैं। **'वकत'** और **'वखत'**, **'भै'** (भय) और **'भउ'** आदि।

फारसी शब्दों का उच्चारण फारसी शब्दों/भाषा के अनुसार होगा, जैसे *"जन पिसर पदर बिरादरां कस नेस दसतंगीर ॥"* और *"भइआ दिवाना साह का नानकु बउराना ॥"* में **'जन'** फारसी का शब्द है और शुद्ध उच्चारण **'ज़न'** होगा, जिसका अर्थ है **'औरत'** और **'साह'** का अर्थ है **'पातशाह'** एवं उच्चारण होगा **'शाह'**।

इसी तरह *"नानकु साइरु एव कहतु है सचे परवदगारा ॥"* और यहां 'साइरु' अरबी भाषा का शब्द है और उच्चारण होगा 'शाइर' अर्थात् 'कवि'। इसी प्रकार के फारसी के कुछ शब्द (उदाहरण के रूप में) नीचे दिये हैं :

गोस/गोश, मुसकल/मुशकल, तमासा/तमाशा, मासा/माशा, परेसानी/परेशानी, खुसी/खुशी, पातिसाह/पातिशाह, तसवीस/तशवीश, रजाई/रज़ाई आदि।

टिप्पी (ॅ) की मात्रा (बिंदी का पर्याय)

गुरबाणी में 'टिप्पी' (ॅ) की मात्रा प्रायः इस्तेमाल की गयी है, परन्तु उन्हीं अर्थों में कई शब्दों पर 'टिप्पी' नहीं लगी हुई है। ऐसे शब्दों का उच्चारण भी टिप्पी लगे शब्दों जैसा ही होगा अन्यथा अशुद्ध उच्चारण होगा, जैसे :

१) सउदे कउ धावै बिनु पूंजी ॥ (पन्ना १९८)
२) हरि पूजी चाही नामु बिसाही गुण गावै गुण भावै ॥ (पन्ना ४४२)

क्रमशः (२) में आया शब्द 'पूजी' का अर्थ 'पूंजी' ही है, इसलिए यहां भी उच्चारण पंक्ति क्रमशः (१) में आये शब्द 'पूंजी' का ही होगा।

इसी प्रकार *"भूखे प्रीति होवै अंनु खाइ ॥"* और *"जिस का अनु धनु सहजि न जाना ॥"* में 'अनु' का उच्चारण भी 'अंनु' ही होगा।

इसी प्रकार इद्र/इंद्र, समुद्र/समुंद्र, घूघट/घूंघट, गोविद/गोविंद, सारग/सारंग, अधुला/अंधुला आदि का उच्चारण टिप्पी/बिंदी-युक्त होगा।

दो मात्राओं वाले शब्द (उच्चारण)

१) सरणि पइआ नानक सुोहेला ॥ (पन्ना ३८३)
२) सहस मूरति नना एक तुोही ॥ (पन्ना १३)

उपरोक्त पंक्तियों में (ु) और (ो) की मात्राएं लगी हुई हैं। मूल रूप में ये (उ) की मात्रा से लिखे जाते हैं, परन्तु तुकांत का वजन पूरा करने के लिए 'ओ' की मात्रा द्वारा उच्चारण करने का संकेत है, इसलिए इनका उच्चारण शुद्ध रूप में करने के लिए 'ओ' की मात्रा से होगा। निम्नलिखित पंक्तियां, जैसे :

१) साई सुोहागणि नानका जो भाणी करतारि री ॥ (पन्ना ४००)
२) प्रभ किरपाल दइआल गुोबिंद ॥ (पन्ना ८६६)

इनका सही रूप 'ओ' की मात्रा से है, परन्तु तुकांत के लिए (उ) की मात्रा से उच्चारे जाएंगे, जैसे सुहागण, गुबिंद।

अर्थात् ऐसे दो मात्राओं वाले शब्दों में एक मात्रा उनका सही रूप और दूसरी मात्रा तुकांत के अनुसार उच्चारण के लिए है।

फुटकल

छोटी 'इ' और 'उ' की मात्राओं का कारक के रूप में प्रयुक्त होना :-

गुरबाणी के अंकन में यह नियम देखने में आया है कि शब्द (संज्ञा) का अंतिम अक्षर मात्रा रहित हो, छोटी 'इ' की मात्रा अथवा 'उ' की मात्रा लगी हो, उनका तीनों रूपों में एक-सा उच्चारण होगा, जैसे राह, राहु और राहि का उच्चारण 'राह' ही होगा। इसी प्रकार 'दिह, दिहु, दिहि' का उच्चारण 'दिह' ही होगा। 'नेह, नेहु, नेहि' का उच्चारण 'नेह' ही होगा। इसी प्रकार 'रोहि, खोहि, पोहि और जोहि' का उच्चारण 'रोह, खोह, पोह और जोह' होगा। निश्चयवाचक शब्दों 'ऐह, एह, एहि' का उच्चारण 'एह' ही होगा।

जब किसी शब्द का अंतिम अक्षर 'अ' (मात्रा रहित) हो तो उसका उच्चारण अपनी ओर से 'आ' (ा) की मात्रा लगा कर करना अशुद्ध है और 'अ' अक्षर से पहले अक्षर के साथ लगी मात्रा की आवाज़ कुछ लम्बी हो जाती है, इसलिए 'जीअ, कीअ और धीअ' का उच्चारण 'जी, की और धी' होगा।

संधि-शब्दों के नियम

जो शब्द संधि के नियमों के अंतर्गत प्रयुक्त हुआ है उसके शुद्ध उच्चारण के लिए सही

स्थान पर हल्का-सा विराम देकर उच्चारण किया जाये। ऐसा करने से उस शब्द के अर्थ अधिक स्पष्ट हो जायेंगे। उदाहरण के तौर पर नीचे कुछ शब्द दिए गये हैं जिससे यह नियम अधिक स्पष्ट हो सके, जैसे : 'अगम, असुर, अलिपतु, अपरसु, अगणत' का शुद्ध उच्चारण 'अ+गंम, अ+सुर, अ+लिपतु, अ+परमु, अ+गणत' होगा।

गुरबाणी में आए कुछ फारसी और अरबी भाषा के शब्द

स्त्रीलिंग : उमति, अकलि, ईदि, सनाति, सिफति, सूरति, कुदरति, कीमति, खिजमति, खैरि, जरूरति, तरीकति, दउलति, नीअति, पनाहि, पैदाइसि, बंदसि, मुहबति, मिहरामति, लहरि, हकीकति आदि।

पुलिंग : अलाहि, खुदाहि, तामि आदि।

विशेषण : बराबरि, फनाइ आदि।

क्रिया विशेषण : मनहि, नजीकि आदि।

संस्कृत (संज्ञा)

स्त्रीलिंग : उसतति, उपाधि, उतपति, आदि, अरदासि, संगति, सुचि, समाधि, हानि, कीटि, कीरति, गोसटि, गति, गुरमति, छबि, जुगति, दाति, दुरमति, धूलि, धरणि, नाभि, प्रीति, पालि, भगति, भूमि, मूरति, रिधि, रति आदि।

पुलिंग : ससि, हसति, हरि, गिरि, निधि, पति, मुनि, मुरारि आदि।

विशेषण : कोटि, चारि, सठि, तीनि आदि।

संबंधकी : उपरि, अंतरि, निकटि, मधि आदि।

क्रिया विशेषण : उरधि, अंतरि, नितप्रति, निकटि, निरंतरि, पुनरपि आदि।

प्राकृत एवं पंजाबी (संज्ञा) के शब्द

स्त्रीलिंग : उचापति, असथिति, आगि, आणि, अनाहति, आनि, सोइ, सिसटि, संचनि, संबति, सोरठि, सुरति, हाटि, हानि, कानि, कुबुधि, कमजाति, कामणि, किरति, खीरि, गोसटि, गांठि, गरदनि, चउकड़ि, चेरि, जूठि, जोनि, जलनि, डीठि, नींहि, नारि, परभाति, पावसि, फकड़ि, बिरति, बारि, भठि, भीति, माइ, मोहनि, रासि, रैनि, रुति, लागि, लबधि, वाइ, वारि, वाड़ि आदि।

पुलिंग : कबि, पंखि, बनराइ, बनारसि आदि।

विशेषण : अठसठि, अनंनि, करोड़ि, घटि, चारि, झिलमिल, धनाढि, बिरधि, बिपरीति, भागठि आदि।

संबंधकी : ऊपरि, अरथि, अंदरि, अंतरि, साथि, संग, समसरि, समानि, तलि, नजीकि, नालि, पासि, परि, बराबरि, महि, माहि, मझारि, विचि आदि।

क्रिया विशेषण : ओति पोति, उरधि, अति, अंति, इन बिधि, सासि गिरासि, सदाकारि, सिरिभार, सरबति, हजूरि, कलि, कदि, काहि, का, जुगि जुगि, जामि, झिंमि झिंम, तदि, तामि, दहदिसि, दिनसु, दूरि, नाहि, निदानि, नानाबिधि, नेरि, नेड़ि, पूरि, करि, परतखि, फुनि, फिरि फिरि, बेगि, बादि, बहुरि, भरपूरि, मनहि, वखि, वति, वारि वारि आदि।

बहु-अर्थी शब्द

कुछ शब्द ऐसे हैं जो बहु-अर्थी हैं। उदाहरण के रूप में कुछ शब्द प्रस्तुत हैं, जैसे:

१) 'अमलु' अर्थात 'नशा'

अमलु गलोला कूड़ का दिता देवणहारि ॥
(पन्ना १५)

और

अमलु करि धरती बीजु सबदो करि सच की आब नित देहि पाणी ॥ *(पन्ना २४)*

इस पंक्ति में 'अमलु' का अर्थ है--कार्य (काम)

२) 'सोइ' अर्थात् 'वह' और दूसरा अर्थ है 'शोभा'।

-कुदरति करि कै वसिआ 'सोइ' ॥ (वह)
(पन्ना ८३)

-सुणि सुणि जीवा 'सोइ' तुमारी ॥ (शोभा)
(पन्ना १०४)

३) 'बिरथा' अर्थात् 'पीड़ा' और दूसरा अर्थ है

'व्यर्थ'।

४) वात (बाजे)

वात वजनि टंमक भेरीआ ॥ (पन्ना ७४)

वात (खबर)

हिकसु कंतै बाहरी मैडी वात न पुछै कोइ ॥
(पन्ना १०९५)

जैसे कि यह सर्वविदित है कि गुरमुखी वर्णमाला में ३५ अक्षर थे, जिनमें उ, अ, इ स्वर रूप और शेष ३२ अक्षर ('ख' से 'ड़' तक) व्यंजन रूप। कालांतर अरबी और फारसी भाषा के शब्दों के शुद्ध उच्चारण हेतु म, ख, ग, ज, फ अक्षरों के नीचे बिंदी लगाकर नये सर्ग का प्रावधान किया गया।

अक्षर ह, र और व आधे रूप में अन्य पूरे अक्षरों के नीचे लगा कर भी प्रयुक्त होते हैं। भट्टों के सवय्यों में स, च, त, ट, न और य अक्षर भी अपने आधे रूप में प्रयुक्त हुए हैं जो संस्कृत भाषा के नियमों के अंतर्गत उपयोग किये गये हैं।

गुरबाणी के प्रति हमारा सरोकार पाठ-पठन, चिंतन-मनन करते समय, भक्त कबीर जी के पावन वचन याद रहने चाहिये :

लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रहम बीचार ॥
(पन्ना ३३५)

और गुरमति, सर्व मानवता के कल्याण हेतु प्रेम-भक्ति का सहज मार्ग दर्शाते हुए सारी मानवता को एक ही जाति और जमात मानती है एवं धर्म के मूल तत्व को व्यवहारिक रूप में धारण करने की युक्ति दृढ़ करवाती है, इसलिए 'वीचार पक्ष' पर बल देती है, आडंबर एवं पाखंड और व्यर्थ कर्मकाण्डों का निषेध करती है, प्रभु के भय और भाउ में विचरते हुए मानव को मानव से जुड़ने एवं जीवात्मा को परम-आत्मा में लीन होने का मार्ग दर्शाती है।

सुरति को शबद-गुरु से जोड़ कर मात्र 'एक' का संकल्प दृढ़ करवाया।

सबदि गुरू भव सागरु तरीऐ इत उत एको जाणै ॥ (पन्ना ९४४)

और गुर-शबद के वीचार/व्यवहार पर बल दिया। तभी तो *"सबदु बीचारि भए निरंकारी"* के तत्व को अंकित किया।

एवं

कुबुधि मिटै गुर सबदु बीचारि ॥
सतिगुरु भेटै मोख दुआर ॥

और

--नानक बेड़ी सच की तरीऐ गुर वीचारि ॥
--सबदु चीन्हि सुखु पाइआ सचै नाइ पिआर ॥
(पन्ना १३४६)

सहायक पुस्तकों एवं लेखों की सूची

१. श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी विच शबदांतिक-लगां मात्रां दे गुज्झे भेद (पंजाबी) --स. तेजा सिंघ एम. ए

२. गुरबाणी लगां-मात्रां दी विलक्खणता (पंजाबी) --भाई रणधीर सिंघ

३. गुरबाणी विआकरण (पंजाबी) --प्रो. साहिब सिंघ

४. पंजाबी विआकरण (पंजाबी) --स. नरिंदर सिंघ (दुग्गल)

५. गुरबाणी दा शुद्ध उचारण (पंजाबी) --सिख मिशनरी कालेज, लुधियाना

६. प्रीचै श्री गुरू ग्रंथ साहिब (पंजाबी) --डॉ. सरूप सिंघ अलग्ग

७. गुरबाणी नितनेम निरणै (पंजाबी) --ज्ञानी हरिबंस सिंघ

८. नितनेम टीका--पंजाबी से हिंदी में अनुवादित (मूल) --प्रो. साहिब सिंघ, अनुवादक : डॉ. परमजीत कौर

९. लेख/गुरू ग्रंथ साहिब की विलक्षणताएं (हिन्दी)--डॉ. जसविंदर कौर

१०. सिंघ सभा पत्रिका (पंजाबी, १९७४) गुरू ग्रंथ साहिब विचार सम्मेलन अंक में छपे लेख --संपादक ज्ञानी गुरदित्त सिंघ (सूत्रीय विचार)

११. गुरबाणी दे शुद्ध उच्चारण संबंधी बहुपक्खी विचार --सिंघ साहिब ज्ञानी किरपाल सिंघ

१२. शुद्ध गुरबाणी उच्चारण --प्रिं. हरिभजन सिंघ

१३. गुरबाणी विआकरण दे सरल नेम --ज्ञानी हरिबंस सिंघ

१४. शुद्ध गुरबाणी उच्चारण --भाई जोगिंदर सिंघ



बंदीछोड़ दिवस एवं इसका निर्मल संदेश

-बीबी अमरजीत कौर*

हिन्दोस्तानी समाज दीवाली का त्योहार सदियों से मनाता चला आ रहा है। सिक्ख जगत में भी कई धार्मिक त्योहार जैसे गुरुपर्व, शहीदी जोड़-मेले, होला महल्ला, वैसाखी, खालसा साजना दिवस, बंदीछोड़ दिवस अथवा दीवाली आदि बहुत ही श्रद्धा और उत्साह से मनाए जाते हैं।

सिक्ख धर्म में भी दीवाली के त्योहार का विशेष तथा अलग प्रकार का महत्व है। सिक्खों के छठम गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को उस समय के मुगल बादशाह जहांगीर ने अपनी हकूमत के बल पर कैद कर लिया था। जब बादशाह को गुरु साहिब के रूहानी एवं निर्मल व्यक्तित्व के बारे में पता चला कि वे तो परमात्मा का रूप हैं और मैंने अज्ञानता तथा हकूमत के नशे में इनको कैद कर लिया था तो उसने गुरु साहिब को रिहा करने का मन बनाया। गुरु साहिब अकेले रिहा नहीं होना चाहते थे। गुरु जी ने बादशाह के आगे शर्त रखी कि मैं तब ही बाहर जाऊंगा जब मेरे साथ वे बाकी सभी बंदी ५२ राजे भी रिहा किये जाएंगे। बादशाह ने गुरु साहिब की बात मान ली और कहा कि जो आपके चोले की कली पकड़ कर बाहर आ जायेगा वह रिहा हो सकता है। गुरु जी ने उस समय ५२ कलियों वाला चोला बनवाकर पहना और सभी राजाओं को साथ लेते हुए ग्वालियर के किले से बाहर आए। जब गुरु जी अमृतसर श्री हरिमंदर साहिब पहुंचे तो बाबा बुड्ढा जी ने संगत के साथ खुशी जाहिर करने के लिए दीपमाला की, दीवान सजाए और गुरमति विचारें कीं। सौभाग्यवश उस दिन दीवाली का त्योहार था। ५२ राजाओं को कैद से मुक्ति दिलवाने के कारण यह दिवस 'बंदीछोड़ दिवस' के नाम से जाना जाने लगा।

सिक्ख इतिहास में भाई मनी सिंघ जी की शहीदी का प्रसंग भी बंदीछोड़ दिवस के साथ जुड़ा हुआ है। अठारहवीं सदी में सरबत्त खालसा बुलाकर गुरमते किये जाते थे और ये सरबत्त खालसा वैसाखी और दीवाली के मौके पर ही बुलाए जाते थे। मुगल सरकार की पाबंदी के कारण ये जोड़ मेले कई सालों से बंद थे। सन् १७३८ में भाई मनी सिंघ जी ने लाहौर के सूबे के पास दीवाली का जोड़-मेला मनाने की दरख्वास्त दी। पांच हजार रुपए सरकार को देने की शर्त पर यह इजाजत मिल गई। भाई साहिब को उम्मीद थी कि दस दिनों के जोड़-मेले में इकट्ठी हुई भेंट में से यह रकम अदा कर दी जाएगी। भाई मनी सिंघ जी के बुलावे पर संगत ने भारी गिनती में अमृतसर की ओर चाले पा दिए, लेकिन सूबे की बदनीति से दीवान लखपत राय के मातहित अमृतसर से बाहर डेरा लगा लिया और जोड़-मेले वाले दिन शहर की ओर रवाना होने की योजना बनाई। मौके पर इतलाह मिलने पर मेला बिखर गया। दीवाली न मनाने देने के और चढ़ावा न होने पर भाई मनी सिंघ जी ने निश्चित रकम अदा करने से इंकार कर दिया। इसी 'अपराध' के बदले भाई साहिब को बंदी बना लिया गया और

*प्रिंसीपल, न्यू अमृतसर माडल स्कूल, गोबिंद नगर, भुल्लर रोड, बटाला-१४३५०५ (गुरदासपुर)

मृत्यु या इस्लाम कबूल करने की पेशकश की। भाई साहिब ने मृत्यु को कबूल किया। भाई साहिब को बंद-बंद काट कर शहीद किया गया। इस तरह उनकी शहीदी भी 'बंदीछोड़ दिवस' के साथ जुड़ गई।

लेकिन अफसोस कि आज हमने इस महान अवसर को गलत ढंग से मनाना शुरू कर दिया है। गुरु साहिब के महान परोपकार और भाई साहिब की महान शहादत को भुला कर हमने आज इस दिवस को एक खाने-पीने और जुआ खेलने की बुरी लत को गले लगाकर मनाना शुरू कर दिया है। इस दिन रात को शराब पी जाती है और जुआ खेला जाता है जो कि बहुत बुरी आदत है। इस दिन रात को लाखों-करोड़ों रुपए के पटाखे फोड़े जाते हैं जो वातावरण को और भी प्रदूषित करते हैं जिससे सांस लेने में तकलीफ होती है और बहुत-सी बीमारियों को हम स्वयं दावत देते हैं।

हिन्दू रीति के अनुसार लोग रात को लक्ष्मी की पूजा करते हैं तथा रात को घर के दरवाजे खुले रखते हैं और कहते हैं कि अगर इस रात दरवाजा बंद कर दिया जाए तो लक्ष्मी नाराज होकर वापस चली जाती है और फिर सारा साल नहीं आती। हमें इन बातों से ऊपर उठना चाहिए। हमें सोचना चाहिए कि गरीब लोगों के घर में दरवाजा कम ही होता है, फिर उनके घर में लक्ष्मी क्यों नहीं आकर ठहरती? हमें स्वयं मेहनत करके अपनी गरीबी दूर करने के लिए प्रयास करने होंगे। हमें गुरमति के अनुसार अपने गरीब भाइयों को ऊपर उठाने के लिये यथासंभव प्रयत्न करने चाहिएं। गुरु नानक साहिब ने हमें इन अंधविश्वासों से ऊंचा उठाने के लिए समझाया है :

देवी देवा पूजीऐ भाई किआ मागउ किआ देहि ॥
पाहणु नीरि पखालीऐ भाई जल महि बूडहि तेहि ॥ *(पन्ना ६३७)*

इस दिन हरेक सिक्ख पुरुष स्त्री को यह प्रण करना बनता है कि वह हर तरह के बंधनों से छुटकारा पाने के लिए गुरु-आशय के अनुसार प्रयत्नशील हो। रूहानी पक्ष से 'बंदीछोड़ दिवस' का भाव 'बंधनों से खलासी' का दिन है। हमें अज्ञानता, वहमों, भ्रमों, कर्म-कांडों, पाखंडों, हउमै, अहंकार और सामाजिक कुरीतियों के बंधनों को काट गुरबाणी के साथ जुड़ना चाहिए। गुरबाणी के ज्ञान का प्रकाश ही इन बंधनों को काटने का मार्ग दर्शा सकता है और फिर समाज में प्रचलित बुराइयां, कुरीतियां, कूड़, अपराध, ईर्ष्या, जोर-जब्र तथा भ्रष्टाचार जैसी लाहनतों के बंधन अपने आप ही कट जाएंगे। 

श्री गुरु रामदास जी का विस्मादी जीवन-वृत्तांत *(पृष्ठ ९ का शेष)*

नानक हरि गुण गाइ अलखु प्रभु लाखीऐ ॥ *(पन्ना ९१)*

आप ने सूही राग में 'लावों' की बाणी रचीं जो गुरसिक्खों के विवाह के समय पढ़ी एवं गायन की जाती है। वडहंस राग में आप ने 'घोड़ीआं' की धारणा पर दो पावन शबद रचे और छंत भी रचे। ये उस समय प्रचलित निचले स्तर के उस समय प्रचलित हो चुके छंदों का एक आदर्श बदल सिद्ध हुए। कुल मिलाकर आप ने अपनी पावन बाणी द्वारा तत्कालीन सामाजिक रीतियों में शुद्धि लाने में लासानी प्राप्तियां कीं।

श्री गुरु रामदास जी श्री अरजन देव जी को गुरगद्दी पर विराजमान करके २ आश्विन, सं. १६३८, तद्नुसार १ सितंबर, १५८१ को श्री गोइंदवाल साहिब में ज्योति जोति समा गए। 

आध्यात्मिक तीर्थ-स्थल गुरुद्वारा पंजा साहिब

*-स. सुरजीत सिंघ**

श्री गुरु नानक देव जी अपनी आध्यात्मिक यात्राओं की शृंखला में लाहौर से ४५० किलोमीटर और ननकाणा साहिब से ३५० किलोमीटर की दूरी पर नौशहिरा, होतीमरदान, खैराबाद, अटक पार कर रावलपिंडी से ४३ किलोमीटर दूर पेशावर रोड पर स्थित कस्बा हसन अबदाल (वर्तमान में ये स्थान पाकिस्तान में है) सन् १५२१ वैसाख सम्वत् १५७८ को पहुंच एक पर्वत, जो सवा किलोमीटर ऊंचा था, के समीप नीचे बैठकर गुरु नानक साहिब ध्यानमग्न हो गये। हसन अबदाल क्षेत्र में उन दिनों पानी की अत्यन्त कमी रहती थी। पहाड़ी के ऊपर पानी का एक मात्र झरना था जहां अभिमानी-क्रोधी तांत्रिक वली कंधारी रहता था, जो अपनी इच्छा अनुसार झरने से पानी पीने देने का अपना एकाधिकार मानता था।

गुरु जी के साथी सिक्ख भाई मरदाना जी जो गुरु जी द्वारा गुरबाणी-गायन के साथ रबाब बजाते थे, को प्यास लगी तो आस-पास कहीं पानी न होने के कारण उन्हों गुरु नानक पातशाह को पानी हेतु निवेदन किया। गुरदेव ने भाई मरदाना जी से कहा कि वे ऊपर पहाड़ी पर जाकर पानी के झरने से अपनी प्यास बुझा लें। भाई मरदाना जी गुरु नानक पातशाह की आज्ञा पाकर ऊपर पहाड़ी पर पहुंचे। वहां पर रह रहे तांत्रिक वली कंधारी से पानी पिलाने का आग्रह करने लगे, किन्तु वली कंधारी ने पानी पिलाने से स्पष्ट मना कर दिया और भाई जी को अपशब्द बोलते हुए प्यासे ही वापिस लौटा दिया। प्यास से व्याकुल एवं थके-हारे भाई मरदाना जी ने गुरु नानक साहिब के पास आकर गुरु जी को सारा वृत्तांत कह सुनाया। गुरु जी ने भाई मरदाना जी को कहा कि वे पुनः पहाड़ी पर जायें और वली कंधारी से पानी पिलाने हेतु विनम्रतापूर्वक निवेदन करें। अब भाई मरदाना जी दोबारा पहाड़ी पर पहुंच गुरदेव के कहे अनुसार वली कंधारी के आगे निवेदन करने लगे, "वली जी! मुझे बहुत प्यास लगी है, कृप्या झरने से पानी पी लेने दीजिए।" भाई मरदाना जी को पुनः अपने सम्मुख देख पानी पिलाना तो दूर रहा, अहंकारी वली कंधारी का क्रोध भड़क गया और लाल-पीला होकर गरजने लगा, "यदि तेरा गुरु इतना शक्तिशाली है तो पानी का झरना वहीं क्यों नहीं प्रकट कर लेता? नाहक तू मुझे परेशान कर रहा है। जा, पानी नहीं मिलेगा।"

जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की
जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ॥

(पन्ना ३०६)

भाई मरदाना जी पुनः प्यासे ही वापिस लौट आये और आकर सारा वृत्तांत गुरु जी को कह सुनाया। श्री गुरु नानक देव जी अन्तर्ध्यान हो गये। वली कंधारी का अहंकार तोड़ने के लिए गुरदेव ने अपनी दैवीय शक्ति से पानी के झरने का मुख पहाड़ के ऊपर से नीचे की ओर खींच लिया जिससे निर्मल पानी ऊपर सूखने लगा और नीचे बहने लग गया।

झरने से भाई मरदाना जी अपनी प्यास बुझाकर संतुष्ट हुए। झरने को पहाड़ी के ऊपर सूखता और नीचे की ओर बहता देखकर वली

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

**५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राज.)*

गुरमति के अनुसार मुक्ति और मुक्ति-मार्ग

-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल*

जब से भी मनुष्य का अस्तित्व है, 'मुक्ति' उसकी सर्वोच्च अभिलाषा और उद्देश्य रही है। मनुष्य अपने समस्त जीवन में भले ही सांसारिक उपलब्धियां प्राप्त कर ले; धन, नाम, यश, कीर्ति प्राप्त कर ले, सभी दुनियावी वस्तुएं हासिल कर ले, जो वह चाहता है या जिसकी उसे लालसा है सब उसे मिल जाये, पर फिर भी वह संपूर्ण तृप्ति प्राप्त नहीं कर पाता। कहीं न कहीं, कोई न कोई कमी उसे महसूस होती ही रहती है। वह इस संसार से सब कुछ पाकर भी संसार से मुक्ति की चाह नहीं त्याग पाता।

आम तौर पर समस्त सांसारिक दुखों, कष्टों और क्लेशों से सदा के लिए छूट जाने को ही मुक्ति कहा गया है। 'मुक्ति' भारतीय दर्शन-परंपरा का एक आधारभूत तत्व रही है। सारे भारतीय धर्मों, दर्शनों, मतों और संप्रदायों में इस विषय पर बड़ी गहरी चर्चा होती रही है, परन्तु लगभग हर विचार-शृंखला में इसके भिन्न-भिन्न स्वरूप को स्वीकार किया गया है।

आत्मा को परमात्मा का अंश माना गया है और आत्मा के चौरासी लाख योनियों के आवागमन-चक्र से छूट कर अपने मूल 'प्रभु' में लीन हो जाने को ही मुक्ति कहा गया है। आचार्य चार्वाक ने मनुष्य की मृत्यु को ही उसकी मुक्ति माना है, क्योंकि उनके अनुसार मृत्यु के बाद मनुष्य का जीवन है ही नहीं। बौद्ध-दर्शन में मुक्ति को 'निर्वाण' कहा गया है। निर्वाण का अर्थ है--बुझ जाना। जिस प्रकार एक जलता हुआ दीपक तेल खत्म होने पर बुझ जाता है उसी प्रकार महात्मा बुद्ध के अनुसार जब मनुष्य में से पाप और वासना रूपी तेल समाप्त हो जाता है तो पूर्ण दुख-निवृत्ति की अवस्था में पहुंच कर मनुष्य बुझ जाता है अर्थात् निर्वाण प्राप्त कर लेता है। जैन मत में मुक्ति को 'कैवल्य' कहा गया है। श्री महावीर के अनुसार मनुष्य की आत्मा जब संसार के 'कारण-कार्य-भाव' से मुक्त होकर पूर्ण श्रद्धा, पूर्ण ज्ञान, असीम चेतना, परम स्वतंत्रता और स्थिर आनंद प्राप्त कर लेती है तो वह 'कैवल्य' को प्राप्त कर लेता है। न्याय-दर्शन के अनुसार मनुष्य की वह अवस्था जिसमें सुख और दुख का पूर्ण अभाव हो जाता है, मुक्ति की अवस्था कहलाती है। दूसरी ओर सांख्य-दर्शन के अनुसार 'पुरुष' का प्रकृति से संयोग दुख का मूल कारण है। जब पुरुष प्रकृति के बंधन से मुक्त होकर अपनी नित्यता, सत्यता और अपरिवर्तनशीलता को महसूस कर लेता है तो वह मुक्त हो जाता है। मीमांसा-दर्शन के अनुसार दृश्यमान जगत् का मोह टूट जाना ही मुक्ति है। ईसवी सन् की दूसरी-तीसरी शताब्दी में उद्भूत 'भागवत-धर्म' के अनुसार स्मर्ण, कीर्तन, वंदन, अर्चन आदि नौ प्रकार की नवधा-भक्ति के माध्यम से उसके किसी भी अवतार-स्वरूप की मूर्ति की पूजा करके, उसे प्रसन्न कर उसके ऐश्वर्य में भाग प्राप्त करना ही मुक्ति माना गया है। मध्यकालीन सगुण भक्तों ने इस विचार को

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना)-१४११०१

स्वीकार किया है। हठ योग मत में समाधि के माध्यम से कुंडलिनी को जागृत कर ब्रह्म-लोक, जो शुषुम्ना-इड़ा-पिंगला के सिरे पर रीढ़ की हड्डी के ऊपर स्थित है, ब्रह्म का निवस-स्थान है, में पहुंचाने को मुक्ति प्राप्त करना कहा गया है।

गुरमति में भी 'मुक्ति' संबंधी व्यापक चर्चा हुई है। गुरु साहिबान ने इस संबंध में स्पष्ट विचार प्रस्तुत किये हैं। हालांकि गुरबाणी में मुक्ति की अवधारणा के विभिन्न पक्षों से संबंधित सूक्ष्म अभिव्यक्तियां प्राप्त होती हैं, परंतु सार रूप में यह कहा जा सकता है कि गुरमति द्वारा स्थापित 'मुक्ति' की अवधारणा उपनिषदों की विचारधारा से मेल खाती है। गुरमति के अनुसार मुक्ति का अर्थ है--आत्मा का अपने मूल 'अकाल-पुरख' से मिलन, जो मनुष्य के द्वारा अपनी 'हउमै' (अहं) के पूर्ण त्याग के पश्चात् अकाल पुरख के वास्तविक स्वरूप की पहचान के द्वारा ही संभव है। गुरबाणी में स्पष्ट संकेत है कि जब मनुष्य चौरासी लाख योनियों के चक्र से छूटकर, जन्म-मरण के झंझट से परे होकर, अकाल पुरख से एकाकार हो जायेगा तो उसे मुक्ति या मोक्ष प्राप्त होगा, यथा :

--लख चउरासीह जोनि सबाई ॥
माणस कउ प्रभि दीई वडिआई ॥
इसु पउड़ी ते जो नरु चूकै सो आइ जाइ दुखु *पाइदा ॥* *(पन्ना १०७५)*

--भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥
सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥
जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥ (पन्ना १२)

--से मुकतु से मुकतु भए जिन्ह हरि धिआइआ
जीउ तिन टूटी जम की फासी ॥ (पन्ना ३४८)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बड़ी सुंदरता से मानव और अकाल पुरख के पारस्परिक संबंध को रेखांकित किया है :

जैसे एक आग ते कनूका कोट आग उठे
निआरे निआरे हुइ कै फेरि आग मै मिलाहिंगे ॥
जैसे एक धूर ते अनेक धूर पूरत है
धूरि के कनूका फेर धूरि ही समाहिंगे ॥
जैसे एक नद ते तरंग कोट उपजत है
पान के तरंग सबै पान ही कहाहिंगे ॥
तैसे बिस्व रूप ते अभूत भूत प्रगट हुइ
ताही ते उपज सबै ताही मै समाहिंगे ॥१७॥८७॥
(अकाल उसतति)

इस प्रकार भिन्न-भिन्न दार्शनिक विचारधाराओं में 'मुक्ति' का स्वरूप भी भिन्न-भिन्न है। इसी तरह मुक्ति को प्राप्त करने का मार्ग भी अलग-अलग बताया गया है। वेदांत-उपनिषद् 'ज्ञान-प्राप्ति' की बात करते हैं। बौद्ध-दर्शन अपने संचित-कर्मों के फलस्वरूप मिलने वाले दुखों को अधिक से अधिक भोगने की विधि बयान करता है। जैन मत में 'सम्यक जीवन-पद्धति' पर बल दिया गया है, जबकि भागवत और सगुण धर्मी अपने आराध्य देव की मूर्ति की बहु-विधि प्रेम-भक्ति करने का उपदेश देते हैं। हठ योग में समाधि लगाकर साधना करने का विधान है। परन्तु जहां तक गुरमति का संबंध है यहां बखाना गया मुक्ति का रास्ता सर्वथा नवीन, सामाजिक और अत्यंत सरल-सहज है। मत-मतान्तरों में जहां मनुष्य को अपनी स्वाभाविक मानवीय प्रवृत्ति को छोड़कर इस संसार से स्वयं को अलग करके कुछ खास अनुष्ठान करने के लिये मजबूर होना पड़ता है, वहीं गुरमति के अनुसार मनुष्य अपने सारे सांसारिक कार्य-व्यवहार और जिम्मेदारियों को निभाता हुआ भी

मुक्ति प्राप्त कर सकता है :
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥ (पन्ना ५२२)

इसके अतिरिक्त गुरबाणी में स्पष्ट फरमान है कि मनुष्य अपनी मर्जी या इच्छा से जबरदस्ती 'मुक्ति' हासिल नहीं कर सकता। इस सृष्टि में सब कुछ अकाल पुरख के हुक्म के अनुसार ही हो रहा है। जन्म-मरण और आवागमन का चक्र भी अकाल पुरख की ही रजा है। जपु जी साहिब में एक और स्थान पर पहली पातशाही का वाक है :
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥ (पन्ना १)

अत: स्पष्ट है कि गुरबाणी के अनुसार मनुष्य को मुक्ति अपनी मर्जी या परिश्रम से नहीं बल्कि अकाल पुरख के हुक्म और रजा से प्राप्त होनी है। इसलिए गुरबाणी के अनुसार अकाल पुरख की 'नदरि' अर्थात् कृपा प्राप्त होना ही मुक्ति हासिल करने का सहज मार्ग है। श्री गुरु नानक देव जी का स्पष्ट फरमान है :
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥ (पन्ना २)

श्री गुरु अरजन देव जी ने भी मुक्ति की प्राप्ति के संबंध में साफ-साफ कहा है कि अकाल पुरख तप या साधना से नहीं मिलता, बल्कि जब मनुष्य पर उसकी दया होती है तभी उससे मिलन होता है :
घाल न मिलिओ सेव न मिलिओ मिलिओ आइ अचिंता ॥
जा कउ दइआ करी मेरै ठाकुरि तिनि गुरहि कमानो मंता ॥ (पन्ना ६७२)

यही नहीं गुरबाणी तो अकाल पुरख के 'हुक्म' की यहां तक घोषणा करती है कि मनुष्य वाहिगुरु की भक्ति तभी कर सकता है अगर इस कार्य में अकाल पुरख की अपनी रजा शामिल हो :
--जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥
--जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ (पन्ना ११)

इस प्रकार स्पष्ट है कि गुरबाणी के अनुसार मुक्ति एवं मुक्ति का मार्ग तभी प्राप्त हो सकता है जब अकाल पुरख की 'नदरि' और 'रजा' हो। दरअसल गुरु साहिबान ने मनुष्य को मुक्ति-प्राप्ति के लिए की जाने वाली विशेष तपस्याओं, साधनाओं, यज्ञादि अनुष्ठानों से पूरी तरह निजात दिला दी। उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि सिक्ख को इस संदर्भ में किसी भ्रम, भ्रांति या भय में फंसने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि वह अकाल पुरख जिसके 'हुक्म' के अनुसार सारी सृष्टि बनी है, सृष्टि का सारा कर्य-व्यवहार चल रहा है। वह अकाल पुरख जब चाहेगा मनुष्य को 'नदरि' का दान बख्श कर अपनी ओर लगा लेगा।

इस प्रकार गुरमति मनुष्य के सर्वोच्च उद्देश्य एवं लक्ष्य के परिप्रेक्ष्य में एक सहज-स्वाभाविक जिंदगी जीने की राह दिखाता है और अकाल पुरख के 'हुक्म' और 'रजा' में रह कर उसकी 'नदरि' की प्रतीक्षा करने का उपदेश देता है। मुक्ति की प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधक है मनुष्य की 'हउमै' (अहम्), पर जब मनुष्य अकाल पुरख के 'हुक्म' और रजा को पहचान लेता है तब वह 'हउमै' से रहित हो जाता है। जपु जी साहिब में फरमान है :
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥ (पन्ना १)

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

भाई संतोख सिंह की प्रतिभा

*-डॉ. महीप सिंह**

भाई संतोख सिंह का व्यक्तित्व उस प्रकार की प्रतिभा का स्वामी था जिसको संस्कृत के काव्य शास्त्री महाकाव्यात्मिक प्रतिभा कहते हैं। उस प्रकार की प्रतिभा का स्वामी बहुश्रुत, बहुदर्शी तथा बहुज्ञानी होता है। उसको काव्य-शास्त्र की रचनाओं का ज्ञान तो होता ही है, दर्शन, राजनीति, शस्त्र-विद्या, युद्ध-विद्या का भी भरपूर ज्ञान होता है। भाई संतोख सिंह के व्यक्तित्व में ये सभी बातें समाई हुई हैं। उनको प्राचीन भारतीय ग्रंथों—रामायण, महाभारत एवं पुराणों की गहन जानकारी थी, छः वैद्धिक दर्शनों, विशेषतः वेदांत का, गहन अध्ययन था और सिक्ख परंपरा तथा उसमें रचे गए ग्रंथों की उन्होंने बहुत श्रद्धा के साथ समीक्षा की। भाई संतोख सिंह की ६ प्रमाणिक रचनाएं स्वीकार की जाती हैं :

१. नाम कोश
२. गुरू नानक प्रकाश
३. गरब गंजनी (जपु जी साहिब की टीका)
४. बालमीकी रामायण का अनुवाद
५. आतम पुराण (अनुवाद)
६. गुर प्रताप सूरज

'नाम कोश' संस्कृत ग्रंथ 'अमर कोश' का १५०० छंदों में किया गया अनुवाद है।

दूसरा अनुवादित ग्रंथ 'बालमीकी रामायण' है। बाल्मीकि जी द्वारा लिखे गए इस संस्कृत ग्रंथ को भाई संतोख सिंह ने ब्रज भाषा में पट्टबद्ध अनुवाद किया। इस ग्रंथ में ७ कांड तथा ६५१ सर्ग हैं। कवि ने कथा स्वरूप को 'बाल्मीकि रामायण' के अनुरूप ही रखा है, उसमें कोई वृद्धि-कटौती नहीं की, जैसे कि उन्होंने स्वयं लिखा है :

बालमीक मुनि की क्रित सरब जथारथ जानि।
ज्जय बीती बरनी तथा, बाध ना घाट पछान।

तीसरे अनुवादित ग्रंथ 'आतम पुराण टीका' में भाई संतोख सिंह ने वेदांत में अपनी रुचि का परिचय दिया है। उनके शब्दों में :

पुन विदांत को ग्रंथ महान
उपनिशद कै जहि बखान
आतम कै पुराण जिस नाम
सकल बनायो तो अभिराम।

इन अनुवादित ग्रंथों के साथ ही उनके जपु जी साहिब की 'गरब गंजनी टीका' की चर्चा की जा सकती है। उनसे कुछ समय पूर्व (सन् १७९५ में) आनंदघन नामक एक साधु ने 'जपु जी साहिब' की टीका की थी जिसमें बहुत अशुद्धियां थीं, अर्थ के अनर्थ किये गए थे। उसको देखकर कैथल के राजा भाई उदय सिंह ने भाई संतोख सिंह को 'जपु जी साहिब' की ऐसी टीका लिखने के लिए कहा जो आनंदघन के गरब (अहंकार) को तोड़ सके। इसलिए भाई साहिब द्वारा की गई टीका को 'गरब गंजनी टीका' कहा गया।

भाई संतोख सिंह की मौलिक प्रतिभा का परिचय उनके दो प्रबंध काव्यों से मिलता है। 'गुरू नानक प्रकाश' और 'गुर प्रताप सूरज' ऐसी

*H-108, शिवाजी पार्क, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-११००२६

काव्य कृतियां हैं जो किसी भी रचनाकार को महाकवि की गौरवमयी पदवी से विभूषित कर सकती हैं। 'गुरू नानक प्रकाश' का सृजन उन्होंने संवत् १८८० (सन् १८२३ ई) में किया। इस ग्रंथ के दो भाग हैं--'पूर्वार्द्ध' और 'उतरार्द्ध'। 'पूर्वार्द्ध' में ७३ एवं 'उतरार्द्ध' में ५७ अध्याय हैं। इस ग्रंथ में कुल ९७०० छंद हैं। इस रचना में श्री गुरु नानक देव जी के जन्म तथा जीवन की साखियों, उदासियों, उपदेशों तथा आदर्शों का विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। भाई संतोख सिंघ ने कहा है कि जो कथा भाई बाला (संधू) ने श्री गुरु अंगद देव जी को सुनाई थी वही कथा इस ग्रंथ में वर्णित है।

श्री गुरु नानक देव जी इस ग्रंथ के महान नायक हैं। वे सत्य गुण सम्पन्न, उदारचित्त, दिव्य पुरुष और लोकनायक थे। उनका अवतार संसार के दुखी प्राणियों का उद्धार करने के लिए हुआ है। वे बाहरी आडंबर तथा जात-पात का खंडन करके एकता का स्थापन करते हैं।

संस्कृत के आचार्य कहते हैं कि महाकव्य में नगर, उपवन, वन, समुद्र, नदी, प्रभात और ऋतुओं का वर्णन होना चाहिए। 'गुरु नानक प्रकाश' में आये ऐसे वर्णन बहुत सजीव, स्वाभाविक तथा मन मोह लेने वाले हैं, जिनमें भाई संतोख सिंघ की बिंबावली, कल्पना-शक्ति एवं सूक्षम निरीक्षण का पता चलता है। इस रचना में ऋतुओं का बहुत सजीव एवं चित्रात्मिक वर्णन मिलता है। 'गुर प्रताप सूरज' एक बड़े आकार की रचना है। भारतीय साहित्य में 'महाभारत' के अतिरिक्त अन्य कोई ग्रंथ इतना बड़ा नहीं। इसमें ५०,००० से अधिक छंद हैं। 'गुरू नानक प्रकाश' और 'गुर प्रताप सूरज' को मिलाकर जो ग्रंथ बनता है वह ब्रज भाषा या हिंदी साहित्य में इस दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण रचना है। 'महाभारत' के बारे में कहा जाता है कि वह पुराण, इतिहास, महाकाव्य या धर्म-ग्रंथ आदि में से कोई एक नहीं बल्कि सब कुछ मिलाकर एक महाग्रंथ है। यही बात 'गुर प्रताप सूरज' के बारे में भी कही जा सकती है। 'गुर प्रताप सूरज' ग्रंथ में २० अध्याय, ११५१ अंश तथा ५१,८२९ छंद हैं। संपूर्ण कथावस्तु सूर्य की गति के आधार पर १२ राशियों, ६ ऋतुओं, २ अयनों में विभाजित की गई है। रचना के नाम और उसके रचना-विधान में एक सुंदर रूप की कल्पना की गई है। भाई साहिब के अनुसार गुरु साहिबान के प्रताप तथा ज्ञान-रूपी सूर्य की किरणें अंधविश्वासों, भ्रमों, पाखंडों, अज्ञान, झूठ, असत्य, अन्याय तथा जुल्म के अंधेरे को चीर कर नया उजाला देने वाली हैं। 'गुर प्रताप सूरज' धार्मिक भावना से भरा एक कथा प्रधान रचित काव्य है। अपभ्रंश में जैन कवियों ने अनेक ऐसे काव्यों की रचना की थी जिनमें किसी महापुरुष के चरित्र को अंकित किया गया था और उसके द्वारा जैन मत के धार्मिक सिद्धांतों की व्याख्या की गई थी।

इसके अतिरिक्त अपभ्रंश, पुरानी राजस्थानी, अवधी तथा ब्रज भाषा में 'गस्सा', 'गनक', 'रूपक', 'प्रकाश' और 'बिलास' आदि नामों से भी अनेक चरित काव्य लिखे गए। 'पृथ्वी राज रासो', 'राम चरित मानस', 'चंडी चरित्र' और 'उकति बिलास' जैसी रचनायें इसी परंपरा की हैं।

'गुर प्रताप सूरज' भी इसी प्रकार की एक महान रचना है जिसमें गुरु साहिबान का जीवन-वृत्तांत बहुत विस्तार से दिया गया है।

'गुर प्रताप सूरज' पूर्णत: शास्त्र पद्धति पर लिखा गया महाकाव्य है। सर्गों या अध्यायों में विभाजित होना, आरंभ में मंगलाचरण का होना

महाकाव्य के लिए आवश्यक माना जाता है। 'गुर प्रताप सूरज' में प्रारंभिक ४४ छंदों में अकाल पुरख, दस गुरु साहिबान तथा प्राचीन अवतारों आदि को नमन किया गया है। भाई संतोख सिंघ ने गुरु-कथा को गंगा समान बताते हुए इस प्रकार का रूपक बांधा है :

श्री गुरू गाथा गंगा।
छंद उमंग उतंग तरंगा।
करामात बरनन जहि कहां।
इह गंभीरता धारति महां।
राम कुइर गिरवर ते निकसी।
सिक्खन बिखे जगत महि बिगसी।
जोग विराग भगति अरु गिआन।
बसह चार जल जंत महान।
जप तप संजम दान सनान।
धीरज दया छिमा निरमान।
सति संतोख आद गुन जेते।
जबु जल जंतु वास करि तेते।
दस गुर दसहुं घाट के पाइ।
पावन भए लोक समुदाइ।
जनम मरन ते आदि कलेशू।
इस बड़ पातक हते अशेशू।

भाई संतोख सिंघ ने गुरु साहिबान के प्रति अगाध श्रद्धा एवं भक्ति-भाव से प्रेरित होकर इस ग्रंथ की रचना की थी, इसलिए इसमें गुरु साहिबान को दिव्य रूप में चित्रित किया गया है। इसीलिए बहुत-सी ऐतिहासिक घटनाओं को पौराणिक रूप देकर उनमें चमत्कार लाने का भी प्रयत्न है।

हिंदी साहित्य के इतिहास ने संवत् १७०० से १९०० तक के काल को रीति काल कहा है। भाई संतोख सिंघ इस काल के अंतिम चरण के कवि थे। इस काल में हिंदी की अधिक कविता श्रृंगारी रुचियों को तृप्त करने वाली बनाकर रची जा रही थी। यह वो युग था जब देश की केंद्रीय सत्ता औरंगजेब की बादशाहत के तले अंतों का जोर-जुल्म कर रही थी। इस रीति काल के प्रथम चरण में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने वीर रस का काव्य लिखकर उसको अलग स्वरूप दिया था। रीति काल के अंतिम चरण में वही काम भाई संतोख सिंघ ने 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' की रचना करके किया।

यह बहुत खेद की बात है कि भाई संतोख सिंघ जैसी महान प्रतिभा का अभी तक सही मूल्यांकन नहीं हुआ। उनकी सारी कविता ब्रज भाषा में है। इसलिए वह हिंदी साहित्य का हिस्सा बनती है। परंतु वह केवल गुरमुखी लिपि में है और अभी तक उसको उपयुक्त रूप में संकलित करके देवनागरी लिपि में लाने का कोई अच्छा कदम नहीं उठाया गया। पंजाब में १७वीं, १८वीं तथा १९वीं सदी में लिखा गया बहुत-सा साहित्य ब्रज भाषा एवं गुरमुखी लिपि में ही है। इस साहित्य पर खोज ग्रंथ लिख कर पी. एच. डी. डिगरी बहुत लोगों ने ले ली है, परंतु उसको हिंदी जगत के सामने लाने की ओर कोई सार्थक प्रयत्न अभी तक नहीं हुआ। हिंदी की उन्नति एवं विकास के लिए काम करने वाली सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाओं को भी इस साहित्य को प्रकाशित करके हिंदी जगत के आगे लाने की आवश्यकता अभी तक नहीं प्रतीत हुई है।

भाई संतोख सिंघ की प्रतिभा भी इसी विडंबना की शिकार है। उनके पंजाबी होने और गुर-इतिहास लिखने के कारण हमारी उनसे जज़बाती सांझ तो अवश्य है परंतु उनकी प्रतिभा का सही मूल्यांकन तब होना है जब उनको अकादमिक क्षेत्रों में स्वीकार किया जाना है। वे पंजाबी भाषा के साहित्यकार नहीं थे, इसलिए पंजाबी साहित्य में उनकी कोई जगह

नहीं बन सकी। वे हिंदी के महाकवि हैं, परंतु हिंदी वालों को उनको जानने की न फुर्सत है न रुचि। इसलिए अभी तक हिंदी साहित्य के इतिहास में उनके नाम का भी कहीं जिक्र नहीं।

यह कैसी विडंबना है? सिक्ख धार्मिक वातावरण में से भी भाई संतोख सिंघ का महत्व धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। कुछ समय पूर्व गुरुद्वारों में 'गुर प्रताप सूरज' (अथवा सूरज प्रकाश) की नित्य-प्रतिदिन कथा होती थी। यह रीति भी अब कम होती जा रही है। कारण स्पष्ट है। भाई संतोख सिंघ पर पुराणों, देवी-देवताओं तथा ब्राह्मणी रहु-रीति का इतना प्रभाव था और इस रहु-रीति की इतनी अधिक परछाईं है कि आज की सिक्ख सोच के लिए उसको स्वीकार करना बहुत कड़वा घूंट है। परंतु इन कारणों करके भाई संतोख सिंघ की प्रतिभा दबी रहे, संसार की आंखों में छिपी रहे, उसकी सही पहचान न हो, किसी भी देश या कौम की सांस्कृतिक सोच के लिए इससे बुरी बात और कोई नहीं।



आध्यात्मिक तीर्थ-स्थल गुरुद्वारा पंजा साहिब

(पृष्ठ २५ का शेष)

कंधारी आगबबूला हो गया। पानी को नीचे जाने से रोकने और गुरदेव को हानि पहुंचाने की नीयत से अपनी समस्त शक्तियों का प्रयोग वली कंधारी ने कर लिया किन्तु सर्वथा असफल ही रहा। अंत में गुरु जी को जानी नुकसान पहुंचाने के लिए एक बहुत भारी पर्वतीय चट्टान नीचे बैठे गुरु नानक पातशाह की तरफ सवा किलोमीटर ऊंचे पहाड़ की चोटी से धकेल दी जो बिजली की तरह कड़कती हुई नीचे की तरफ लुड़कने लग गई। गुरु नानक पातशाह तो पापियों का उद्धार करने, अभिमानियों का अहंकार तोड़ सही मार्ग पर लाने हेतु ही अवतरित हुये थे :

कूड़ निखुटे नानका ओड़कि सचि रही ॥
(पन्ना ९५३)

पहाड़ के ऊपर से अपनी ओर आती भारी पर्वतीय चट्टान को ध्यान-मग्न गुरु नानक पातशाह ने अपने हाथ के पंजे से बीच में ही रोक दिया। अपनी समस्त शक्तियां असफल होते देख अभिमानी वली कंधारी हत्प्रभ हो गया और नीचे आकर गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा। अब उसकी आंखों से पश्चाताप के आंसू बह रहे थे। वह क्षमा-याचना कर रहा था। गुरु जी की दिव्य ज्योति से वली कंधारी में ज्ञान का प्रकाश हो गया, जैसे मानो उसके पाप धुलने प्रारंभ हो गये हों :

गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥
हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥
(पन्ना २९३)

यह ऐतिहासिक तीर्थ-स्थल "गुरुद्वारा पंजा साहिब" के नाम से प्रसिद्ध है। श्री गुरु नानक देव जी के हाथ के पंजे की पांचों उंगलियों के निशान आज भी इस झूलती हुई पर्वतीय चट्टान पर मौजूद हैं और साथ ही निर्मल ठंडे पानी का झरना भी यथावत प्रवाहित हो रहा है, जहां श्रद्धालु दर्शन कर श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए प्यास बुझाते चले आ रहे हैं। कहा जाता है कि ब्रिटिश शासन के समय अंग्रेजों ने वैज्ञानिक तथ्य जानने के लिए पास पर्वतीय चट्टान पर उकरे हुए श्री गुरु नानक देव जी के पंजे के निशान मिटाने की भरसक कोशिश की थी, किन्तु कोरी असफलता ही हाथ लगी। पंजे के निशाल चट्टान पर ज्यों के त्यों ही बने रहे और मीठे-ठण्डे पानी का झरना भी यथावत बहता चला आ रहा है।



धर्म और धन

*-ज्ञानी संत सिंघ मसकीन**

धर्म एक परम शक्ति है; एक सच्चाई, महान रोशनी और मस्ती आंतरिक प्रसन्नता है।

भौतिक शरीर भौतिक पदार्थों के सहारे खड़ा है और भौतिक पदार्थ धन के साथ ही मिलते हैं, इसलिए भौतिक पदार्थ, धन और धर्म मानव-जीवन के दो पैर हैं। इनके सहारे जीवन चलता-फिरता है। बाहरी दुनिया का सारा प्रसार धन के सहारे पर खड़ा है, अंदरूनी सारी प्रसन्नता धर्म के सहारे पर खड़ी है।

सदियों से हमारे देश का साधु धर्म कमाने पर जोर देता रहा है। आंतरिक प्रसन्नता के रहस्य इसने ढूंढ लिए थे। चाहे अंदर धर्म का महान प्रकाश था पर बाहर से शरीर मुरझाया हुआ था। शरीर की जरूरत पूरी करने के लिए इसको धनवानों के दरवाजों पर भटकना पड़ता था, पर आंतरिक प्रसन्नता हासिल करने के लिए धनवान साधु के आगे हाथ जोड़ खड़ा रहता था। यह लंगड़ी जिंदगी हमारा देश व्यतीत कर रहा था। एक पैर से पहाड़ों की बुलंदी को छूना कठिन है।

पश्चिमी देशों ने सारा जोर बाहरी दुनिया, को संवारने पर लगाया, धन से सम्पन्न हो गए, शरीर की तमाम जरूरतें पूरी हो गईं, लेकिन अंदर एक अभाव बना रहा। इसीलिए तो सबसे ज्यादा पागल, आत्महत्या और पेचीदा रोग पश्चिमी देशों में हैं। पश्चिम अब इस कमी को महसूस करने लग पड़ा है। बाहर की दुनिया को छल-धोखा कह कर हमारे देश के साधुओं ने संसार को लात मार दी। हमारा देश गरीबी की महान खाई में जा पड़ा। जीवन में संतुलन रखना काफी कठिन है। हम कातिल उसको मानते हैं जो किसी को छुरा मार कर मौत के घाट उतार दे। पर वास्तविक कातिल वह इतना बड़ा नहीं है। धन बाहरी जीवन है, इसलिए जो धन कमाने में बाधा डाले वह बाहरी जिन्दगी किसी की भी खत्म कर देता है और जो धर्म कमाने में बाधा बने वह अंदरूनी दुनिया खत्म करता है, इसलिए यह असली कातिल है। ज्यादातर यही दिखाई देता है कि कोई धन कमाने में और कोई धर्म कमाने में बाधा बना हुआ है, इसलिए कोई अंदर से और कोई बाहर से दुखी है। धर्म दायां तथा धन बायां पैर है। दोनों पैरों को शक्तिशाली बनाना है ताकि संसार की यात्रा सफलतापूर्वक की जा सके। सतिगुरु जी का महा-वाक यही जीवन हमारे सामने रखता है:

उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥
धिआइदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत ॥
(पन्ना ५२२)

काम और मोक्ष

जीवन को सफल बनाने के लिए धार्मिक चिंतकों ने चार पदार्थ माने हैं, जिनमें से दो पदार्थों का सम्बंध संसार से है और दो पदार्थ परमार्थ से सम्बंध रखते हैं। धन और काम संसारी पदार्थ हैं। धर्म और मोक्ष आध्यात्मिक वस्तुएं हैं। धन कमाना, धर्म कमाना नहीं है, पर धर्म कमाना भी धन कमाना नहीं है। काम जगत की उत्पत्ति में सहायक है, धन पालना

करता है। धन का आकर्षण है। अक्सर धनवान विलासी (भोग-विलासी) हो जाते हैं। धन और काम का इकट्ठा जोड़ है। धर्म और मोक्ष भी इकट्ठे हैं। जैसे-जैसे धन बढ़ता है वैसे-वैसे काम बढ़ेगा, जैसे-जैसे धर्म बढ़ेगा, तैसे-तैसे मोक्ष बढ़ेगा। धर्म व्यर्थ धन का बंधन तोड़ देता है। धन का लोभ जब कम होता है तब काम भी कम होता है। मनुष्य को मोक्ष की स्वतंत्रता की प्राप्ति हो जाती है।

बंधन तो शरीर को काम का ही है। काम का अति तीव्र वेग या आपूर्ति क्रोध को जन्म देती है। इस तरह शरीर जर्जर हो जाता है :

कामु क्रोधु काइआ कउ गालै ॥
जिउ कंचन सोहागा ढालै ॥ *(पन्ना ९३२)*

अति कामी अति क्रोधी हो जाता है। जब धर्म का तीव्र वेग काम को एक सीमा में कर देता है तब मनुष्य अंदरूनी सच्ची स्वतंत्रता का आनंद प्राप्त करता है। 

गुरमति के अनुसार मुक्ति और मुक्ति-मार्ग

(पृष्ठ २८ का शेष)

हउमै के त्याग की अवस्था को गुरबाणी में जीवित रहते हुए ही मुक्ति प्राप्त करना कहा गया है। श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है :

जीवन मुकतु सो आखीऐ जिसु विचहु हउमै जाइ ॥ *(पन्ना १००९-१०)*

दरअसल मुक्ति प्राप्त करने की राह में 'हउमै' का त्याग सबसे पहला पड़ाव है। इस कार्य में प्रवृत्त होने के लिये सबसे पहला कार्य अमृत-पान करना है। गुरसिक्ख को बख्शी गई अमृत की दात वह प्रथम प्रक्रिया है जो उसे इस ओर चलने के लिए प्रेरित करती है।

'नदरि' की प्रतीक्षा के दौरान मनुष्य को क्या करना है यह श्री गुरु अरजन देव जी स्पष्ट रूप से समझाते हैं। आप फरमाते हैं, *"उतमु करमु नामि विचारु"* अर्थात् उत्तम कर्म करते हुए अकाल पुरख के नाम का सिमरन और उसकी सिफत-सलाह करते रहना है।

गुरमति के अनुसार 'मुक्ति' की अवधारणा के विषय में एक तथ्य और भी विशेष ध्यान देने योग्य है। सभी नये-पुराने मत-मतांतरों में मुक्ति का अर्थ मात्र व्यक्तिगत मुक्ति है, परन्तु गुरमति मनुष्य की व्यक्तिगत मुक्ति के साथ-साथ समाजगत या समष्टिगत मुक्ति की भी राह दिखाता है। गुरमति के अनुसार मनुष्य की व्यक्तिगत मुक्ति उस समय तक कोई महत्व नहीं रखती जब तक समष्टिगत मुक्ति अपना स्वरूप धारण नहीं कर लेती। इस परिप्रेक्ष्य में गुरमति 'संगत' की अवधारणा को स्थापित करती है। सिक्ख जहां अपनी व्यक्तिगत उपलब्धियां प्राप्त करता है वहीं वह समाज में एक संपूर्ण मनुष्य के रूप में विचरण करके सारी खलकत को अपना आंतरिक प्रकाश प्रदान करते हुए उनका मार्ग भी प्रकाशित करता है। इस संदर्भ में श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है :

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥
(पन्ना ८)

अर्थात् हे नानक! जिन मनुष्यों ने अकाल पुरख का नाम-सिमरन किया है वे अपनी मेहनत सफल कर गये हैं, अकाल पुरख के दर पर वे उजले मुख वाले हैं और अन्य कई जीव उनकी संगत में रहकर माया के बंधनों से आजाद हो गये हैं। 

गुरसिक्खी बारीक है-- ६

*-डॉ सत्येन्द्र पाल सिंघ**

एक गुरसिक्ख प्रातः काल उठ कर अन्न ग्रहण करने के पूर्व श्री गुरु ग्रंथ साहिब का हुकम प्राप्त करे। सामान्यतः यह माना जाता है कि व्यक्ति अन्न ग्रहण करके अपनी दिनचर्या आरंभ करता है। अन्न ग्रहण करने से उसे ऊर्जा व स्फूर्ति प्राप्त होती है, जिसका उपयोग कर वह दिन भर अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करने में समर्थ होता है। सिक्ख धर्म इस दृष्टि से अभिनव है कि इसमें शारीरिक ऊर्जा से अधिक महत्व आध्यात्मिक ऊर्जा व प्रेरणा को दिया गया है। इससे जहां एक ओर सांसारिक सत्ता पर आत्मिक शक्ति की श्रेष्ठता सिद्ध होती है वहीं धर्म द्वारा भौतिकता पर अनुशीलन की बात भी सामने आती है। सिक्ख रहित मर्यादा में अन्न ग्रहण करने से पूर्व श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ करने की नहीं हुकम लेने की बात कही गयी है। हुकम लेने की परम्परा एक मर्यादा की तरह स्थापित हो गयी है। सभी गुरुद्वारों में जहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश होता है अनिवार्य रूप से हुकमनामा लिया जाता है। यही मर्यादा एक सिक्ख के लिये भी है कि वह प्रतिदिन श्री गुरु ग्रंथ साहिब से हुकम ले।

गुरु उपदेश देता है, परामर्श देता है, राह दिखाता है, किन्तु एक सिक्ख अपने गुरु के वचनों को आदेश के रूप में ग्रहण करता है, यही एक सिक्ख और अन्य में अंतर है। यह अंतर ही सिक्ख को अधिक उत्तरदायी, कर्मठ, प्रतिबद्ध और दृढ़ बनाता है। उपदेश और परामर्श की अवहेलना की जा सकती है, सुझाव को नकारा जा सकता है, किन्तु हुकम को नहीं। उपदेश या सुझाव को किसी सीमा तक माना या अस्वीकार किया जा सकता है, उसमें संशोधन की संभावना देखी जा सकती है, किन्तु हुकम का अर्थ है उसे बिना किसी संदेह और शंका के मानना और उसका पालन करना। इससे गुरु के प्रति समर्पण की भक्ति दृढ़ होती है और व्यक्तिगत आचरण गुरु के अनुकूल हो जाता है। गुरु को आचरण ही प्रिय है और अन्य कोई बात नहीं :

भेख न पयारो मोहि को वरन नहीं प्रिय काहि ।
रहत सु पयारी मोहि कउ सिदक महां प्रिय आहि ॥५०॥ (गुर प्रताप सूरज, रतु ५, अंसू ३८)

मनुष्य की वेश-भूषा कितनी आकर्षक है, वह कितनी कुलीन जाति और वंश का है, गुरु इससे प्रसन्न नहीं होता। इन सबका कोई महत्व नहीं है जिन्हें आज भी हम प्राथमिकता देते हैं और उन पर गर्व करते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी स्पष्ट कहते हैं कि मनुष्य का आचरण और सिद्धांत उन्हें अति प्रिय है। हुकम लेना और उसका पालन करना 'रहित' या आचरण की श्रेणी में आता है, किन्तु गुरु के उपदेशों को सिद्धांत रूप में मान लेना और प्रतिबद्ध हो जाना 'सिदक' अथवा सैद्धांतिक निष्ठा की श्रेणी में आता है, जो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को अति प्रिय है। आचरण से अधिक कठिन है प्रतिबद्धता और आचरण का अगला पड़ाव है प्रतिबद्धता।

***E-1716**, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७ मो: ९४१५९-६०५३३*

गुरसिक्ख वह है जिसमें आचरण और प्रतिबद्धता ये दोनों आयाम हैं, जिन्हें एक साथ प्राप्त कर लिया गया है। यहां सच्ची भक्ति है और एक सच्चे सिक्ख की परिभाषा है :

जिनी हुकमु पछाणिआ से मेले हउमै सबदि जलाइ ॥
सची भगति करहि दिनु राती सचि रहे लिव लाइ ॥
सदा सचु हरि वेखदे गुर कै सबदि सुभाइ ॥
(पन्ना १२५८)

प्रत्येक गुरसिक्ख के लिये आवश्यक है कि वह हुकम के महत्व को समझे। इतना ही पर्याप्त नहीं है कि यह ज्ञान हो कि हुकम प्रतिदिन लेना है या हुकम प्रतिदिन लिया अथवा सुना जा रहा है। ऐसे बहुत-से गुरसिक्ख हैं जिनके घर में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश नहीं है और वे स्वयं हुकम लेने के सौभाग्य से वंचित हैं। ऐसे भी गुरसिक्ख हैं जो गुरुद्वारे में हुकमनामा लिये जाने के समय हाजिर होते हैं और उसे दीवान के एक हिस्से की तरह लेते हैं। रहित और सिदक से कोसों दूर खड़े हैं बड़ी संख्या में लोग। इस दूरी के मध्य अहम खड़ा हुआ है जो हुकम को जानने-समझने नहीं देता। मनुष्य स्वयं अपना विधाता बना हुआ है और परमात्मा की शक्ति से अधिक अपनी शक्ति, अपनी युक्तियों और प्रयासों पर विश्वास कर रहा है। यही कारण है कि परमात्मा-गुरु से जुड़ने की इच्छा-शक्ति की उसमें कमी दिखती है और उसके मन में संशय बना रहता है। परमात्मा की शक्ति को जाने बिना संशय समाप्त होना सम्भव नहीं है। मनुष्य क्यों नहीं विश्वास करता कि सारी सृष्टि ही परमात्मा के अधीन है?

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥
(पन्ना १)

परमात्मा का हुकम कैसा है, इसे अपने चारों ओर और सम्पूर्ण सृष्टि में देखा जा सकता है। ऐसे-ऐसे कौतुक नजर आते हैं जो बस परमात्मा के ही वश में हैं और हर किसी मनुष्य की समार्थ्य से बाहर हैं। मनुष्य की अपनी शक्ति अथवा धरती पर रहने वाले सारे मनुष्य की कुल शक्ति भी परमात्मा की शक्ति के सामने तिल मात्र ही है। मनुष्य अपनी चिन्ताओं और लालसाओं में ही उलझा हुआ है और उसे परमात्मा की असीम सत्ता के दर्शन ही नहीं हो रहे हैं। परमात्मा को समर्पित हो जाये तो सारी चिंताएं स्वयं ही लुप्त हो जायें, क्योंकि :

चिंतत ही दीसै सभु कोइ ॥
चेतहि एकु तही सुखु होइ ॥ (पन्ना ९३२)

प्रतिदिन उठकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब का हुकम लेना, अपने अंदर के अहम को मारने का एक मार्ग है। हुकम लेने से मन में दासत्व का भाव उत्पन्न होता है और नित्यप्रति ऐसा करने से दास-भाव दृढ़ होता जाता है, जिससे मन में विनम्रता आती है। विनम्रता ही परमात्मा को पाने का एक मात्र रास्ता है :

दासनि दासु होवै ता हरि पाए विचहु आपु गवाई ॥
भगता का कारजु हरि अनंदु है अनदिनु हरि गुण गाई ॥
सबदि रते सदा इक रंगी हरि सिउ रहे समाई ॥
हरि जीउ साची नदरि तुमारी ॥
आपणिआ दासा नो क्रिपा करि पिआरे राखहु पैज हमारी ॥रहाउ॥ (पन्ना ६००)

परमात्मा की कृपा भी उन्हीं पर होती है जिनके मन में विनम्रता बस गयी है और जिनके अहम् का नाश हो गया है। गुरसिक्ख के जीवन की सार्थकता इसी में है कि वह श्री गुरु ग्रंथ साहिब से जुड़े, शबद को आत्मसात करे और शबद-गुरु के मार्ग से परमात्मा से प्रेम-सम्बंध स्थापित करे। इसी में महाआनंद की प्राप्ति है। यही एक मात्र माध्यम है जिससे अंतर का अहम् समाप्त होता है और मन में दासत्व का भाव जन्म लेता है :

गुर पूछहु तुम्ह करहु बीचारु ॥
तां प्रभ साचे लगै पिआरु ॥
आपु छोडि होहि दासत भाइ ॥
तउ जगजीवनु वसै मनि आइ ॥ (पन्ना ११७३)

हुकम वही ग्रहण कर सकता है जिसके मन में विनम्रता है। मन में विनम्रता आते ही दास को अपने स्वामी परमेश्वर के दर्शन होने लगते हैं :

निवि निवि पाइ लगउ गुर अपुने आतम रामु निहारिआ ॥
करत बीचारु हिरदै हरि रविआ हिरदै देखि बीचारिआ ॥१॥
बोलहु रामु करे निसतारा ॥
गुर परसादि रतनु हरि लाभै मिटै अगिआनु होइ उजीआरा ॥१॥रहाउ॥ (पन्ना ३५३)

गुरु का हुकम न मानने वाले की दशा लाचार ही होती है और उसे कहीं भी महत्व नहीं मिलता। उसे न तो परमात्मा स्वीकार करता है, न उसे समाज ही सम्मान देता है :

पूरे गुर का हुकमु न मंनै ओहु मनमुखु अगिआनु मुठा बिखु माइआ ॥
ओसु अंदरि कूड़ु कूड़ो करि बुझै अणहोदे झगड़े दयि ओस दै गलि पाइआ ॥
ओहु गल फरोसी करे बहुतेरी ओस दा बोलिआ किसै न भाइआ ॥
ओहु घरि घरि हंढै जिउ रंन दोहागणि ओसु नालि मुहु जोड़े ओसु भी लछणु लाइआ ॥
(पन्ना ३०३)

ऐसे मनुष्य से तो दूर ही रहना चाहिये जो गुरु के हुकम की अवहेलना करता है। ऐसी संगत से स्वयं में भी वैसे ही विकार उत्पन्न होने लगते हैं। गुरु का हुकम मानने में ही सुख है :

गुर का कहिआ जे करे सुखी हू सुखु सारु ॥
गुर की करणी भउ कटीऐ नानक पावहि पारु ॥
(पन्ना १२४८)

गुरु का हुकम शाश्वत है और प्रत्येक परिस्थिति और प्रत्येक काल में सार्थक, प्रासंगिक है। इसकी प्रासंगिकता आने वाले युगों तक बनी रहने वाली है। संसार और सभ्यता जितनी भी प्रगति कर ले, परिस्थितियां कितनी भी बदल जायें, शबद-गुरु की महिमा वैसी ही रहने वाली है :

सचु पुराणा ना थीऐ नामु न मैला होइ ॥
गुर कै भाणै जे चलै बहुड़ि न आवणु होइ ॥
नानक नामि विसारिऐ आवण जाणा दोइ ॥
(पन्ना १२४८)

प्रगतिशीलता और आधुनिकता के नाम पर रहित मर्यादा की उपेक्षा नहीं की जा सकती और परंपराओं से हटा नहीं जा सकता है, क्योंकि वे उस आदि सच पर आधारित हैं जिसकी स्थापना गुरु साहिबान ने की थी।

एक सिक्ख यदि अपनी दिनचर्या श्री गुरु ग्रंथ साहिब से हुकम लेकर आरंभ करता है तो लिया गया हुकम सारा दिन उसकी चेतना को प्रकाशित करता रहेगा और उसे एक गुरसिक्ख होने के दायित्व को पूरा करने के लिये प्रेरित करता रहेगा।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब अमूल्य विचारों का अथाह सागर हैं। उनमें जितनी बार डुबकी

लगाएंगे कोई न कोई बेशकीमती मोती हाथ लग ही जाएगा। उसकी चमक एक जैसी ही होगी। यह चमक है वह आनंद जो कहीं अन्यत्र नहीं मिलता।

एक गुरसिक्ख, यदि उसके घर में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश नही है तो निकट के गुरुद्वारे में जाकर स्वयं हुकम ले सकता है या संगत में लिया गया हुकमनामा ग्रहण कर सकता है। प्रत्येक गुरसिक्ख को हुकम लेकर अपनी दिनचर्या आरंभ करने की दिशा में गंभीरता से सोचना चाहिये। इससे सिक्ख पंथ की शान और अधिक बढ़ेगी, जीवन अनुशासित होगा और दिन के उत्तम पलों में आध्यात्मिक मनन से स्वयं को विकारों से दूर करने में सहायता मिलेगी। गुरु के वचन तो अमृत की तरह हैं :

अंम्रिता प्रिअ बचन तुहारे ॥
अति सुंदर मनमोहन पिआरे सभहू मधि निरारे ॥१॥रहाउ॥
राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे ॥
ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा मोहि ठाकुर ही दरसारे ॥१॥
दीनु दुआरै आइओ ठाकुर सरनि परिओ संत हारे ॥
कहु नानक प्रभ मिले मनोहर मनु सीतल बिगसारे ॥२॥३॥ *(पन्ना ५३४)*

जब हुकम लेने के लिये श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण में जायें तो मन में वैसा ही मनोहर, प्रेम-रस परिपूर्ण भाव होना चाहिये जैसा ऊपर व्यक्त किया गया है। मन दीन-हीन हो किन्तु चाव से भरा हो, परमात्मा की सर्वोच्चता, सर्वश्रेष्ठता और सुंदरता से भरा हो। ऐसी अवस्था होते शबद-गुरु से जुड़ते ही मन शीतल हो जाता है। प्रतिदिन हुकम ऐसे लें जैसे प्रेम-रस से भीगी भक्ति का पर्व हो।



कविता

प्रकृति की बेटी : नारी

*-बीबा जसप्रीत कौर**

नारी है प्रकृति की बेटी!
पुरुष प्रधान समाज में
अंगारों भरी भूमि पर
नारी ने रखा कदम
कंधों पर संभाले गुरुत्तर भार
त्याग, शांति और ममता की देवी।
नारी है प्राकृति की बेटी!
उसका एक अश्रु है मोती
परन्तु लाता है तूफान।
क्रोध में उसके है हीरे जैसी चमक
नहीं डरती वो संघर्षों से
उस पर इंतहा हो जाए जुल्म की
तो हिला सकती है पर्वत
है करुणा की बेटी।
नारी है प्राकृति की बेटी!
उसकी कोख से जन्मे महामानव
है उसका अपमान उसको अबला कहना
प्रेमपूर्ण अनुबंध प्रकृति और परमात्मा का
परिपूर्ण उत्तम गुणों से सौंदर्य भरी अभिमानी
मूरत सहनशीलता की और लज्जा की देवी।
नारी है प्रकृति की बेटी!



**८३-बसंत विहार, जवद्दी रोड, डुगरी, लुधियाना (पंजाब) मो: ०९३५६६३०५२२*

गुरबाणी राग परिचय-२३

सुक्रितु करणी सारु जपमाली--राग भैरउ

*-स. कुलदीप सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में राग भैरउ में बाणी क्रमांक २४ पर ४३ पन्नों (११२५-११६७) में अंकित है। मारू राग की विस्तृत बाणी के बाद राग तुखारी तथा राग केदारा के संक्षिप्त राग हैं। इनके बाद राग भैरउ से मध्यम विस्तार के चार महत्त्वपूर्ण राग क्रम से हैं--भैरउ, बसंत, सारंग और मलार। राग भैरउ के अन्तर्गत छंद, वार अथवा अन्य विस्तृत बाणी नहीं है, अधिकांश बाणी शबदों या असटपदियों के रूप में है, इसलिए विषय-प्रस्तुतीकरण में एकरूपता है।

राग भैरउ बड़ा प्राचीन और महत्वपूर्ण राग है। इसका उल्लेख स्वतंत्र राग के रूप में राग-माला के आरंभ में किया गया है :

प्रथम राग भैरउ वै करही ॥
पंच रागनी संगि उचरही ॥ (पन्ना १४२९-३०)

भैरउ राग इसी नाम के ठाठ का संपूर्ण राग है। इस राग के गायन का समय प्रात: काल है। इस राग को सन्धि प्रकाश भी कहते हैं। सन्धि प्रकाश राग सूर्योदय और सूर्यास्त दोनों समय गाए जाते हैं। इस राग की विशेषता धैवत और ऋषभ स्वरों पर निर्भर है। यह दोनों स्वर कोमल लगते हैं। वादी स्वर थैवत है और संवादी स्वर ऋषभ है :

भैरउ ही के ठाठ में रे धा कोमल होइ।
धर वादी संवाद कर भैरउ राग कह सोइ।

इस राग की सुंदरता अवरोही वर्ग की तान में मनोरम होती है।

राग भैरउ में गुरु नानक साहिब के आठ शबदों का वर्णन एक अष्टक के रूप में किया जा सकता है। प्रथम शबद में संक्षिप्त रूप में प्रभु के सामर्थ्य और रजा का कथन है :

तुझ ते बाहरि किछू न होइ ॥
तू करि करि देखहि जाणहि सोइ ॥ . . .
जो किछु करणा सु तेरै पासि ॥
किसु आगै कीचै अरदासि ॥
आखणु सुनणा तेरी बाणी ॥
तू आपे जाणहि सरब विडाणी ॥
करे कराए जाणै आपि ॥
नानक देखै थापि उथापि ॥ (पन्ना ११२५)

गुरु नानक साहिब के शबद क्रमांक २ एवं ६ में गुरु की महिमा का वर्णन है :

गुरु देवा गुरु अलख अभेवा त्रिभवण सोझी गुर की सेवा ॥ (पन्ना ११२५)

ऐसा मनुष्य मेरे मन को अच्छा लगता है जो अहंकार त्याग कर परमात्मा के प्रेम में रम कर गुरु की सेवा करता है :

सो जनु ऐसा मै मनि भावै ॥
आपु मारि अपरंपरि राता गुर की कार कमावै ॥ (पन्ना ११२६)

गुरु-महिमा के इन शबदों के बीच शबद क्रमांक ३ से ५ में वृद्धावस्था का चित्र अंकित करते हुए राम-नाम में लिव लगाने का उपदेश है :

नैनी द्रिसटि नही तनु हीना जरि जीतिआ सिरि कालो ॥ (पन्ना ११२५)
भूंडी चाल चरण कर खिसरे तुचा देह कुमलानी ॥ (पन्ना ११२६)
डगरी चाल नेत्र फुनि अंधुले सबद सुरति नही भाई ॥ (पन्ना ११२६)

**सी-१२७, गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद-२११०१६ (उ. प्र.)*

श्री गुरु नानक देव जी के अंतिम दो शबदों में प्रभु-भक्ति का उपदेश है। मुक्ति गुरु के शबद के द्वारा संभव है :

बिनु गुर सबद मुकति नही कब ही अंधुले धंधु पसारा ॥ (पन्ना ११२७)

बिनु गुर सबद मुकति कहा प्राणी राम नाम बिनु उरझि मरै ॥ (पन्ना ११२७)

राग भैरउ में श्री गुरु अमरदास जी के २१ शबद हैं। इन शबदों में क्रमांक ६ से ८ तक में प्रभु-नाम की महिमा है, जैसे *"राम नामु जगत निसतारा", "नामे उधरे सभि जितने लोअ"* तथा *"नानक नामु रखहु उर धारि ॥"* क्रमांक ९ और १० में कलयुग में प्रभु का नाम ही उद्धार का एक मात्र उपाय है। *"कलजुग महि राम नामु उर धारु ॥" (शबद ९), "कलजुग महि राम नामु है सारु ॥ गुरमुखि साचा लगै पिआरु ॥"* (शबद १०, पन्ना ११२९) शबद क्रमांक १६ में भी प्रभु-नाम की महत्ता दी गई है।

कलि महि राम नामि वडिआई ॥
जुगि जुगि गुरमुखि एको जाता विणु नावै मुकति न पाई ॥ (पन्ना ११३१)

प्रभु-नाम-महिमा के साथ श्री गुरु अमरदास जी ने प्रभु के एकंकार पक्ष का प्रतिपादन किया है। एक प्रभु के अतिरिक्त अन्य देव की कल्पना दुविधा या द्वैत का परिचायक है। दुविधा रोग से मनमुख ग्रस्त हैं। श्री गुरु अमरदास जी ने क्रमांक ११ से १५ तथा क्रमांक १९ के शबदों में इस भाव को दोहराया है :

दुबिधा मनमुख रोगि विआपे त्रिसना जलहि अधिकाई ॥ . . .
नानक निहचलु साचा एको ना ओहु मरै न जाइआ ॥ (शबद ११)
मनमुखि दुबिधा सदा है रोगी रोगी सगल संसारा ॥ (शबद १२)
ध्रिगु ध्रिगु मनमुखि जनमु गवाइआ ॥
पूरे गुर की सेव न कीनी हरि का नामु न भाइआ ॥ (शबद १३) (पन्ना ११३०)
मनमुखि ध्रिगु जीवणु सैसारि ॥
राम नामु सुपनै नही चेतिआ हरि सिउ कदे न लागै पिआरु ॥ (शबद १९, पन्ना ११३२)

श्री गुरु अमरदास जी का सतिगुर की शरण में रहने का शबद बहुत मार्मिक है। इस शबद के तृतीय चरण में जीवन-मुक्ति का सूत्र एक पंक्ति में दिया गया है। साधक को पहले मरण कबूल करना पड़ता है। अहंकार त्याग की यह अवस्था गुरु के शबद से प्राप्त होती है। इसके बाद आत्मिक जीवन का प्रस्फुटन होता है जो जीवित रहते हुए साधक को मुक्ति की अवस्था तक पहुंचा देता है। सतिगुर की शरण से हरि-नाम मीठा लगता है। बिना गुरु के शबद के व्यक्ति विकार से ग्रस्त होकर दर-दर भटकता फिरता है :

मेरे मन सदा रहहु सतिगुर की सरणा ॥
हिरदै हरि नामु मीठा सद लागा गुर सबदे भवजलु तरणा ॥
भेख करै बहुतु चितु डोलै अंतरि कामु क्रोधु अहंकारु ॥
अंतरि तिसा भूख अति बहुती भउकत फिरै दर बारु ॥
गुर कै सबदि मरहि फिरि जीवहि तिन कउ मुकति दुआरि ॥
अंतरि सांति सदा सुखु होवै हरि राखिआ उर धारि ॥ (पन्ना ११३२)

नाम-महिमा, द्वैत-भावना, निरसन तथा गुरु की शरण का आधार मन के उस स्वरूप की पहचान है जो ज्योति स्वरूप है। वही मुनि है जो मन की दुविधा को मार कर ब्रह्म स्वरूप का विचार करता है। मन के उच्च स्वरूप की पहचान से नौ निधियां प्राप्त होती हैं। प्रभु ने

इस संसार की रचना को मोह का आधार दिया है। मन मोह-ममता के भाव से भ्रम में पड़ जाता है। दृश्यमान जगत जड़ और चेतन सभी मन की भावना के प्रतिबिंब हैं। मन के उदात्त स्वरूप के चिंतन से हम सृष्टि के उद्‌गम को समझते हैं तथा उसे प्रभु के हुक्म से सृजित मान कर प्रभु से एक-रसता अनुभव करते हैं। मन की यह उदात्त अवस्था प्रभु की बख्शिश और गुरु की कृपा से मिलती है। मन के जागरण से आत्मा-परमात्मा के भेद का भ्रम दूर होता है तथा अनश्वर प्रभु और नश्वर संसार में एकता की दुविधा दूर होती है। मन का वास्तविक स्वभाव वैराग्यमय है, क्योंकि सभी के हृदय में अतीत प्रेममय प्रभु विराजमान है। माया रहित (निर+अंजन) आदि पुरख निर्गुण प्रभु के स्वरूप का यह वास्तविक ज्ञान है :

सो मुनि जि मन की दुबिधा मारे ॥
दुबिधा मारि ब्रहमु बीचारे ॥१॥
इसु मन कउ कोई खोजहु भाई ॥
मनु खोजत नामु नउ निधि पाई ॥१॥रहाउ॥
मूलु मोहु करि करतै जगतु उपाइआ ॥
ममता लाइ भरमि भुोलाइआ ॥२॥
इसु मन ते सभ पिंड पराणा ॥
मन कै वीचारि हुकमु बुझि समाणा ॥३॥
करमु होवै गुरु किरपा करै ॥
इहु मनु जागै इसु मन की दुबिधा मरै ॥४॥
मन का सुभाउ सदा बैरागी ॥
सभ महि वसै अतीतु अनरागी ॥५॥
कहत नानकु जो जाणै भेउ ॥
आदि पुरखु निरंजन देउ ॥६॥ (पन्ना ११२८-२९)

राग भैरउ में श्री गुरु रामदास जी के ७ शबद हैं। इन सभी शबदों में हरि-नाम-जपु का संदेश है। प्रत्येक शबद में प्रभु के विशेष नाम का प्रयोग है जिनका क्रम इस प्रकार है-- नराइणु, नरहरी, बनवाली, सुखदाता, मधुसूदनु, मुरारी, जगजीवनु। हरि-जप का अभिप्राय क्या है, यह शबद क्रमांक तीन में स्पष्ट किया गया है। जब व्यक्ति का मन हरि में लीन होता है तो हाथ (कर) का मणका छूट जाता है और मन का मणका फिरने लगता है, मनुष्य की श्वास-प्रश्वास ही जाप की माला बन जाती है। तब मनुष्य शुभ कर्मों में लीन हो जाता है। जप माला का सार नाम रटना नहीं शुभ कर्म करना है। इस प्रकार परमार्थमय जीवन से माया का बंधन छूट जाता है। प्रभु की कृपा से सतसंग प्राप्त होता है। जो साधक सतिगुरु की सच्ची सेवा करते हैं उनके शुभ कर्मों के रत्न प्रभु की टकसाल में परखे जाते हैं। इस शरीर रूप नगर में उन्हें हरि का निवास अनुभव होता है। गुरु के मार्ग पर चलकर वे अगम, अगोचर प्रभु का दर्शन करते हैं। हरि सभी का पालन करता है। हम उसके बालक हैं। हे प्रभु! अपनी उदार कृपा से हमारा उद्धार करो:

सुक्रितु करणी सारु जपमाली ॥
हिरदै फेरि चलै तुधु नाली ॥१॥
हरि हरि नामु जपहु बनवाली ॥
करि किरपा मेलहु सतसंगति तूटि गई माइआ जम जाली ॥१॥रहाउ॥
गुरमुखि सेवा घाल जिनि घाली ॥
तिसु घड़ीऐ सबदु सची टकसाली ॥२॥
हरि अगम अगोचरु गुरि अगम दिखाली ॥
विचि काइआ नगर लधा हरि भाली ॥३॥
हम बारिक हरि पिता प्रतिपाली ॥
जन नानक तारहु नदरि निहाली ॥
(पन्ना ११३४)

राग भैरउ में श्री गुरु अमरदास जी के शबदों का आरंभ जाति-प्रथा के खंडन से होता है। जन्म के आधार पर गर्व करने वाले मूर्ख और गवार हैं। श्री गुरु अरजन देव जी के शबदों का आरंभ तिथि के शुभ या अशुभ होने

के विचार का खंडन है। सभी तिथियां पवित्र हैं। प्रभु जन्म-मरण से रहित है। वह सभी में समाया हुआ है। वह मुख जल जावे जो प्रभु का जन्म माता के गर्भ से मानता है। किसी विशेष तिथि को महत्व देना तथा अन्य तिथियों का निरादर करना भ्रमपूर्ण धारणा है।

राग भैरउ में श्री गुरु अरजन देव जी के ५७ शबद हैं, जिनका मुख्य विषय एक प्रभु का आराधन, नाम-महिमा एवं सतिगुरु का यश-गायन है :

राखा एकु हमारा सुआमी ॥ *(शबद २)*
एकु गुसाई अलहु मेरा ॥ *(शबद ३)*
गुर जैसा नाही को देव ॥ *(शबद २४)*
तीरथु हमरा हरि को नामु ॥ *(शबद २५)*
ऐसो हीरा निरमल नाम ॥ *(शबद २६)*
नामु रतनु मेरै भंडार ॥ *(शबद ३०)*
गुर मिलि तिआगिओ दूजा भाउ ॥ *(शबद ४२)*
गुर सुप्रसंन होए भउ गए ॥ *(शबद ४६)*

राग भैरउ का एक शबद है *"तू मेरा पिता तू है मेरा माता ॥ तू मेरे जीअ प्रान सुखदाता ॥"* (शबद ३१) प्रभु से हमारा सम्बंध पिता और माता दोनों रूपों में है। पिता और पुत्र के इस सम्बंध के भावनात्मक रहस्य की व्याख्या शबद क्रमांक २२ में की गई है। हमारा पिता सदैव जीने वाला है। हम सब उसकी संतान हैं। हमारे भाइयों के जीवन निरंतर प्रवाहमान होने से सनातन हैं। हमारे मित्र अबिनाशी हैं। हमारे कुटुम्ब का निवास हमारे अन्तरंग में है। पूरा गुरु हमारा मिलन पिता से करा देता है, जिससे हमारा सुखी होना सबके लिए सुखकर होता है। आत्मिक आनंद से पूर्ण हमारा निवास *"सूख महल जा के ऊच दुआरे"* में हो जाता है। नाम-धन से पूर्ण हमारा भंडार अक्षय होता है। हमारे पिता हमारे अंदर ही प्रकट हो जाते हैं। पिता पुत्र को अपने आलिंगन में (प्रेम से भुजाओं में) समेट लेता है। जब पिता पुत्र पर पूरी तरह द्रवित होकर विश्वास करता है तब पिता और पुत्र एक रंग में डूब जाते हैं :

बापु हमारा सद चरंजीवी ॥
भाई हमारे सद ही जीवी ॥
मीत हमारे सदा अबिनासी ॥
कुटंबु हमारा निज घरि वासी ॥१॥
हम सुखु पाइआ तां सभहि सुहेले ॥
गुरि पूरै पिता संगि मेले ॥१॥रहाउ॥
मंदर मेरे सभ ते ऊचे ॥
देस मेरे बेअंत अपूछे ॥
राजु हमारा सद ही निहचलु ॥
मालु हमारा अखूटु अबेचलु ॥२॥ . . .
पिता हमारे प्रगटे माझ ॥
पिता पूत रलि कीनी सांझ ॥
कहु नानक जउ पिता पतीने ॥
पिता पूत एकै रंगि लीने ॥४॥ (पन्ना ११४१)

श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में मनमुख की भर्त्सना है, मनमुख द्वैत-भावना से ग्रसित है। श्री गुरु अरजन देव जी ने निन्दा को आधारभूत अवगुण मानते हुए निंदक की भर्त्सना की है। प्रभु ने स्वयं निन्दक को भुलावे के रास्ते की ओर चला दिया है। यह उसकी नियति है जो किसी भी साधन से मिट नहीं सकती। निन्दक, चोर, पर-स्त्री-गामी और जुआरी से बुरा है। निन्दक ने सिर पर न ढोया जा सकने का भार रखा हुआ है। पारब्रह्म के भक्त निरवैर हैं। जो उनके चरण पूजता है, उसका उद्धार होता है:

पारब्रहम के भगत निरवैर ॥
सो निसतरै जो पूजै पैर ॥
आदि पुरखि निंदकु भोलाइआ ॥
नानक किरतु न जाइ मिटाइआ ॥ (पन्ना ११४५)

शबदों के अंत में प्रार्थना (अरदास) के दो शबद हैं। उनसे पूर्व भी निन्दक की ताड़ना

यमराज की कड़क के साथ की गई है :

निंदकु मुआ निंदक कै नालि ॥
पारब्रहम परमेसरि जन राखे निंदक कै सिरि कड़किओ कालु ॥ (पन्ना ११५१-५२)

मनुष्य के पांच विकारों में हउमै सभी का आधार है। मनमुख और निन्दक हउमै रोग से विशेषत: ग्रस्त होते हैं। श्री गुरु अरजन देव जी ने हउमै रोग का सन्दर्भ मार्मिक रूप से दिया है :

हउमै रोगु मानुख कउ दीना ॥ . . .
नाद रोगि खपि गए कुरंगा ॥१॥
जो जो दीसै सो सो रोगी ॥१॥रहाउ॥
रोग रहित मेरा सतिगुरु जोगी ॥
जिहवा रोगि मीनु ग्रसिआनो ॥
बासन रोगि भवरु बिनसानो ॥ (पन्ना ११४०)

प्रभु ने मनुष्य को हउमै रोग दिया है, हाथी (मैगल-कुंजर) काम के वश में होता है। पतंगा कीट रोशनी पर जल जाता है। हिरन नाद से रीझ कर प्राण खोते हैं। मछली स्वाद के लालच से झीवर की पकड़ में आती है। भ्रमर (भौरा) सुगंध से पुष्प में बंद हो जाता है। एक इन्द्री का दोष प्राणघातक है, फिर जिनमें पांचों दोष हैं उनके कल्याण की क्या आशा है ?

म्रिग मीन भिंग्र पतंग कुचर एक दोख बिनास ॥
पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥
(पन्ना ४८६)

राग भैरउ के अंतिम अरदास के दो शबद सरस और पदलालित्य के अनुपम उदाहरण हैं। प्रथम शबद में प्रभु से कृपा करके अपनाने का अनुरोध है :

करि किरपा लीजै लड़ि लाइ ॥
चरन कमल नानक नित धिआइ ॥ (पन्ना ११५२)

दूसरे शबद में कार्य-सिद्धि का शुक्राना है:

सतिगुर अपुने सुनी अरदासि ॥
कारजु आइआ सगला रासि ॥
मन तन अंतरि प्रभू धिआइआ ॥
गुर पूरे डरु सगल चुकाइआ ॥ (पन्ना ११५२)

अन्य महत्त्वपूर्ण रागों के समान (आसा, गउड़ी आदि) राग भैरउ के शबदों के अन्त में एक पड़ताल पर आधारित शबद है जिसमें पंक्ति के अंदर समान ध्वनि के शब्दों से नाद उत्पन्न करते हैं :

परतिपाल प्रभ क्रिपाल कवन गुन गनी ॥
अनिक रंग बहु तरंग सरब को धनी ॥
(पन्ना ११५३)

शबदों के बाद राग भैरउ में गुरु साहिबान द्वारा रचित छ: असटपदियां हैं। श्री गुरु नानक देव जी की असटपदी में हउमै रोग का वर्णन है। जहां देखें वहीं लोग इसी रोग की वेदना से कष्ट पा रहे हैं। प्रभु इस रोग से छुटकारा अनुभव-सिद्ध आत्म-ज्ञान से कराता है :

नानक हउमै रोग बुरे ॥
जह देखां तह एका बेदन आपे बखसै सबदि धुरे ॥ (पन्ना ११५३)

श्री गुरु अमरदास जी ने गुरु-सेवा, नाम-अमृत-प्राप्ति द्वारा हउमै की तृष्णा दूर होने का वर्णन किया है :

गुर सेवा ते अंम्रित फलु पाइआ हउमै त्रिसन बुझाई ॥ (पन्ना ११५५)

राग भैरउ में श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा रचित असटपदियां हैं, जिनके प्रत्येक पद में चौपाई के चार चरण हैं। तीन चरणों में मूल विषय को दोहराया गया है जो सात पदों में है, अन्त में निष्कर्ष अंकित है। प्रथम असटपदी "जिस के हृदय में हरि नाम हैं" *(जिसु नामु रिदै)* द्वितीय असटपदी में प्रभु के चिन्तन से परे अचिंत की धारणा की व्याख्या है।

राग भैरउ में भक्त-बाणी पर्याप्त विस्तार से है। भक्त कबीर जी के १८ शबद तथा २ असपदियां हैं। भक्त नामदेव जी के ९ शबदों के

क्रम के दो बाणियों में क्रमशः २८ तथा ९ पद हैं, जिन पर प्रथम शीर्षक नहीं है। भक्त रविदास जी का एक शबद है। राग के अंत में भक्त नामदेव जी के शबद को मिला कर भक्त नामदेव जी की बाणी संख्या १२ है।

भक्त-बाणी और गुरबाणी के सम्मिलित प्रसंगों में भक्त प्रहलाद का चरित्र मात्र पांच पदों में श्री गुरु अमरदास जी द्वारा वर्णित है :

मेरी पटीआ लिखहु हरि गोविंद गोपाला ॥
दूजै भाइ फाथे जम जाला ॥ (पन्ना ११३३)

श्री गुरु अमरदास जी ने प्रथम असटपदी में प्रहलाद-चरित्र को किंचित विस्तार से १३ पदों में अंकित किया है :

पिता प्रहलादु पड़ण पठाइआ ॥
लै पाटी पाधे कै आइआ ॥
नाम बिना नह पड़उ अचार ॥
मेरी पटीआ लिखि देहु गोबिंद मुरारि ॥ (पन्ना ११५४)

भक्त प्रहलाद का तृतीय सन्दर्भ भक्त नामदेव जी के शबद क्रमांक ९ में है। भक्त नामदेव जी के शबद में भी पांच पद हैं। भक्त नामदेव जी का काव्य-कौशल भक्त प्रहलाद के चरित्र को विस्तृत फलक प्रदान करने में है। इसमें भक्त प्रहलाद को दी गई यातनाओं का भी उल्लेख है। शबद के अंत में अभय पद देने वाले नरहरि का ध्यान किये जाने का संदेश है :

हरनाखसु जिनि नखह बिदारिओ सुरि नर कीए सनाथा ॥
कहि नामदेउ हम नरहरि धिआवह रामु अभै पद दाता ॥ (पन्ना ११६५)

राग भैरउ में भक्त कबीर जी के शबदों का मुख्य संदेश प्रभु-भक्ति है। राग के आरंभ में वृद्धावस्था से पूर्व प्रभु-नाम में लिव लगाने के श्री गुरु नानक देव जी के तीन शबद हैं। भक्त कबीर जी के शबद क्रमांक ९ में इन शबदों का भाव साम्य मिलता है :

जब लगु जरा रोगु नही आइआ ॥
जब लगु कालि ग्रसी नही काइआ ॥
जब लगु बिकल भई नही बानी ॥
भजि लेहि रे मन सारिगपानी ॥ (पन्ना ११५९)

राग भैरउ में भक्त प्रहलाद के मिथिक प्रसंग के अतिरिक्त भक्त साहिबान और गुरु साहिबान की आत्म-कथा के सन्दर्भ भी हैं। श्री गुरु अरजन देव जी के अग्रज प्रिथीचंद ने बाल (गुरु) हरिगोबिंद जी को मरवाने के कई प्रयास किये, जिसमें एक ब्राह्मण के द्वारा विषयुक्त आहार खिलाने का यत्न था। राग भैरउ के शबद क्रमांक ९ तथा शबद क्रमांक १३ में श्री गुरु अरजन देव जी ने इस घटना का उल्लेख किया है :

लेपु न लागो तिल का मूलि ॥
दुसटु ब्राहमणु मूआ होइ कै सूल ॥ (पन्ना ११३७)
पारब्रहमि अपणा बिरदु प्रगटाइआ ॥
दोखी अपणा कीता पाइआ ॥ (पन्ना ११३८)

भक्त कबीर जी को तत्कालीन कट्टर शासक ने जंजीर से बांध कर गंगा में डुबोने का प्रयास किया। भक्त कबीर जी का मन प्रभु के चरण-कमलों में लीन था। प्रभु ने उनकी रक्षा की :

गंग गुसाइनि गहिर गंभीर ॥
जंजीर बांधि करि खरे कबीर ॥१॥
मनु न डिगै तनु काहे कउ डराइ ॥
चरन कमल चितु रहिओ समाइ ॥रहाउ॥
गंगा की लहरि मेरी टुटी जंजीर ॥
म्रिगछाला पर बैठे कबीर ॥२॥
कहि कंबीर कोऊ संग न साथ ॥
जल थल राखन है रघुनाथ ॥ (पन्ना ११६२)

भक्त नामदेव जी ने अपने जीवन के विविध प्रसंगों को अंकित किया है। शबद क्रमांक ३ में भक्त नामदेव जी के द्वारा सोने की कटोरी में कपिला गाय का अमृतमय दूध प्रभु को

अर्पित करने का वर्णन है। भक्त नामदेव जी की श्रद्धा देख कर प्रभु हंसे। भक्त नामदेव जी का निवास प्रभु के हृदय में था। प्रभु ने भक्त नामदेव जी को दर्शन दिये :

एकु भगतु मेरे हिरदे बसै ॥
नामे देखि नराइनु हसै ॥
दूधु पीआइ भगतु घरि गइआ ॥
नामे हरि का दरसनु भइआ ॥ (पन्ना ११६३-६४)

भक्त नामदेव जी को उनके आराध्य विट्ठल के मंदिर में दर्शन से रोका गया। भक्त नामदेव जी मंदिर के पीछे बैठ कर हरि-सिमरन करने लगे। भक्त जी को दर्शन देने के लिए मंदिर के भवन का दर्शन-द्वार भक्त नामदेव जी की तरफ घूम गया :

जिउ जिउ नामा हरि गुण उचरै ॥
भगत जनां कउ देहुरा फिरै ॥ (पन्ना ११६४)

भक्त नामदेव जी के जीवन की तीन घटनाओं--मेरी गाय को जिंदा करना, हाथी के द्वारा कुचला न जाना तथा हाथ-पांव बांध कर गंगा में फेंके जाने पर न डूबना पर आधारित रचना में २८ पद हैं जो एक ही शबद क्रमांक १० में हैं। वास्तव में भगवान और भक्त अभेद हैं :

नामे नाराइन नाही भेदु ॥ (पन्ना ११६६)

भक्त नामदेव जी के जीवन से सम्बंधित इस लंबे शबद के बाद भक्त नामदेव जी द्वारा रचित गुरु की शरण ग्रहण करने सम्बंधी शबद है, जिसकी शैली भैरउ राग में श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा रचित तीन असटपदियों की शैली के समान है। इस शबद में ९ पद हैं। अत: इसे भी सरलता से असटपदी के वर्ग में रख सकते हैं :

जउ गुरदेउ त मिलै मुरारि ॥
जउ गुरदेउ त उतरै पारि ॥
जउ गुरदेउ त बैकुंठ तरै ॥
जउ गुरदेउ त जीवत मरै ॥१॥ (पन्ना ११६६)

भक्त नामदेव जी के शबदों के क्रम में भक्त रविदास जी का चिन्तन-प्रधान शबद अंकित है। निष्काम योगी नाम-साधना, प्रभु के अक्षरों के जाप से करता है। दृश्यमान जगत नाशवान है और प्रभु की प्रतीति देखे बिना नहीं होती। प्रकृति का अस्तित्व प्रभु के कारण है। जब प्रभु का अनुभव होता है तो प्रकृति का तिरोभाव हो जाता है। विविध अभ्यास श्रवण, मनन आदि प्रभु के ज्ञान अनुभव के लिए हैं। ज्ञान होने पर साधन रूप क्रियाएं नष्ट हो जाती हैं। दही का तत्त्व घी है, घी के लिए दही का मंथन करते हैं। भक्त रविदास जी परम वैराग्य का कथन करते हैं, हे अभागे मनुष्य! हृदय में प्रभु-नाम का अभ्यास कर तथा इसी जीवन में मुक्त होकर परम ध्येय निर्वाण का अनुभव कर:

ग्रित कारन दधि मथै सइआन ॥
जीवत मुकत सदा निरबान ॥
कहि रविदास परम बैराग ॥
रिदै रामु की न जपसि अभाग ॥ (पन्ना ११६७)

राग भैरउ की भावपूर्ण बाणी का चूड़ान्त निदर्शन भक्त नामदेव जी के नादात्मक सौन्दर्य से पूर्ण शबद से होता है जिसमें प्रभु के विराट रूप के दर्शन होते हैं। हे गोपाल! तुम्हारा वेष अद्‌भुत है। तुम्हारे सिर पर आकाश का मुकुट है। सात पाताल तुम्हारे व्यवहार में आने वाले प्याले हैं। तुम्हारी पोशाक असीमित है। तुम्हारा निवास मानव शरीर में है, जिसमें मन पुजारी है, जो सहज ही नमाज का पालन करता है। भक्त-वत्सल प्रभु ने मेरे हाथ से संकल्प-विकल्प के वाद्यों को छीन कर सहज आनंद से सराबोर कर दिया है :

भगति करत मेरे ताल छिनाए किह पहि करउ पुकारा ॥
नामे का सुआमी अंतरजामी फिरे सगल बेदेसवा ॥ (पन्ना ११६७)

गुरबाणी चिंतनधारा-३७

रहरासि साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

रागु गूजरी महला ४ ॥
हरि के जन सतिगुर सतपुरखा बिनउ करउ गुर पासि ॥
हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥१॥

चौथे पातशाह धन्य-धन्य श्री गुरु रामदास जी के मुखारबिंद से राग गूजरी में उच्चारण किया गया यह पावन शबद है। सतिगुरु की महिमा का बखान करते गुरदेव जी का पावन फरमान है कि हे सत्यपुरख गुरदेव! मैं आपके समक्ष यह अरदास विनती करता हूं कि हे गुरदेव! हम अत्यंत सूक्ष्म कीट अर्थात् तुच्छ प्राणी हैं, आपकी शरण आये हैं, कृपा करो, हमारे अंदर ईश्वर नाम रूपी प्रकाश करो, अज्ञानता का अंधेरा मिटा कर ज्ञान का उजाला करो। हे सतिगुरु! मैं नाचीज तुम्हारी शरण में हूं (और शरण आये की तुम हमेशा लाज रखते हो)।

मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥
गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥१॥रहाउ॥

हे मेरे मित्र गुरदेव! मुझे प्रभु का नाम रूपी प्रकाश प्रदान करो। गुरु द्वारा दर्शाये मार्ग पर चल कर प्राप्त हुई बुद्धि द्वारा मिला हुआ प्रभु-नाम मेरे प्राणों का साथी बने अर्थात् प्रभु-नाम मेरा प्राणाधार हो। ईश्वर की स्तुति मेरी ज़िंदगी के सफर के लिए रास पूंजी बनी रहे।

जैसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए राहदारी अर्थात् रास्ते में खर्च के लिए कुछ पैसों की जरूरत होती है वैसे ही इस जीवन रूपी सफर को तय करने हेतु और उस ईश्वर की दरगाह तक पहुंचने हेतु नाम रूप रास-पूंजी की जरूरत होती है। आम लोक-धारणा है कि "सफर दा खर्चा बंन पल्ले, सफर तेरे लई भारी ए। है जाणा विच परदेसां दे, ना ओथे कोई रिश्तेदारी ए। वहां केवल इस जीवन में किया गया नाम-सिमरन तथा परोपकारी जीवन ही तेरा मददगार बनेगा। बाकी सब झूठे धंधे और झूठी रिश्तेदारियां यहीं रह जायेंगी, कोई भी तेरा साथ निभाने वाला सच्चा साथी नहीं है। अत: उस सच्चे प्रभु का नाम-सिमरन कर, यही तेरी असली रास-पूंजी है।

हरि जन के वड भाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥
हरि हरि नामु मिलै त्रिपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥२॥

गुरदेव फरमान करते हैं कि उन हरि के सेवकों के बड़े ऊंचे भाग्य हैं जिनके हृदय में प्रभु के प्रति अपार श्रद्धा है, हरि-नाम की प्यास है और जब उन्हें हरि-नाम की प्राप्ति होती है तो वे माया की ओर से तृप्त हो जाते हैं, साधसंगत में मिल-बैठ कर उनके अंदर भले (श्रेष्ठ) गुण पैदा हो जाते हैं।

भक्त-जनों का भाग्योदय हो जाता है, उनकी तकदीर के सितारे चमक उठते हैं, जब उनके हृदय में ईश्वर के प्रति अगाध श्रद्धा, भक्ति-भावना तथा सत्य-नाम की प्यास प्रबल हो जाती है और यह प्यास केवल ईश्वर-नाम की प्राप्ति से ही शांत होती है।

जिन हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥
जो सतिगुर सरणि संगति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥३॥

जिन्हें परमेश्वर के नाम का स्वाद नहीं आया, जिन भाग्यहीनों को ईश्वर का नाम नहीं मिला, वे तो यमदूतों के वश में पड़े हुए हैं। आत्मिक मौत उनके सिर पर हर पल सवार होती

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)-३०२००४, फोन ०१४१-२६५०३७०*

है, जो गुरु की शरण नहीं आते, जिन्हें सतसंग नसीब नहीं होता। ऐसे लोगों का जीवन धिक्कार योग्य है। सच्चे गुरु की शरण के बिना नाम की दात नहीं मिलती तथा नाम के बिना यमों का डर सताता रहता है। ऐसे जीवों का पिछला जीवन भी धिक्कार योग्य है तथा उनके जीवन के आशय अर्थात् मनुष्य होने पर भी धिक्कार है; फटकार है उनके जीने को!

जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई
तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥
धनु धंनु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ
मिलि जन नानक नामु परगासि ॥४॥

जिन ईश्वर के सेवकों को सतिगुरु की संगत में बैठना नसीब हो गया मानो उनके मस्तक पर दरगाह से ही शुभ लेख लिखा हुआ प्रकट हो गया। श्री गुरु रामदास जी का पावन फरमान है कि सतसंगत में हरि के सेवकों से मिल कर हृदय में नाम का प्रकाश हो उठता है। नाम की ऐसी जगमगाहट, जिसके कारण अज्ञान का समस्त अंधकार विलीन हो जाता है, मानो सर्वत्र ज्ञान का, ईश्वर के प्रेम का उजाला ही उजाला दृष्टिगत होता है।

उपरोक्त पावन शबद में श्री गुरु रामदास जी ने लोक-परलोक में सहायता करने वाले सच्चे हितैषी सतिगुरु से विनम्रता सहित ईश्वर के दर से नाम-सिमरन की अमोलक दात प्राप्त करने का सहज ढंग बताया है और जिन्हें नाम की दात प्राप्त हो जाती है उसका जीवन धन्य हो जाता है, उनका लोक-परलोक संवर जाता है।

राग गूजरी महला ५ ॥

काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥
सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥१॥

राग गूजरी में पंचम पातशाह धन्य-धन्य श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा उच्चारण किये हुए शबद में गुरु पातशाह का पावन फरमान है कि हे मन! रोजी-रोटी (रिजक) के लिए दिन-रात क्यों चिंता करता है? मन को प्रबोधते हुए गुरदेव कलयुगी जीवों को समझा रहे हैं कि जीवों को रिजक पहुंचाने के जिस कार्य में ईश्वर स्वयं लगा हुआ है उसके लिए तुम क्यों व्यर्थ चिंता करते हो? हे मन! तू विचार कर कि जो परमेश्वर चट्टानों एवं पत्थरों में पैदा किए जीव-जंतुओं को जीवन से पहले ही उनके भोजन की व्यवस्था कर देता है अर्थात् उनको जन्म देने से पूर्व उनके रिजक का भरण-पोषण हेतु प्रबंध कर देता है, क्या ईश्वर तुझे नहीं देगा? अर्थात् अवश्य देगा, इसलिए व्यर्थ की चिंता न कर, उस मालिक का चिंतन कर।

मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ ॥
गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥१॥रहाउ॥

हे मेरे प्रभु जी! जो जीव साधसंगत में मिल-बैठते हैं वे व्यर्थ की चिंताओं से मुक्त हो जाते हैं। पूर्ण गुरु की कृपा से मनुष्य को यह आत्मिक अडोलता की उच्चावस्था प्राप्त हो जाती है। मानो लकड़ी की तरह सूखा और कठोर उसका चित्त हरा-भरा हो जाता है। जब गुरु-कृपा से किसी प्राणी को ईश्वर-सिमरन की दात प्राप्त होती है तो कठोरचित्त हृदय भी प्रसन्नचित्त हो, दैवी गुणों से भरपूर होकर सदैव प्रफुल्लित रहता है।

जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ ॥
सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥२॥

गुरदेव का पावन संदेश है कि (झूठे रिश्तों का मान करने वाले प्राणी! असल में तेरा सच्चा साथ निभाने वाला इनमें से कोई भी नहीं है) माता-पिता, सज्जन-मित्र, पुत्र, पत्नी कोई भी किसी का सहारा नहीं हैं। तू व्यर्थ में क्यों किसी से डरता है? पालनहार प्रभु प्रत्येक जीव को रिजक पहुंचा रहा है। प्रत्येक जीव की पालना करने वाला तो एक अकाल पुरख ही है लेकिन मनुष्य भ्रमवश दुनियावी सम्बंधों को अपना आश्रयदाता समझ लेता है।

ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥
तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥३॥ *(पन्ना १०)*

हे मन! विचार करके देख कि कूंज (मादा पक्षी) उड़ कर सैकड़ों कोस की दूरी तय कर अन्य स्थान पर चली जाती है। वह अपने पीछे बच्चों को अकेले छोड़ जाती है। उन्हें कोई खिलाने या चोगा चुगाने वाला नहीं होता। वह कूंज केवल अपने बच्चों का ध्यान मन में धारण करती है और इसी चिंतन (ध्यान) को ईश्वर उसके बच्चों को पालने का साधन बना देता है।

ईश्वरीय प्रबंधकीय सिस्टम के अधीन किस तरह उन बच्चों का पालन-पोषण होता रहता है। गुरबाणी में इस सन्दर्भ में कितने ही पुख्ता प्रमाण हैं, यथा :

रमईआ के गुन चेति परानी ॥
कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥
जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥
गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥
बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥
भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥
बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥
मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥
इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥
बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥ (पन्ना २६६-६७)

वह ईश्वर तो माता के उदर में भी जीव की रक्षा एवं प्रतिपालना करता है।

सभि निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥
जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ॥४॥५॥

हे परम कृपालु प्रभु! संसार के समस्त खजाने, अठारह सिद्धियां मानो तेरी हथेलियों पर रखी हुई हैं। हे दास नानक! ऐसे प्रभु के सदा-सदा कुर्बान जाओ और कहो, हे प्रभु! तेरे गुणों का कोई अंत नहीं पा सकता।

उपरोक्त शबद में गुरु पातशाह ने सत्य पुरुषों की संगत को जीवन में परिवर्तनशील माना है। जैसे सूखे वृक्ष में पानी डालने से वह पुन: हरा-भरा हो जाता है ठीक उसी प्रकार गुरु की रहमतों रूपी वर्षा से कठोरचित्त हृदय भी विनम्र हो जाते हैं। साथ ही गुरदेव ने यह भी स्पष्ट किया है कि उस ईश्वर ने जिस भी जीव को चाहे कहीं भी पैदा किया है, उसके रिजक का प्रबंध एवं पालन-पोषण सदैव स्वयं ईश्वर ने अपने ही ढंग से किया है। पंचम पातशाह द्वारा इस शबद में जीव को समस्त चिंताओं से मुक्त होकर चिन्तन करने की प्रेरणा दी गई है।

रागु आसा महला ४ सो पुरखु
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥
सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥

राग आसा में चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी का उच्चारण किया हुआ शबद 'सो पुरखु' अर्थात् वह परम पिता परमेश्वर जो सबमें व्यापक है।

ੴ अर्थात् एक परमेश्वर, गुर प्रसादि अर्थात् जिसे पूर्ण गुरु की कृपा से जाना या जपा जा सकता है, वह प्रभु समस्त जीवों में व्यापक है, फिर भी वह माया के प्रभाव से परे है। (त्रिगुणी माया उसी परमेश्वर का पसारा है और सारे जगत पर उसका प्रभाव है, केवल वह अकाल पुरख इससे निर्लेप है।) वह प्रभु बेअंत है, अनंत है, सभी जीव उसी की आराधना करते हैं अर्थात् समस्त जीव उसी का सिमरन करते हैं। उस प्रभु को अगम-अपार मानते हुए गुरदेव स्पष्ट करते हैं कि जीव की ज्ञान-इन्द्रियों द्वारा उसे जाना नहीं जा सकता अर्थात् इन्सानी समझ से प्रभु परे है। वस्तुत: अनंत-बेअंत प्रभु का भेद तो नहीं पाया जा सकता लेकिन गुरु-कृपा से उसकी सर्वव्यापकता का बोध सम्भव है।

सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ॥
हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥

हे परमेश्वर! समस्त जीवों को तूने ही पैदा किया है अर्थात् सम्पूर्ण रचना उस अकाल पुरख की है। सभी जीवों को दातें बख्शने वाला भी तू ही है अर्थात् समस्त जीवों का भरण-पोषण तेरे ही द्वारा सम्भव है। गुरदेव फरमान करते हैं, हे संत-

जनो! उस परमेश्वर पिता को हर पल (श्वास-श्वास) याद किया करो। वही परमात्मा सभी दुखों का नाश करने वाला अर्थात् समस्त सुखों का दाता है। गुरबाणी में अन्यत्र भी प्रमाण है कि श्वास-श्वास सिमरन करने से समस्त दुख-दरिद्र एवं चिन्ताओं से जीव मुक्त हो जाता है, यथा पंचम पातशाह की पावन बाणी सुखमनी साहिब की पहली अष्टपदी में संदेश है:

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥
कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥ (पन्ना २६२)

अंतिम अष्टपदी में भी इसी भाव को दृढ़ करवाया गया है, यथा :

सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥
मन अंतर की उतरै चिंद ॥ (पन्ना २९५)

वस्तुतः उस परमेश्वर का नाम सब दुखों का निवारण करने वाला तथा सभी सुखों का प्रदाता है। अतः गुरबाणी श्वास-श्वास सिमरन की प्रेरणा देती है।

हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥१॥

वह परमेश्वर सबमें व्यापक है। इस कारण वह प्रभु कहीं स्वयं मालिक बना हुआ है तो कहीं सेवक। यह जगत-तमाशा उसी बाजीगर का है जिसमें वह कभी मालिक बना बैठा है तो कभी स्वयं सेवक बनकर मालिक की सेवा में हाजिर है। हे नानक! ये जीव बेचारे क्या हैं? अर्थात् इनका तेरे बिना कोई अस्तित्व नहीं है, तेरे बिना इनकी कोई हैसियत नहीं है। वस्तुतः उस ईश्वर की रची रचना एक शतरंज का खेल है और सभी जीव उसके मोहरे हैं। जैसी चाल वह विधाता जिस भी मोहरे को चलाता है वे वैसी ही चाल चलते हैं।

तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥
इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥

हे ईश्वर! तू ही प्रत्येक शरीर में व्यापक है, तू ही सारे जीवों में एक रस समाहित है, सब जीवों में तू ही सर्वत्र रचा-बसा हुआ है। तेरी रचना में कोई दानी है तो कोई भिखारी है, कोई दान कर रहा है तो कोई दान ले रहा है। ये सब तेरे आश्चर्यजनक कौतुक हैं। वस्तुतः तेरे ही हुक्म में कोई दानवीर है तो कोई भिक्षु है।

तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥
तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥

वास्तव में हे प्रभु! तू स्वयं ही दातें बख्शने वाला है और स्वयं ही उन दातों को भोगने वाला है। मैं तेरे बिना किसी और को नहीं जानता। मेरी पहचान तेरे तक ही सीमित है। मुझे तेरे सिवाय कोई दिखाई नहीं देता। हे परम पिता परमेश्वर! तू पारब्रह्म व्यापक चेतना वाला है। इंसानी समझ तुझ तक नहीं पहुंच सकती अर्थात् ससीम बुद्धि द्वारा असीम प्रभु को नहीं जाना जा सकता। तू अनंत-बेअंत मालिक है। मैं तेरे किस-किस गुण की व्याख्या करूं? तू अनंत गुणों का मालिक है। तेरे गुणों का अंत नहीं पाया जा सकता।

जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन कुरबाणा ॥२॥

हे वाहिगुरु! जो व्यक्ति आपको स्मरण करते हैं, तेरी याद दिल में बसा कर रखते हैं, तेरा दास नानक उन पर बलिहार जाता है। वस्तुतः जो इंसान मनसा-वाचा-कर्मणा अर्थात् मन, वचन एवं कर्म से उस प्रभु का सिमरन करते हैं ऐसे जीवों के ऊपर नानक कुर्बान जाते हैं।

हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुखवासी ॥
से मुकतु से मुकतु भए जिन हरि धिआइआ जी तिन तूटी जम की फासी ॥

हे ईश्वर! जो इंसान तेरा सिमरन करते हैं, अपने मन में तेरा ध्यान धरते हैं, वे जीवन में सदैव सुखी रहते हैं। जो इंसान प्रभु का सिमरन करते हैं वे माया के समस्त बंधनों से मुक्त हो जाते हैं, उन्हें कोई भी बंधन बांध कर नहीं रख सकता। दुनियावी बंधन तो क्या वे तो यमदूतों के भय से भी पूर्णतया मुक्त हो जाते हैं, उन्हें

आत्मिक मौत छू भी नहीं सकती।

जिन निरभउ जिन हरि निरभउ धिआइआ जी तिन का भउ सभु गवासी ॥

जिन सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि जी ते हरि हरि रूपि समासी ॥

जिन व्यक्तियों ने भय से रहित उस परमेश्वर का सिमरन किया है, वह प्रभु उन सबको सब तरह के भय से मुक्त कर देता है। जिन हरि के प्यारों ने उस हरि की प्रेम-सहित सेवा-भक्ति की है वे अंत में उसी प्रभु के पावन स्वरूप में विलीन हो गए।

से धंनु से धंनु जिन हरि धिआइआ जी जनु नानकु तिन बलि जासी ॥३॥

वे मनुष्य भाग्यशाली हैं अर्थात् धन्य हैं वे लोग जिन्होंने प्रभु की अराधना की है। प्रभु का सिमरन करने वालों पर दास नानक कुर्बान जाते हैं।

तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बिअंत बेअंता ॥

तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ॥

हे प्रभु! तेरी भक्ति के अनंत भंडार (खजाने) भरे पड़े हैं, उनमें कभी किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं आती। हे प्रभु! अनेकों तथा बेअंत जीव तेरी अनेक ढंगों से, कई विधियों से सिफत-सलाह (उपमा) कर रहे हैं।

तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥

तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिम्रिति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥

हे वाहिगुरु जी! अनेकों जीव तेरी पूजा करते हैं, अनेक जीव तेरी अनेक तरह से तपस्या करते हैं अर्थात् बेअंत जीव कठिन तप साधते हैं और अनेक ढंग से तेरा नाम जपते हैं। हे प्रभु जी! तेरे अनंत जीव (विद्वान) स्मृतियों तथा शास्त्रों का अध्ययन करते हैं। उनके द्वारा बताये गए छह धार्मिक कर्म तथा अन्य कर्म करते हैं।

से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥४॥

गुरु पातशाह का पावन फरमान है कि वही भक्त-जन भले हैं (अच्छे हैं), उन्हीं की भक्ति (समस्त परिश्रम) सफल जानो अर्थात् उन्हीं की भक्ति रूपी मेहनत सफल है जो ईश्वर के दर पर प्रवान हैं।

तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥

तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥

हे अकाल पुरख! तू ही सारे संसार की रचना का मूल कारण है। तू सर्वव्यापी है, तेरी लीला अपरंपार है अर्थात् तेरी लीला का कोई अंत नहीं पा सकता। तू इस जगत-रचना से पहले भी व्यापक था। तेरी समर्थता का कोई अंदाजा भी नहीं लगा सकता। तू अपार शक्तियों का मालिक है। तेरे बराबर का और कोई भी नहीं हो सकता।

प्रत्येक युग में एक तू ही विद्यमान है। तू सम्पूर्ण शक्तियों वाला है। तू सदैव कायम (अटल) हस्ती है। तू ही सबका रचयिता है, सृजनहार तथा पालनहार है।

तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई ॥

तुधु आपे स्रिसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥

हे परमेश्वर! दुनिया में वही कुछ होता है जो प्रभु को अच्छा लगता है और जो कुछ तू करता है हे प्रभु! वही कुछ होता है, क्योंकि तेरे सिवाय कोई भी कुछ भी करने की सामर्थ्य वाला नहीं है। हे प्रभु! तूने ही सारी सृष्टि पैदा की है, तू स्वयं ही सारी रचना (सृजना) करने वाला है। सबकी रचना करके पुन: उसे नाश करने वाला भी तू आप ही है।

जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥५॥

दास नानक उस परमेश्वर का गुणगान करते हैं जो अन्तरयामी है, सबके दिलों की जानने वाला है।



गुरु-गाथा : १५

देखि पराईआं चंगीआं . . .

*-डॉ अमृत कौर**

एक बार सिक्खों और मुगलों में हुई झड़प के दौरान सिक्खों द्वारा मुगलों को दी गई मात में मुगल हाकिम की बेगम की पालकी मुगल छोड़कर भाग गए। सिक्खों ने उस नारी को गुरु-दरबार में पेश करने की सोची।

उन्होंने पालकी को गुरु जी के दरबार में पेश किया। प्रथम प्रश्न जो गुरु जी ने पूछा वह था, "पालकी में जो स्त्री बैठी है उसे किसी ने सताया तो नहीं?" सिक्खों का उत्तर था, "हमने पालकी का परदा उठा कर भी देखने का प्रयास नहीं किया। हमें तो यह भी ज्ञात नहीं कि इसमें किस आयु की स्त्री बैठी है, बस, इतना ज्ञात था कि इस पालकी में स्त्री बैठी है और उसे किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचानी।"

गुरु जी ने सेवादारनियों को बुलाया और कहा कि "इस स्त्री की सेवा-सम्मान में कोई कमी न रखी जाए, इसकी भूख-प्यास तृप्त करने का ध्यान रखा जाए। इसके घर का पता-ठिकाना पूछा जाए ताकि इसे बाइज्जत, सुरक्षित इसके घर पहुंचाया जा सके।" उसका पता-ठिकाना मालूम होने पर सिक्ख सैनिकों का एक दस्ता उसे सुरक्षित घर पहुंचा आया। सिक्खों ने मन में उत्पन्न मनोभाव को गुरु जी के समक्ष रखते हुए प्रश्न किया, "महाराज, मुसलमान तो हिन्दू स्त्रियों को लूट कर ले जाते हैं, माले-गनीमत समझ कर उनका उपभोग करते हैं, उनको बंदी बना कर उन पर अत्याचार करते हैं, पर आप ने ऐसा क्यों किया?"

गुरु जी ने उत्तर दिया, "हमारे धर्म में पराई स्त्री का दर्जा मां-बहन के समान होता है। हमारे यहां स्त्री का सम्मान किया जाता है।"

देखि पराईआं चंगीआं मावां भैणां धीआं जाणै।
(वार भाई गुरदास जी, २९:११)

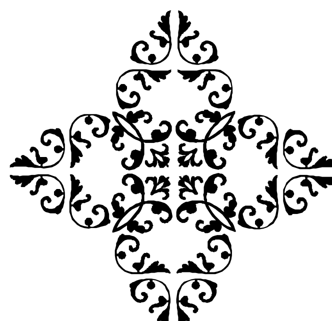
"जब तक तुम इस आदेश का पालन नहीं करोगे सच्चे सिक्ख कहलाने के अधिकारी नहीं होगे।"

निज नारी के साथ नेह तुम नित्ति बढैयहु ॥
पर नारी की सेज भूल सुपने हूं न जैयहु ॥ . . .
पर नारी के भजे चंद्र कालंक लगाए ॥
(दसम ग्रंथ)

"पर-नारी का उपभोग तो कलंक के समान है। संयमित जीवन बल और शक्तिवर्धक है। पर-नारी-गमन तो मनुष्य को बलहीन एवं शक्तिहीन बनाता है। पर-नारी-गमन सांप के डंक के समान है और त्यागनीय है।"

जैसा संगु बिसीअर सिउ है रे तैसो ही इहु पर ग्रिहु ॥ *(पन्ना ४०३)*





**१५४, ट्रिब्यून कालोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०३*

दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-२६

शहीद कवि सुक्खा सिंह

*-डॉ. राजेंद्र सिंह 'साहिल'**

जिस प्रकार साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंह जी स्वयं महान योद्धा भी थे और उच्च कोटि के विद्वान एवं कवि भी, उसी प्रकार दशमेश पिता के दरबार में कुछ तेग चलाने वाले वीर थे तो कुछ लेखनी के धनी विद्वान् लिखारी थे। यही नहीं गुरु जी के कुछ ऐसे महान सिक्ख भी थे जो एक ओर तो उच्च श्रेणी के बहादुर योद्धा थे और दूसरी ओर श्रेष्ठ विद्वान, साहित्यकार थे। ऐसे बहादुर विद्वानों में एक नाम कवि सुक्खा सिंह का है। कवि सुक्खा सिंह ऐसे कुछ विद्वान योद्धाओं में से हैं जिन्होंने मैदान-ए-जंग में जूझते हुए शहादत प्राप्त की।

दशमेश पिता के दरबारी कवियों में सुक्खू, सुखीआ या सुक्खा सिंह तीन नाम मिलते हैं। वास्तव में ये तीनों नाम एक ही सिक्ख भाई सुक्खा सिंह के ही हैं।

कवि सुक्खा सिंह का संबंध गुरु-घर के एक बड़े ही प्रेमी और आत्म-बलिदानी परिवार से था। इस परिवार के पूर्वज भाई बल्लू छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के एक बहादुर जरनैल थे जिन्होंने गुरु साहिब के नेतृत्व में प्रत्येक जंग में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था। भाई बल्लू कवि सुक्खा सिंह के दादा माईदास के पिता थे। माईदास के छोटे पुत्र राय सिंह कवि सुक्खा सिंह के पिता थे।

बंद-बंद कटा कर शहीद होने वाले भाई मनी सिंह जी और नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी के साथ दिल्ली में उबलती देग में शहादत देने वाले भाई दिआला जी कवि सुक्खा सिंह के ताया थे। भंगाणी के युद्ध में मस्त हाथी को नागणी बरछे से धराशायी करने वाले भाई बचित्तर सिंह कवि सुक्खा सिंह के चचेरे भाई थे।

इस महान बलिदानी परिवार ने गुरमति की राह में अनेक शहादतें दी हैं। ऐसे परिवार के सदस्य होकर कवि सुक्खा सिंह शहीदी देने में कैसे पीछे रहते?

कवि सुक्खा सिंह चार भाई थे--भाई बाघ सिंह, भाई सुक्खा सिंह, भाई शीतल सिंह और भाई महां सिंह। ये चारों भाई अच्छे पढ़े-लिखे और विद्वान थे। दशमेश पिता ने इन सबको लिखने-पढ़ने का ही कार्य सौंपा हुआ था। इनमें से भाई सुक्खा सिंह उच्च कोटि के कवि भी थे।

कवि सुक्खा सिंह ने निश्चित रूप से श्रेष्ठ काव्य की रचना की होगी। दुर्भाग्य से आज इनकी कोई भी रचना उपलब्ध नहीं है। सन् १७०४ ई में दशमेश पिता के अनंदपुर साहिब से चले जाने के पश्चात वहां जो तबाही हुई थी, संभवत: उसमें कवि सुक्खा सिंह का सारा काव्य नष्ट हो गया होगा।

इन भाइयों की शहादतें भी सिक्ख इतिहास में सुनहरे अक्षरों में दर्ज हैं। कवि सुक्खा सिंह के छोटे भाई शीतल सिंह और भाई महां सिंह खिदराणे की ढाब (मुक्तसर) के युद्ध में शहीद हुए। इनके पिता भाई राय सिंह भी यहीं शहीद हुए। इस प्रकार इन तीनों पिता-पुत्रों की गिनती पवित्र 'चालीस मुक्तों' में होती है। कवि सुक्खा सिंह ने भी इसी बलिदान-परम्परा में नाम लिखाया। सन् १७०० ई में लोहगढ़ (अनंदपुर साहिब) के युद्ध में बहादुरी से युद्ध करते हुए कवि सुक्खा सिंह शहीद हुए। 

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना)-१४११०१*


आपका पत्र मिला

सिक्ख और हिंदू का भेद पहली बार समझ पाया हूं

पत्रिका का जुलाई २००९ अंक 'राष्ट्रीय पुस्तकालय' में देखा, आम धार्मिक पत्रिका से बहुत कुछ इसमें अलग लगा। संपादकीय के साथ प्रो. सुरिंदर कौर का शोधपरक लेख *'सिंह' नहीं 'सिंघ'* लिखो, बेहद उत्तम और जातीय गौरव एवं अपनी स्मिता के प्रति निष्ठापरक लगा। इसके बहाने सिक्ख और हिन्दू का भेद मैं पहली बार समझ पाया हूं। अपनी विशिष्टता के प्रति कौम को सचेत रहना ही चाहिए। यद्यपि मैं कोई बहुत धार्मिक व्यक्ति नहीं हूं, एक उदारवादी खुले मन का लेखक हूं। अंतिम पृष्ठ (शीर्षक पृष्ठ) पर तत्कालिक मुगल सरकार द्वारा गुरसिक्खों पर किये अत्याचार को देख कर रौंगटे खड़े हो गये। . . .

-डॉ. सेराज खान बातिश
३-बी, बंगाली शाह वारसीलेन
खिदिरपुर, कोलकाता-७०००२३

ज्ञानवर्धक पत्रिका

'गुरमति ज्ञान' वास्तव में ही ज्ञानवर्धक सामग्री से सुसज्जित पत्रिका है जिसे पढ़ने से आत्मतृप्ति का बोध होता है। "कर्म ही आराधना है।" आप इसी प्रकार निष्काम सेवा करते रहिए, निस्संदेह गुरु-कृपा होती रहेगी।

-नविता शर्मा
२६, गुरजेपाल नगर, जालंधर शहर।

त्व प्रसादि सवैये पा: १०

'गुरमति ज्ञान' को पढ़कर मुझे एक शीतलता मिलती है। गुरबाणी सम्बंधी जानकारी, अर्थ पढ़कर मन खुश हो जाता है। "त्व प्रसादि सवैये पातशाही १०" डॉ. मनजीत कौर द्वारा लिखी व्याख्या बड़ी ही अच्छी है और संभालने वाली है। 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका इसी तरह लोगों को गुरबाणी के बारे में जानकारी देती रहे और 'गुरमति ज्ञान' की टीम चढ़दी कला में रहे, यह मेरी शुभकामना है।

-अवतार सिंघ
सस्ता वस्त्र भंडार, नाका-रामनगर रोड
फैजाबाद (यू. पी.)

बहुत अच्छी जानकारी

अगस्त २००९ का अंक काफी पसंद आया। विशेषकर स. सुरजीत सिंघ द्वारा लिखित "मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान" में बहुत अच्छी जानकारी उपलब्ध हुई। आप इसी तरह पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, असम और भारत में सब प्रांतों के गुरुद्वारों के बारे में जानकारी दें। असम में एक गुरुद्वारा है "धुबड़ी साहिब", इसके बारे में कोई जानकारी हो तो प्रकाशित करें।

-सुरिंदर सिंघ
२३/१२, कलन्दर चौक, पानीपत।

यदि ये गुरु-जन न होते तो हमारा धर्म नहीं बचता!

पत्रिका 'गुरमति ज्ञान' हमारे यहां हर माह नियमित रूप से पहुंच जाती है। इस पत्रिका की लिखावट सुंदर, सुस्पष्ट तथा भाव चेतनापूर्ण एवं शिक्षाप्रद हैं। आपने सिक्खी प्रचार हेतु जो प्रयत्न किया है वह सराहनीय है। आपने अभूतपूर्व कार्य कर मात्र एक सौ रुपये में आजीवन सदस्य बनाकर मुझे कृत्य-कृत्य कर दिया, जिसके लिए मैं आपका आभारी हूं। पत्रिका में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की महिमा, श्री गुरु नानक देव जी महाराज से लेकर दसवें गुरु महाराज श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी का प्रचार और वीर योद्धाओं की धर्म हेतु शहीदी-गाथा तथा तुर्कों द्वारा किए गये अत्याचारों की

कहानी, सभी बातें स्पष्ट रूप में मिलती हैं। यदि ये गुरु साहिबान न होते तो हमारा धर्म नहीं बचता! आदरणीय गुरु साहिबान प्रभु-नाम जपवाया तथा सभी नर-नारी को रूद्र एवं चंडी का रूप देकर अछूत एवं शूद्र जाति को गले लगाकर पंगत-प्रथा प्रदान एक 'सिंघ-खालसा' रूप दिया। त्याग, तपस्या, बलिदान, परहित-कार्य, नारी का सम्मान, सभी धर्मों का आदर, माता-पिता एवं गुरु की सेवा, संत-सेवा तथा धर्म हेतु प्राण-त्याग आदि बातें आपने बताईं। गुरु साहिबान ने राष्ट्र, समाज की उचित रूप से रक्षा का केवल उपदेश ही नहीं दिया बल्कि कर्त्तव्यनिष्ठ होकर प्रमाण स्थापित किया। यह ज्ञान 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका द्वारा हमें मिलता है।

मैं स्वयं आदरणीय गुरु-जनों का आदर, अभिवादन करता रहा हूं। मानीय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तो हमारे परम पूज्य हैं। चूंकि हमारे पूर्वजों ने भी देश एवं धर्म की लड़ाई में भाग लिया था, इसलिए से देश एवं धर्म हेतु जो भी त्यागी एवं बलिदानी हुए हैं हम उनको सत्-सत् नमस्कार करते हैं।

ऐसी मान्यता है कि श्री गुरु नानक देव जी ने जब पूरे भारत का भ्रमण किया था तो बक्सर आये थे तथा आदरणीय श्री गुरु तेग बहादर जी एवं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी बक्सर की पवित्र धरती को अपनी चरण-धूलि से पवित्र किया था।

-महेश्वर ओझा महेश

साकेत भवन, सिविल लाईन, बक्सर (बिहार)।

सिक्ख भाईचारा मजबूत करने हेतु कुछ सुझाव

मैं स्वतंत्रपाल सिंघ सारे सिक्ख भाइयों से निवेदन करता हूं कि हमारे कुछ सिक्ख भाई आज गलत राह पर जा रहे हैं। हम सब मिलकर कोशिश करें अपने सिक्ख भाइयों को सिक्खी मार्ग पर लाने का। भारत के कोने-कोने में सिक्ख भाई रहते हैं। कुछ सिक्ख लड़के पढ़-लिखकर बेरोजगार घूम रहे हैं, कुछ सिक्ख गलत व्यवहार में जा रहे हैं। आज कुछ सिक्ख लोग पान-मासाला, शराब खाते-पीते हैं तथा केश कटवा रहे हैं। भारत में २० प्रतिशत सिक्ख लोग गलत व्यवहार में हैं। बहुत-से सिक्ख गरीब हैं। भारत के अंदर जितने भी गुरुद्वारे हैं सभी गुरुद्वारों में सिक्खों के विकास, इलाज, रोजगार के लिए पैसा एक समिति के पास हो, जो जरूरतमंदों को सहायता दे! भारत के अंदर समस्त खालसा परिवार अपने घर से मात्र १० रुपये की सहायता समिति को दें। उस पैसे से एक फैक्टरी खोली जाए। हज़ारों सिक्ख लड़के, लड़कियां फैक्टरी में काम पा सकते हैं। जमा कोश से गरीब सिक्खों का इलाज मुफ्त हो, उनकी बेटियों की शादी हो, धर्म में पैसा लगे, सिक्खों के विकास-कार्य में पैसा लगे!

-स्वतंत्रपाल सिंघ

बाजार सुमेरगंज, राम सनेही घाट,

जिला बाराबंकी (यू. पी.)-२२५४०९

लेखक साहिबान बधाई और धन्यवाद के पात्र हैं

'गुरमति ज्ञान' का अगस्त ०९ का अंक मिला, आभार। अंक पढ़कर प्रसन्नता हुई। डॉ. जगजीत कौर एवं डॉ. दीनानाथ शरण के लेख श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना और श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बाणीकार पढ़कर ज्ञानार्जन हुआ। इसी तरह मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिब लेख पढ़कर अच्छा लगा। सभी लेखक साहिबान बधाई और धन्यवाद के पात्र हैं।

-माता प्रसाद शुक्ल,

शिन्दे की छावनी, लश्कर, ग्वालियर।





शिरोमणि गु: प्र: कमेटी द्वारा नए स्कालरों के लिए 'लेक्चर-लड़ी' आरंभ

चंडीगढ़ : २२ अगस्त। सिक्खी के प्रचार तथा प्रसार कार्यों के साथ-साथ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की ओर से सिक्ख इतिहास से सम्बंधित ग्रंथों के संपादन के कार्य के लिए प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. किरपाल सिंघ की अगुआई में कलगीधर निवास, चंडीगढ़ में "सिक्ख स्रोत ऐतिहासिक ग्रंथ संपादना प्रोजेक्ट" अपना कार्य बाखूबी निभा रहा है। इस प्रोजेक्ट द्वारा अनुसंधान कार्यों के साथ-साथ नए खोजकारों को इस क्षेत्र के विख्यात विद्वानों के साथ विचारों की सांझ तथा आधुनिक युग की खोज-विधियों के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए आरंभ की गई 'लेक्चर-लड़ी' विद्वानों, खोजकारों एवं इतिहास के पाठकों के लिए बहुत फायदेवंद साबित होगी। 'लेक्चर-लड़ी' की आरंभता के समय विद्वानों एवं श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष शिरोमणि गु: प्र: कमेटी ने कहा कि शिरोमणि कमेटी द्वारा इस कार्य को और भी उत्साहित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वरिष्ठ विद्वानों के अनुभव से परिचित होना और उनके साथ विचारों की सांझ करना भी पुस्तकीय ज्ञान की भांति लाभदायक है। प्रथम 'लेक्चर-लड़ी' के मुख्य वक्ता प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. जे. एस. (गरेवाल) ने 'इतिहास तथा इतिहासकारी' विषय पर प्रकाश डालते हुए ऐतिहासिक खोज के बारे में अलग-अलग खोज-विधियों तथा अन्तर्दृष्टियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वर्तमान इतिहास को जानने के लिए प्राचीन इतिहास की जानकारी होना भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि श्रद्धा एवं विश्वास के संकल्प को इतिहास से अलग नहीं किया जा सकता और इतिहास समूह लोगों का होता है। इस अवसर पर प्रोजेक्ट प्रभारी डॉ. किरपाल सिंघ ने विद्वानों तथा समूह श्रोताओं का स्वागत करते हुए प्रोजेक्ट द्वारा प्रकाशित हो चुकी 'गुरु नानक प्रकाश' तथा 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' अथवा 'सूरज प्रकाश' की पोथियों के बारे में जानकारी दी। इस प्रोजेक्ट में डॉ. किरपाल सिंघ के नेतृत्व में रीसर्च स्कालर--प्रो. चमकौर सिंघ, स. सुखमिंदर सिंघ, बीबी बलजीत कौर तथा बीबी हरजीत कौर कार्य कर रहे हैं। धर्म प्रचार कमेटी के अपर सचिव स. हरजीत सिंघ ने 'लेक्चर-लड़ी' कार्यक्रम में आए विद्वानों एवं समूह श्रोताओं का धन्यवाद किया।

अमेरिका में रंग लाया सिक्खों का संघर्ष

वाशिंगटन : २ सितंबर। अमेरिका में अपनी आस्था और धर्म के लिए सिक्खों का संघर्ष अब रंग लाने लगा है। कैलिफोर्निया राज्य की विधान सभा में सिक्खों से संबंधित एक महत्वपूर्ण विधेयक सर्वसम्मति से पारित किया गया। इसमें सिक्खों और उनकी कृपाण के धार्मिक महत्व के बारे में कानून-प्रवर्तन एजेंसियों के कर्मियों को प्रशिक्षण देने का प्रावधान है।

'एबी-५०४' नाम का यह विधेयक अब कैलिफोर्निया के गवर्नर आर्नोल्ड श्वार्जेनेगर के पास जाएगा। उनके दस्तखत के साथ ही यह कानून का रूप धारण कर लेगा।

विधेयक को विधान सभा में पेश करने वाले विधान सभा सदस्य वारेन फुरुटानी ने

कहा कि यह महत्वपूर्ण विधेयक है जो जन-सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा करने की राज्य की जिम्मेदारी भी तय करता है। उन्होंने कहा कि कृपाण रखने पर सिक्खों को गिरफ्तारी का डर नहीं होना चाहिए जो उनके धार्मिक विश्वास का अभिन्न हिस्सा है। विधेयक में कृपाण को तलवार से मिलते-जुलते ब्लेड के रूप में परिभाषित किया गया है जिसे लेकर चलना सिक्ख धर्म में बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। इसमें कहा गया है कि पुलिस और शेरिफ विभाग इस तरह के प्रशिक्षण की जरूरत की बात कर रहे थे। यह विधेयक ऐसे मामलों में राज्य में प्रक्रिया के मानक तय करेगा। प्रशिक्षण में अधिकारियों को सिखाया जाएगा कि कृपाण लेकर चलने वाले व्यक्ति की पहचान कैसे की जाए और उनसे किस तरह पेश आया जाए। सिक्खों के अधिकारों के लिए आवाज उठाने वाले संगठन 'सिक्ख कोलिशन' ने विधेयक पारित किए जाने की प्रशंसा की है और इसे ऐतिहासिक अवसर करार दिया है। संगठन ने एक बयान में कहा कि इसे कानून बनना चाहिए। अमेरिका में कृपाण से संबंधित यह पहला विशिष्ट कानून होगा। पुलिस कई बार कृपाण लेकर चलने वालों को गलती से यह सोचकर गिरफ्तार कर लेती है कि उन्होंने हथियार छिपाने संबंधी कानून का उल्लंघन किया है। अमेरिका के अन्य राज्यों के मुकाबले कैलिफोर्निया में सबसे अधिक सिक्ख रहते हैं। (अमर उजाला)

कैलिफोर्निया में कृपाण धारण किए जाने को कानूनी मान्यता दिए जाने का जत्थेदार अवतार सिंघ द्वारा स्वागत

अमृतसर : ३ सितंबर। जत्थेदार अवतार सिंघ ने अमेरिका के राज्य कैलिफोर्निया की विधान सभा द्वारा सिक्खों के धार्मिक चिन्ह कृपाण को धारण करने या साथ लेकर चलने को कानूनी मान्यता दिए जाने वाला बिल पास किए जाने की जोरदार प्रशंसा करते हुए इसे सिक्ख जगत के लिए सम्मानयोग्य प्राप्ति कहा है। उन्होंने कहा कि अमेरिका की विभिन्न जत्थेबंदियों द्वारा आरंभ किए गए संघर्ष के फलस्वरूप कैलिफोर्निया राज्य द्वारा सिक्खों द्वारा कृपाण पहनने सम्बंधी बिल पास करके सिक्खों की धार्मिक भावनाओं का सम्मान किया है।

राजासांसी हवाई अड्डे से श्री हरिमंदर साहिब तक मुफ्त बस सेवा शुरू

अमृतसर : १८ अगस्त। शिरोमणि गु: प्र: कमेटी द्वारा श्री हरिमंदर साहिब के दर्शनों के लिए हवाई यात्रा द्वारा आने वाली देश-विदेश की संगत के लिए राजासांसी हवाई अड्डे (अमृतसर) से श्री हरिमंदर साहिब तक आने-जाने के लिए एक वातानुकूलित मुफ्त बस सेवा आरंभ की गई है। जत्थेदार अवतार सिंघ ने बस सेवा शुरू करते हुए कहा कि इससे हवाई यात्रा द्वारा आने-जाने वाले श्रद्धालुओं को बड़ी आसानी हो जाएगी। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं को हर आवश्यक सुविधा प्रदान करना शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की नैतिक जिम्मेवारी है। 

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया। संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-१०-२००९